बुन्देली भाषा कृत

बुन्देला सपूत हरदौल

(महाकाव्य)

श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'





बुन्देल[illegible]ाकृत

बुन्देला सपूत हरदौल

(महाकाव्य)



रचनाकार

श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'

प्रकाशन तत्वावधान
बुन्देली साहित्य एवं संस्कृति सेवा संस्थान
उरई (जालौन) उ.प्र. – 285001

पुस्तक	**बुन्देला सपूत हरदौल** (बुन्देली भाषाकृत) **महाकाव्य**
रचयिता	श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'
रचना पूर्ण	अगस्त, सन् 2013 ई. (रक्षाबन्धन, सं0 2070 वि.)
संस्करण एवं प्रकाशन	प्रथमवार, 2014 ई. प्रतियाँ – 500
सर्वाधिकार	रचनाकाराधीन
प्रकाशन तत्वावधान	बुन्देली साहित्य एवं संस्कृति सेवा संस्थान, 5, प्राध्यापक निवास, राठ रोड, उरई (जालौन) उ.प्र.
प्राप्ति स्थान एवं सम्पर्क	श्रीवास्तव निलय, चुरखी रोड (सरकारी ट्यूब वैल के पीछे गली) बघौरा, उरई, जिला–जालौन (उ.प्र.) – 285001 मोबाइंल : 7408439308
आवरण सज्जा व मुद्रक	नाइस ग्राफिक्स, उरई
मूल्य	₹ 280

BUNDELA SAPOOT HARDAUL

(BUNDELI BHASHA : MAHAKAVYA)

BY

SHYAM BAHADUR SHRIVASTAVA

समर्पण

हमारे महान देश भारतवर्ष के दैदीप्यमान भविष्य किशोर–किशोरियों, युवक–युवतियों एवं जन सामान्य (स्त्री–पुरुषों) के फौलादी सुदृढ़ हाथों में अनन्य सार्थक एवं सकारात्मक अपेक्षाएँ मन में लिए आत्मीय प्रेम और आदर के साथ समर्पित।

श्रावण शुक्ल, 15 (बुधवार)
(रक्षाबन्धन), संवत 2070 वि.
दिनाँक 21 अगस्त, 2013 ई.
[हरदौल देव की जन्मतिथि
श्रावण शुक्ला पूनौ (रक्षाबंधन)]

श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'

बुन्देली भाषाकृत :

बुन्देला सपूत हरदौल (महाकाव्य)

बिबरणी : काए के बाद का

सरल क्रमांक	संक्षिप्त बिबरन	पन्ना क्रमांक
1	2	3
1.	बुन्देली भाषाकृत महाकाव्य : बुन्देला सपूत हरदौल : एक दृष्टि में – युगकवि डॉ. रामस्वरूप खरे	viii
2.	स्वकथन सह आभार ज्ञापन : श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम' (रचनाकार)	ix
3.	ज्ञातव्य ऐतिहासिक तथ्य : रचनाकार	xii
4.	मंगलाचरन : माँ सरस्वती, आव–आव जू गनेस	1
5.	सर्ग और उनका संक्षिप्त विवरण : (हर सर्ग के आदि व अन्त में दोहा, शेष में छन्द रचनाएँ)	
5.1	सर्ग : एक – नमन बुन्देली–बुन्देला–बुन्देलखण्ड सतगुरु, माता–पिता, इष्ट देव, मातृभूमि को नमन करते हुए बुन्देली भाषा, बुन्देला और बुन्देलखण्ड को नमन, हरदौल चरित लेखन का संकेत सभी देवों से सफलता की कामना, इस प्रबन्ध काव्य लेखन के स्थान का विवरण, सभी का जयघोष	3
5.2	सर्ग : दो : ओरछा दरस और हरदौल ओरछा का प्राकृतिक सौन्दर्य वर्णन, ओरछा राजधानी (राज्य) की स्थापना, हरदौल का जन्म, जन्मोत्सव पर बधाई (हरदौल की जन्मकुन्डली, साभार प्राप्त)	9
5.3	सर्ग : तीन : ओरछा में रामराजा पधारे हरदौल के बब्बा साहब महाराजा मधुकर शाह की पत्नी द्वारा अबध से बाल रूप राम को साक्षात अपनी गोद में ओरछा लाकर स्थापित करना	17
5.4	सर्ग : चार : निरभीक कुँअर हरदौल दस वर्ष के बालक हरदौल द्वारा भयंकर शेर के समीप आकर उसको निडर रहकर थपथपाना, पिता के पूछने पर उनें मनोवैज्ञानिक तथ्य बताते हुए समझाना	26

1	2	3
5.5	सर्ग : पाँच : साउन तीज पै झूला ओरछा में सावन तीज महोत्सव पर मेला का वर्णन, हरदौल के विवाह का वर्णन, सावन में बहन–बेटियों का महत्व, उत्सव के विशेष खेलों जैसे पत्थर नाल उठाना, तीर से लौंग काटना, अन्त में फूलबाग में राजमहिषियों का झूला झूलना, हरदौल का भाभी चम्पावती के मुकाबले में झूला का खेल आदि, जगमन खँगार आदि में हरदौल की प्रतिमा के कारण ईर्ष्या व द्वेष पैदा होना	32
5.6	सर्ग : छै : तरवारवाज हरदौल फारस देश का तलबारवाजी में विशेष पारंगत मेंहदी हुसैन से तलवारबाजी के माध्यम से जगमन व उनके साथियों द्वारा हरदौल को जान से मरवा देने का षड़यन्त्र एवं प्रयास, अन्त में उससे विजयी रहने पर हुसैन द्वारा हरदौल पर प्राणघातक हमला	44
5.7	सर्ग : सात : भइया हरदौल ओरछा के एक सौनी की बिटिया की जेबरात आदि देकर गौंने की विदा वहुत आदर सम्मान से करना, रोती बिलखती बिटिया का गुप्त संकट दूर करना, तथा घोषणा करना कि ओरछा की हर बिटिया की बिदा उनके यहाँ से अवश्य होगी, उनका तभी से वह 'भइया हरदौल' कहलाना आदि	59
5.8	सर्ग : आठ : ओरछा में दंगल हरदौल द्वारा दंगल का ओरछा में आयोजन, अनेक प्रदेशों के पहलवालों की भागीदारी व्यवस्था एवं ओरछा का दृश्य वर्णन, भारी भरकम एवं लँगोट घुमाने वाले मल्ल से ओरछा का 15 वर्षीय मल्ल का जीतना और 'बुन्देलखण्ड शार्दूल' की उपाधि प्राप्त करना, बाला और बेला का प्रेम– प्रसंग	68
5.9	सर्ग : नौ : धरती के देव हरदौल देव बाला और बेला के प्रेम वार्तालाप के बीच, राजवैद्य की कोठी से उनके बेटे की साँप के काटने से मृत्यु पर हा–हाकार, साँप के काटने पर मरे पुत्र को हरदौल द्वारा जीवनदान, हरदौल की जै – जैकार, धरती के देवता घोषित	80
5.10	सर्ग : दस : क्रान्तिकारी बीर स्वतंत्रता सेनानी बुन्देला सपूत हरदौल हिन्दू धर्म बिरोधी एवं धर्म ग्रंथों को फाड़ गालियाँ बक रहे दो मुगल सेनानायकों को 16 वर्ष की उम्र में अकेले ही मार गिराना, हरदौल द्वारा श्रेष्ठ सेना का गठन, जहाँगीर द्वारा ''बीर बुन्देला'' पद से बिभूषित किया जाना, नृप जहाँगीर को उनके सेनापति द्वारा बन्दी बनाये जाने पर शरण में आई नूरजहाँ के साथ जाकर भारी सेना पर 18–19 वर्ष की आयु में चढ़ाई कर विजय प्राप्त कर जहाँगीर को कैद से छुड़ाना, शाहजहाँ द्वारा किये गये आक्रमणों में सदा विजय प्राप्त करना	88

1	2	3
5.11	सर्ग : ग्यारा : जुझारसिंह की ओरछा बापसी शाहजहाँ के शासनकाल में आगरा से उसकी अनुमति बिना रातों रात आगरा से ओरछा चोरों की भाँति भाग कर आ जाना	101
5.12	सर्ग : बारा : महारानी के चरित पै आसंका जगमन द्वारा दी गई सेविका (कुटनी) के माध्यम से महारानी चम्पावती के प्रति हरदौल के साथ दुष्चरित्रता (अनैतिक संबध) का बीज बोया जाना, जुझार सिंह के मन में रानी के प्रति शंका पैदा होना	108
5.13	सर्ग : तेरा : ओरछेस सम्मान सभा आगरा छोड़कर आने पर महाराज का सार्वजनिक सम्मान आयोजन, जुझार सिंह द्वारा प्रजा को उद्बोधन एवं निराश प्रजा को हरदौल का उत्साह पूर्ण सम्बोधन	116
5.14	सर्ग : चउदा : सड़यंत्र रहस्स सम्मान सभा समापन बाद हरदौल का घर पहुँचना, पत्नी हिमांचल कुँवरि द्वारा चम्पा भाभी के साथ हरदौल के दुष्चरित्र के लांछन की बात बताना, कौन–कौन षड़यंत्री हैं के रहस्य को उद्घाटिक करना/बताना	124
5.15	सर्ग : पन्द्रा : नारी सत्व रक्छा शाहजहाँ के मुख्य जाजूस हिदायत खाँ का ओरछा पहुँचना, कूटनीति और आपस में फूट डालकर ओरछा से जुड़े योद्धाओं या प्रमुख वीरों को यत्र–तत्र भिजवा देना, फूलबाग का सौन्दर्य और व्यवस्था वर्णन, हिदायत खाँ के बेटे महमूद को हरदौल की हत्या संबंधी पत्र हिदायत खाँ को देने ओरछा भेजना, महमूद द्वारा फूलबाग में वहाँ के प्रमुख माली की बेटी से कामुक होकर छेड़ाखानी, उसकी सुरक्षा में हरदौल द्वारा महमूद का बध	133
5.16	सर्ग : सोरा : परीक्छा समस्त हरदौल बैरियों – हिदायत खाँ, जगमन खँगार, कुटनी सेविका, पहाड़सिंह, प्रतीतराय, रानी हीरा देवी आदि की विचित्र एवं भिन्न–भिन्न भूमिकायें, हरदौल और रानी (भौजी) चम्पावती की आसनाई (गलत सम्बंधों) का प्रचार करना और भइया जुझार सिंह और हरदौल में बैर पैदा करना, हरदौल को उनकी पत्नी हिमांचल कुँवरि से सारी घटना ज्ञात होना, हरदौल और चम्पावती द्वारा रामराजा मंदिर में परीक्षा देना, हरदौल द्वारा जहरयुक्त भोजन करना, हरदौल की मृत्यु और करुणा क्रन्दन, अन्तिम संस्कार के समय हिमांचल कुँवरि द्वारा पति हरदौल के शव को चिता पर पान खिलाना, सत्यता को प्रमाणित करने हेतु हरदौल के शव का मुँह खोलकर पान खाना, दाह संस्कार बाद दुखी जनता को हरदौल द्वारा देवरूप में आकाशवाणी से धैर्य बँधाना	146

1	2	3
5.17	**सर्ग : सत्रा : भतइया हरदौल देव** हरदौल की सगी बहन कुंजकुँवरि द्वारा बिटिया के विवाह में समाधि पर जाकर भात माँगना, हरदौल द्वारा अपने कोषाधिकारी धरमपाल के माध्यम से उनके साथ शहीद वीरों की कन्याओं के घर धन पहुँचाकर विवाह की व्यवस्था करना, बहन कुँजावती को प्रगट होकर भात पहनाना एवं भनिज दामाद को प्रगट होकर भोजन कराना और नेग में अपनी जागीर में से पाँच गाँव देना, भान्जी के सम्पूर्ण विवाह में अप्रकट रूप से कार्य करना	167
5.18	**सर्ग : अठारा : करनी – भरनी** हरदौल की मृत्यु उपरान्त, ओरछा नगर के लोगों और हरदौल की पत्नी का ओरछा छोड़कर चले जाना, जुझार सिंह राजा को सबके द्वारा मन से त्याग दिया जाना, ओरछा पर हिदायत खाँ का आधिपत्य, शाहजहाँ द्वारा जुझार सिंह और उसके बेटे विक्रमाजीत का सिर कटवा लेना और राज्य को हथया लेना, जुझार सिंह के पुत्रों की दुर्गति करवाना और उन्हें मुसलमान बनवाना । जुझार और बेटे विक्रमाजीत के कटे सिरों को औरछा में चौराहे पर टँगवाया जाना । अन्त में उनके सिर के साथ रानी चम्पावती का सती होना ।	179
6	**अन्त में :** हरदौल देव की आरती, बिनती के साथ महाकाव्य का समापन। श्री हरदौल देव चालीसा, बुन्देला सपूत हरदौल देव ओरछा क वंशावली एवं बुन्देला शासकों की विवरणी। कवि श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम' की वंश विवरणिका। श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम' : एक संक्षिप्त परिचय। इति	182

बुन्देली भाषाकृत महाकाव्य :

बुन्देला सपूत हरदौल

रचनाकार : श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'

एक दृष्ट में

यह प्रबन्ध काव्य निश्चित ही बुन्देली भाषाकृत अनूठा एवं विशिष्ट महाकाव्य है। महाकाव्य के सम्पूर्ण गुणों से यह काव्यकृति शोध प्रबन्ध की भाँति प्रामाणिक तथ्यों को उजागर करती हुई अनुशंधित्सुओं को सहायक सामग्री प्रदान करने में सक्षम है। इस महाकाव्य का सार संक्षेप यहाँ 'एक दृष्टि में' निम्नानुसार दृष्टव्य है :–

परिनिष्ठित बुन्देली भाषा में रचित छन्दोबद्ध काव्यग्रन्थ (महाकाव्य)	बुन्देला सपूत हरदौल धीरोदात्त चतुर नायक के चरित्र पर रचित एक ऐतिहासिक कथावृत्त आधारित महाकाव्य	बुन्देली की एक प्रतिनिधि काव्य रचना जिसमें नगर, मधुपान, नदी, पर्वत, उपवन, उत्सवों आदि का वर्णन है।	ज्ञातव्य ऐतिहासिक तथ्यों एवं व्यक्तित्वों का एक प्रामाणिक दस्तावेज	साहित्य : काव्य सृजन धर्मिता के गुण–धर्म, शैली एवं आवश्यक चित्रणों का संवाहक। विविध वृतान्तों युक्त लोकरंजक
छन्द–मदिरा और दोहा का प्रधान छंद के रूप में प्रयोग। यथेष्ट चंद बुन्देली परम्परागत गीतों का प्रयोग, चन्द छंद कवित्त कुण्डलियां, सोरठा आदि युक्त। प्रारम्भ मंगालरण एवं कथावस्तु के संकेत के साथ	परमवीर, धीरोदात्त, जनप्रिय, देश–धर्म नारी सत्य रक्षक, मानव से देव कोटि में पहुँचने वाला, सत्य और न्याय प्रिय, युवा बलिदानी, क्रान्तिकारी स्वतंत्रता सेनानी भारत (बुन्देल खण्ड) के सपूत नायक हरदौल का चरित्र चित्रण।	बुन्देलखण्ड अर्थात् बुन्देली मातृभूमि पर जन्मे पले–बढ़े, बुन्देलों के शौर्य, उनके महान एवं वीरतापूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व को दर्शाने वाला, जन–जन प्रेरणादायी एक अनूठा काव्य ग्रन्थ, परम्परागत लोकरीतियों के चित्रण युक्त भतइया हरदौल की पोथी	बुन्देलखण्ड एवं बुन्देला राज्य एवं ओरछा राज्य की स्थापना, ओरछा में रामराजा का साक्षत आगमन, हरदौल देव का देवता होना, ओरछा के तत्कालीन नरेशों का वर्णन, विक्रम संवत् व तिथियों से पुष्ट तथ्यों का उल्लेख। आवश्यक चित्रों सहित।	18 सर्गों में निबद्ध तथा महाकाव्य की सभी विशेषताओं एवं गुणों से परिपूर्ण, बुन्देली मुहावरों कहावतों, रसों, अलंकारों, शब्द शक्ति आदि का सहज प्रभावी संयोजन, सरल, सरस भाषा शैली, प्राकृतिक सौन्दर्य की मनमोहक छटा आदि के चित्रण युक्त काव्य रचना।

कृतिकार का उद्देश्य : बुन्देला सपूत हरदौल देव के श्रेष्ठ एवं महान जीवन चरित्र के माध्यम से वर्तमान में पतनोन्मुखी किशोर–किशोरियों, युवक–युवतियों एवं अन्यान्य जन सामान्य में कर्त्तव्यपरायणता, सत्य–न्याय स्वधर्म पालन के प्रति जागरूकता, अखण्ड देशभक्ति, नारी–सम्मान, ओज, साहस, शौर्य, पौरुष, परस्पर निश्छल प्रेम और विश्वास आदि की प्रबल एवं अक्षुण्ण भावना जगाकर सभी में मानवता व सच्चरित्र निर्माण करना और उनके अनुशीलन हेतु उत्प्रेरित करना।

युगकवि डॉ. राम स्वरूप खरे
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं प्राचार्य
दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई
एवं प्रधान सम्पादक, अन्तर्राष्ट्रीय शोध त्रैमासिकी 'शोधार्णव'
5, प्राध्यापक निवास, राठ रोड, उरई (जालौन) उ.प्र.

बुन्देली भाषाकृत महाकाव्य

बुन्देला सपूत हरदौल

❖ स्वकथन सह आभार ज्ञापन ❖

'बुन्देला सपूत हरदौल' प्रबन्ध काव्य की रचना के उपरान्त यह उचित प्रतीत नहीं होता कि इस स्वकथन में पृथक से उसके सम्बन्ध में और कुछ लिखा जाय। बुन्देला हरदौल देव में बाल्यावस्था से ही उन सभी गुणों और आचरणों की विद्यमानता थी जो एक महापुरुष या महान व्यक्तित्व में पाई जाती हैं। इस महाकाव्य के नायक बुन्देला हरदौल देव के उन समस्त गुणों—आचरणों का समावेश इस प्रबन्धकाव्य जो 18 सर्गो में संवर्द्धित है, में किया गया है। पाठक जन इसे आद्योपान्त पढ़कर उसका आनंद ले सकेंगे। सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि किसी भी स्तर या कोण से उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को परखने पर हम पायेंगे कि हरदौल एक परमवीर, कुशल योद्धा एवं सेना नायक, देश—धर्म— संस्कृति एवं नारी सत्व रक्षा में बलिदान हो जाने वाले परम प्रतापी परमवीर और महापुरुषों के आचरणधारी युवक रहे हैं। हालांकि उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुत विस्तृत और विशाल है किन्तु इस प्रबन्ध काव्य में हरदौल देव के जीवन चरित्र के प्रमुख स्थलों एवं कृतित्वों/प्रसंगों को ही समावेशित करते हुए उनके जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक के तथा कुछ पश्चातवर्ती घटनाओं को सम्मिलित किया गया है। इस महाकाव्य के सम्बन्ध में संक्षेप में जानकारी इसमें प्रकाशित शीर्षों "बुन्देला सपूत हरदौल : एक दृष्टि में" एवं "ज्ञातव्य ऐतिहासिक तथ्य" से सहज में प्राप्त की जा सकती है।

इस प्रबन्ध काव्य की रचना का मूल उद्देश्य है — बुन्देला सपूत हरदौल देव के श्रेष्ठ जीवन चरित्र के माध्यम से वर्तमान में पतनोन्मुखी किशोर—किशोरियों, युवक—युवतियों एवं अन्यान्य जन सामान्य में कर्त्तव्यनिष्ठा, सत्य—न्याय—स्वधर्म पालन के प्रति जागरूकता, अखण्ड देशभक्ति, नारी सम्मान, ओज, साहस, शौर्य, पौरुष, परस्पर निश्छल प्रेम और विश्वास आदि की प्रबल एवं अक्षुण्ण भावना जगाकर सभी में मानवता व सच्चरित्र का निर्माण करना एवं उनके अनुशीलन हेतु उत्प्रेरित करना।

इस ऐतिहासिक प्रबन्ध काव्य (महाकाव्य) "बुन्देला सपूत हरदौल" में वर्णित श्रेष्ठ प्रसंगों को महामंत्रों के रूप में प्रयोग करते हुए इस 'सच्चरित्र निर्माण एवं अनुशीलन' महायज्ञ में उदार हृदय एवं दृढ़ विश्वास के साथ भागीदारी एवं उसको सफल बनाने हेतु मैं सभी यज्ञाचार्यों (विद्वज्जनों) एवं

सहयोगी जनों का आह्वान करता हूँ। इस संकल्पित महायज्ञ की सफलता के लिए मैं सभी पाठकजनों से आग्रह करता हूँ कि वे इस ग्रन्थ को जन–जन तक पहुँचाकर मुझे अनुग्रहीत करें।

इस प्रबन्ध काव्य के सृजन कार्य हेतु विषय सामग्री प्राप्त करने में ठा. लक्ष्मण सिंह गौर ओरछा धाम द्वारा रचित ग्रन्थ 'ओरछा का इतिहास' एवं श्री श्रवण कुमार त्रिपाठी, तालबेहट (ललितपुर) उ.प्र. द्वारा रचित ग्रन्थ 'हरदौल यश गाथा' विशेष सहायक सिद्ध हुए हैं। इनके अतिरिक्त शासकीय ललित कला संस्थान, ग्वालियर (म.प्र.) की प्रभारी प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष फाइन आर्ट्स जिनके द्वारा ओरछा के कला संबंधी विषय पर शोध कार्य किया गया, प्रोफेसर डॉ. अपर्णा अनिल जी से भी प्राप्त प्रामाणिक संबंधित विषय सामग्री भी इस कार्य में विशेष सहायक रही है। मैं इन सभी का बहुत–बहुत कृतज्ञ हूँ।

रचना में त्रुटियाँ, भूल–चूक होना सहज एवं स्वाभाविक संभाव्य हैं जिसके लिए पाठक जन एवं साहित्यकार मनीषी जन मुझे क्षमा करेंगे ऐसी उनसे सहज कामना है।

आभार ज्ञापन :

मैं सर्वप्रथम एवं सर्वाधिक आभार ज्ञापन करता हूँ (केन्द्रीय) बुन्देली साहित्य एवं संस्कृति सेवा संस्थान, उरई (जालौन) उ.प्र. के अध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका 'शोधार्णव' के प्रधान सम्पादक, शिक्षा एवं भाषाविद् युगकवि डॉ. रामस्वरूप खरे, पूर्व प्राचार्य, डी.वी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उरई का जिनकी प्रेरणा और मार्गदर्शन में इसकी रचना संभव हुई। उनकी प्रेरणा का स्वागत करते हुए लगभग छै माह में दिनांक 21.08.2013 (श्रावण शुक्ला 15 (रक्षाबन्धन) सं. 2070 बुधवार) को मैंने इसकी रचना पूर्ण की। श्रावण शुक्ला 15 (रक्षाबंधन) तिथि हरदौल के जन्म की भी तिथि है। सौभाग्य यह कि डॉ. खरे साहब ने इस कृति को, अपने विचारों को लिखने के साथ, महाकाव्य की श्रेणी में स्वीकार किया तथा आवश्यक तथ्यों द्वारा 'बुन्देला सपूत हरदौल : एक दृष्टि में' लिखकर उसकी पुष्टि की।

मैं आभार मानता हूँ बुन्देली साहित्य एवं संस्कृति सेवा संस्थान उरई के उन सभी बुन्देली भाषा के विद्वान कवि/साहित्यकारों का जिनके साथ बैठकर मैं अपनी रचनायें पढ़ता हूँ, वाहवाही लूटकर प्रोत्साहित होता हूँ और उनसे मार्गदर्शन/ज्ञान प्राप्तकर सृजन कर्म निरत रहता हूँ। इसी संस्थान के उपाध्यक्ष श्री डालचन्द्र 'अनुरागी' द्वारा रचित प्रबन्ध काव्य ''भोजला की बेटी'' ने मुझे 'बुन्देला सपूत हरदौल' महाकाव्य सृजन की विशेष ऊर्जा प्रदान की। डॉ. राधेश्याम योगी, रामगोपाल प्रजापति 'अनजान', प्रिया श्रीवास्तव 'दिव्यम्'

आदि साहित्यकारों के उत्साहवर्धन ने भी हमें बहुत ऊर्जा प्रदान की जिसके लिए मैं आभारी हूँ।

मैं आभारी हूँ अपनी धर्मपत्नी श्रीमती राजेश कुमारी श्रीवास्तव का जिनसे यथा आवश्यक समय–समय पर बुन्देली क्षेत्र के परम्परागत लोकगीतों, रीतिरिवाजों की जानकारी मिली तथा कई बुन्देली भाषा के शब्दों का समाधान प्राप्त हुआ।

मैं आभार मानता हूँ इण्टर कॉलेज सरसई (जालौन) उ.प्र. में वरिष्ठ (उच्च श्रेणी) विज्ञान शिक्षक पद पर पदस्थ अपने अनुज ओम बहादुर श्रीवास्तव का जिनने मुझे मेरे गार्हस्थिक अनेक उत्तरदायित्वों से मुक्त रखा जिसके फलस्वरूप मैं आश्रम सदृश्य अपने शान्त एवं स्निग्ध वातावरण युक्त बाड़ा (श्रीवास्तव बाड़ा) में एकान्त बैठकर इस प्रबन्ध काव्य की रचना कर सका।

मैं आभार मानता हूँ अपने ही ग्राम बिनौरा वैद्य के सेवानिवृत्त बी.पी. एम. श्री रामदास पांचाल का जिनने सतत मुझे बुन्देली भाषा में कुछ न कुछ अवश्य लिखने हेतु प्रोत्साहित एवं प्रेरित किया तथा इस प्रबन्ध काव्य लेखन हेतु आवश्यक सामग्री जुटाने में सहयोग प्रदान किया।

Shyam

श्याम बहादुर श्रीवास्तव ''श्याम''
रचनाकार
मोबा. : 7408439308, 7376094595

बुन्देली भाषाकृत

बुन्देला सपूत हरदौल (महाकाव्य)

रचनाकार : श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'

ज्ञातव्य ऐतिहासिक तथ्य

❖ प्रमुख पात्र, स्थल एवं प्रामाणिक विवरण ❖

1. बुन्देलखण्ड :

1. "भारत के गजेटियर के अनुसार बुन्देलखण्ड वह प्रदेश है जो उत्तर में जमुना, उत्तर पश्चिम में चम्बल, दक्षिण में मध्य प्रान्त के जबलपुर तथा सागर खण्ड तथा दक्षिण पूर्व में रीवा अथवा बघेलखण्ड और मिर्जापुर की पहाड़ियों के मध्य स्थित है।"

2. "बुन्देलखण्डान्तर्गत उत्तर प्रदेश के झाँसी, ललितपुर, बाँदा, जालौन, हमीरपुर और महोबा जिला परिगणित किये जाते हैं, जबकि मध्यप्रदेश के टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सागर, दमोह, दतिया, ग्वालियर, भिण्ड, मुरैना, गुना, शिवपुरी, विदिशा, रायसेन, होशंगाबाद, जबलपुर, नरसिंहपुर, मण्डला, शिवनी, छिन्दवाड़ा, बालाघांट तथा बैतूल, सतना की नागौद तहसील और सीहौर के पूर्वीभाग में आज भी किसी न किसी रूप में बुन्देली बोली जा रही है।"

-शोधार्णव - जनवरी - जून : 2013 अंक (पृष्ठ 4 व 130)

2. बुन्देला :

ओरछा गजेटियर के अनुसार बिन्ध्य क्षेत्र के शासक होने से 'बिन्ध्येले' शब्द अपभ्रंश रूप है 'बुन्देला'। काशी (बनारस) में वि. संवत 731 से 1105 तक, महौनी जगम्मनपुर में वि.सं. 1105 सं. 1308 और गढ़कुड़ार में वि. सं. 1308 से 1588 तक बुन्देलों का राज्य (शासनकाल) रहा। <u>बुन्देलों की उत्पत्ति</u> : गहरवार क्षत्रिय बुन्देलखण्ड में शासक होने से बुन्देला कहलाये।

3. ओरछा :

यह मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ जिले की तहसील निबाड़ी में बिन्ध्य की पहाड़ियों के क्षेत्र में बेतवा नदी के किनारे 12 मील लम्बे विशाल परकोटे में स्थित है। गढ़कुड़ार के राजा रुद्रप्रताप सिंह बुन्देला ने विक्रम सं. 1558 में गढ़कुड़ार से लाकर राजधानी ओरछा की तथा वि.सं. 1558 से 1588 तक शासन किया। इनकी मृत्यु के बाद ओरछा गद्दी पर वि.सं.

1588 में आसीन उनके ज्येष्ठ पुत्र भारतीचन्द्र ने राजधानी गढ़कुड़ार से ओरछा अन्तिम रूप से पूर्णतः स्थापित की।

4. **बुन्देली भाषा :**

"बुन्देलखण्ड प्रदेश की भाषा बुन्देलखण्डी है। बुन्देली का अभिप्राय उस भाषा से है जो बुन्देलों द्वारा बोली जाती है।" "वैदिक संस्कृत के पश्चात लौकिक संस्कृत का युग आया। पुनश्च पालि प्राकृत और अपभ्रंश ने अपना साम्राज्य स्थापित किया। अर्द्धमागधी अपभ्रंश से पूर्वी हिन्दी एवं शौरसेनी अपभ्रंश से पश्चिमी हिन्दी की उत्पत्ति हुई। इसी पूर्वी हिन्दी से अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी बोलियाँ, प्रादुर्भूत हुईं जबकि पश्चिमी हिन्दी से ब्रज, बाँगरू, कन्नौजी, खड़ी बोली एवं बुन्देली पाँच बोलियों का विकास हुआ। इन आठो बोलियों से मिलकर हिन्दी का स्वरूप उभर कर हम सबके सामने प्रत्यक्ष हुआ है।"

–शोधार्णव – जनवरी – जून : 2013 अंक (सम्पादकीय) : डॉ. रामस्वरूप खरे

(अ) पुरुष पात्र :-

5. **मधुकर शाह :**

हरदौल देव एवं जुझार सिंह आदि के दादा (बब्बा साहब) एवं महाराजा वीर सिंह देव के पिता श्री। परम वीर, धार्मिक एवं पराक्रमी योद्धा। **जन्म**– वि.सं. 1560 एवं **मृत्यु**– वि.सं. 1649। ओरछा राज्य शासनकाल – विक्रम सं. 1611 से 1649 तक।

6. **वीर सिंह जूदेव :**

हरदौल, कुंजावती, जुझार सिंह, पहाड़ सिंह आदि के अत्यन्त वीर, पराक्रमी, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, देश – धरम रक्षक, अति न्याय प्रिय पिता श्री। **जन्म**–वि.सं. 1599, ओरछा राज्य शासनकाल वि.सं. 1663 से 1684 (स्वर्णयुग) तक। **मृत्यु**–वि.सं. 1684, तीन महारानियों – (1) अमृत कुँवरि (2) गुमान कुँवरि (3) पंचम कुँवरि के पति। सम्राट जहाँगीर के परममित्र।

7. **जुझार सिंह :**

महाराजा वीर सिंह एवं उनकी प्रथम पत्नी रानी अमृत कुँवरि के ज्येष्ठ पुत्र। हरदौल देव के सौतले बड़े भाई। **जन्म**– वि.सं. 1620 एवं **मृत्यु** – वि.सं. 1691 में। ओरछा शासन काल वि.सं. 1684 से 1691 तक। विवाह वि.सं. 1649 में चम्पावती के साथ। हरदौल को विष दिलवाकर मारने वाला शंकालु राजा।

8. **चम्पतराय :**

नुना (महेबा)(ओरछा) के जागीरदार एवं कोंच की जागीर प्राप्त परमवीर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, क्रान्तिकारी सफल योद्धा। हरदौल देव के परमसाथी एवं विचारधारा पोषक। **जन्म**– वि.सं. 1644 एवं **देहान्त**– वि.सं. 1721। अत्यन्त कर्त्तव्यनिष्ठ। वि.सं. 1984 से 1688 तक ओरछा राजसिंहासन पर आसीन रहे।

9. **पहाड़ सिंह :**

महाराजा वीर सिंह एवं प्रथम पत्नी अमृत कुँवरि का तृतीय पुत्र अर्थात जुझार सिंह का सगा भाई और हरदौल का सौतेला उनसे द्वेष मानने वाला भाई। **जन्म**– वि.सं. 1645, **मृत्यु** – वि.सं. 1720। ऐरछ के राजा। वि.सं. 1698 से 1720 तक ओरछा राज्य के शासक रहे।

10. **हरदौल देव बुन्देला :**

महाकाव्य का धीरोदात्त, चरित्रवान, देश–धरम, नारी सत्व रक्षक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी परमवीर योद्धा नायक। बुन्देला क्षत्रिय ओरछेश बीरसिंह जू देव एवं उनकी द्वितीय पत्नी महारानी गुमान कुँवरि के ज्येष्ठ सुपुत्र। **जन्म :** सावन शुक्ला 15 वि.सं. 1665, दिन मंगलवार तथा **बलिदान :** 23 वर्ष की आयु में तिथि – क्वाँर शुक्ल 10 (विजया दशमी) वि.सं. 1688 दिन रविवार। बड़ागाँव के जागीदार और वि.सं. 1684 से 1688 (मृत्यु पूर्व) तक जुझार सिंह जू देव के कार्यवाहक ओरछा शासक रहे।

11. **विजय सिंह देव :**

बुन्देला वीर हरदौल एवं उनकी पत्नी हिमांचल कुँवरि का इकलौता नन्हा बेटा। **जन्म** – वि. संवत 1687 में। एक वर्ष की आयु में ही हरदौल (पिता) का अन्तिम संस्कार करना पड़ा। पिता की मृत्यु के बाद माँ के साथ बड़ागाँव (जागीर गाँव) गमन किया।

12. **चन्द्र देव मिश्र :**

नगर ओरछा के राजा का वैद्य, वैद्य विशारद, ज्योतिष के ज्ञाता, हरदौल देव की जन्म कुण्डली के निर्माता, सदाचारी कुलीन ब्राह्मण। हरदौल को जन्मांग के अनुसार श्री गणेश अंशी घोषितकर्ता।

13. **शाहजहाँ :**

जहाँगीर सम्राट के बाद पदासीन बादशाह। हिन्दू व हिन्दू धर्म का कट्टर बैरी। अत्यन्त, क्रूर, अन्यायी व अत्याचारी सम्राट। बुन्देलखण्ड, बुन्देलों एवं ओरछा राज्य का विशेष दुश्मन। हिन्दू नारियों का अपहरण, उनके साथ दुष्कर्म और जबरन मुस्लिम धर्म अपनाने को बाध्य करने वाला दुराचारी मुसलमान शासक। वि.सं. 1684 में सम्राट जंहाँगीर के स्थान पर राजगद्दी सँभाली।

14. जगमन खँगार :

हरदौल का मित्र किन्तु उनसे पराजय के कारण शत्रु बनकर मुगलों के साथ मिलकर हरदौल के बध के षड़यंत्र में शामिल हुआ। जुझार सिंह के मन में एक कुटनी के माध्यम से हरदौल के विरुद्ध जहर घोला। कपटी साधु बना।

15. हिदायत खाँ :

शाहजहाँ का सर्वश्रेष्ठ कूटनीतिज्ञ एवं षड़यंत्रकारी। नबाब के पद पर पदासीन। जुझार सिंह का कपटी, छली, धोखेबाज मित्र। नकली मौनी बाबा बन कर, रचित षड़यंत्र में सफल हुआ।

16. धरमपाल :

हरदौल देव का कोषाधिकारी एवं परमभक्त, आज्ञापालक।

17. बाला प्रसाद :

फूलबाग ओरछा की व्यायामशाला का प्रमुख मल्ल। 15 वर्ष की आयु में 'बुन्देलखण्ड शार्दूल' की पदवी प्राप्तकर्त्ता। किशोरी बेला का प्रेम पात्र।

(ब) महिला पात्र –

18. चम्पावती :

नृप जुझार सिंह की गंगा समान पवित्र साध्वी (पतिव्रता) पत्नी। **जन्म–** वि.सं. 1626, **देहान्त** – वि.सं. 1691 में (62 साल आयु) सती हुई। विवाह वि.सं. 1649। हरदौल की मृत्यु वि.सं. 1688 के समय आयु 59 वर्ष।

19. हीरा देवी :

बुन्देला पहाड़ सिंह की कूटनीतिज्ञ पत्नी जिसने हरदौल एवं अन्य लोगों को भी जहर देकर मौत के घाट उतारा। **जन्म** – वि.सं. 1651, **मुत्यु–** वि.सं. 1729।

20. हिमांचल कुँवरि :

बुन्देला वीर हरदौल की अर्धांगिनी। विवाह वि. सं. 1685 में। दुर्गापुर के दिमान लाखन सिंह प्रमार की बेटी। अति साध्वी महिला। हरदौल की मृत्यु के कुछ समय बाद अपनी जागीरदारी– बड़ागाँव के लिए इकलौते पुत्र के साथ प्रस्थान।

21. कुंजावती (कुंज कुवरि) :

हरदौल देव की सगी छोटी इकलौती बहन जिसका विवाह बेरछा के रणजीत सिंह परमार के साथ हुआ।

22. रतन कुँवरि (रतनकुमारी) :

हरदौल देव की सगी भान्जी एवं बहन कुंजावती की पुत्री जिसका विवाह हरदौल की मृत्यु के बाद कुँवर मानसिंह खड़ऊबा (सेंवढ़ा) म.प्र. के साथ हुआ। रतन कुँवरि की शादी में हरदौल ने प्रगट होकर स्वयं भात पहनाया।

23. गणेश कुँवरि (कमला देवी) :

ओरछा नरेश मधुकर शाह की छै रानियों में से उनकी सर्वश्रेष्ठ रानी और भगवान श्रीराम की अनन्य उपासिका। **जन्म** – वि.सं. 1596 में करइया (डबरा) में अनुरुद्ध सिंह जू प्रमार के यहाँ हुआ। **स्वर्गवास** – वि.सं. 1642। हरदौल की दादी। विवाह वि.सं. 1569 में। सावन शुक्ल 5 वि. सं. 1630 में अयोध्या में इन्हें बालरूप में साक्षात भगवान रामराजा के दर्शन हुए। सावन शुक्ल 15, 1630 में अयोध्या से ओरछा के लिए रामराजा ने कमला की गोंद में प्रस्थान किया। वि. सं. 1631 में चैत्र शुक्ल, 9 मंगलवार को 8 माह 27 दिन में पैदल चलकर अयोध्या से ओरछा साक्षात रामराजा को लाईं और ओरछा में पधराया।

24. कमल कुँवरि :

जुझार सिंह की ज्येष्ठ पुत्र बधू। पुत्र विक्रमाजीत की पत्नी। वि.सं. 1691 में पति की मृत्यु पर सती हुई।

25. बेला:

फूलबाग के मुख्य माली हरिवंश की साहसी, बलवान सुन्दर किशोरी बेटी। हिमांचल कुँवरि की अत्यन्त विश्वास पात्र परिचारिका। बालाप्रसाद की प्रेयसी

26. राधा :

हरदौल के बैरी जगमन खँगार द्वारा नृप जुझार सिंह की सेवा में रखी गई कुटनी (कूटनीतिज्ञ) सेविका जिसने जुझार सिंह के मन में हरदौल और चम्पावती महारानी के विरुद्ध आशनाई का झूठा दोष लगाने का बिस बीज बोयः जो हरदौल देव की मृत्यु के साथ समाप्त हुआ।

Shyam

श्याम बहादुर श्रीवास्तव "श्याम"
रचनाकार

ॐ

मंगलाचरन

माँ सरस्वती !

दिब्ब अलौकिक तेजोमय छबि सरस्सुती माँ! दरसन दो।
हंसबाहिनी–ग्यानदायिनी! हृदै कंज पै आसन लो।।
निरमल पावन हुइऐ अन्तस, अँग–अँग पिरकासित हुइऐ,
बुध्धि–बिबेक सुध्ध हुइऐं, चंचल मन अनुसासित हुइऐ,
जो कराउँनें सो करवाओ, बैठ इतै निरदेसन दो।।१।।
धरती पै हम भार रूप भर बनकें ना रै जावैं माँ!
हम न काउ के काम आ सके, सो न लगी रै जाबै माँ!!
हाँत कलम पकराई है तौ सृजन कर्म उतकरसन दो।।२।।
है न स्वहित की चाह, लोकहित तौ कछु नींकौ करवाओ,
माँ! निज ग्यानालोक इतै जन–जन के हिरदै सरसाओ,
दो सुत प्यार मताइ! 'श्याम' कों, निज पद पंकज परसन दो।।३।।

कबित्त

चार बाँह बाली माइ ! सारदा ! सुनो हमाइ,
जोत ग्यान की जगाय अन्तस सँमार दो।
हंस सो बिबेक–सुध्ध, लेखनी बनाओ सिध्ध,
बीना सी सरस मात! सुर झनकार दो।।
छंदसास्त्र को बिधान सृजन धरम ग्यान,
देव–देव बाग्देबि! बिमल बिचार दो।
अंकुस तुमाये कर, ऊकौ उपयोग कर,
चंचल–चपल मन कों मताइ! मार दो।।

आव – आव जू गनेस !

आव–आव जू गनेस! आसन बिराजौ ईस,
सिरधा सहित सिर चरन धरत हैं।
लेखनी गही है हँात, सरस बनाओ सार्थ,
बौइ लिखवाओ जीसें जन सुधरत हैं।।
साँच की डगर होय, ओइ पै रिंगाओ मोय,
भटक न जावैं जौइ बिनती करत हैं।
बिघिन हरत नाथ। सीस पै धरो जू! हँात,
लक्छ सें कराओ भेंट, आँगूँ डगरत हैं।।

रामराजा ! ओरछा वाले !

रामराजा ओरछा वाले! नमन।
नाथ! अपनाओ हमें, आये शरन।।
संग कमला राजरानी ओरछा,
अबध से साक्षात लायीं ओरछा,
जा पधारे आप रानी के भवन।।१।।
सुघर मनहर बाल छबि धाये वहाँ,
दो उसी छबि में दरश आके यहाँ,
दुरित कर दो नाथ! अन्तस के शमन।।२।।
चित्रकूट पवित्र त्रेता में किया,
ओरछा को धन्य इस युग में किया,
'जय बुँदेली भूमि' स्व्रर गूँजे गगन।।३।।
हम बुँदेलों पर सदा रखना दया,
देश भर बुन्देलखँड सा हो महा,
हों सदाचारी सभी जन एक मन।।४।।
'श्याम' पुरुषोत्तम धनुर्धारी प्रभो!
दो हमें बल ग्यान पौरुष हे विभो!
मनुज का होता हुआ रोकें पतन।।५।।

बुन्देली भाषाकृत :

बुन्देला सपूत हरदौल

(महाकाव्य)

सर्ग : एक

नमन

बुन्देली - बुन्देला - बुन्देलखण्ड

दोहा

सतगुरु कों सत-सत नमन, बिन्ती बारम्बार।
दीक्छा सफल बनाइओ, लग जय बेड़ा पार।।१।।

मात-पिता-सिक्छागुरू और मनीसीब्रन्द्र!
सुइकारो पिरनाम सब, हरो मानसिक दुन्द।।२।।

आन बिराजो सामनूँ, इस्टदेव श्रीराम!
परम लक्छ मिल जाय प्रभु! करत प्रार्थना 'श्याम'।।३।।

है गिरस्त जीवन कठिनं, कठिन चरित संग्रांम।
निभा लेव आदर्स तुम, भगवन् सीताराम!!४।।

बुन्देला हरदौल सी भक्ति-शक्ति-मति देव।
नमन तुमें बजरँगबली! बिनती सुभगति देव।।५।।

मातृभूमि सें बढ़ नहीं उत्तम सुरगउ धाम।
भारत भूमीं कों करत भक्ती सैत प्रनाम।।६।।

नमन बुँदेली भूमि कों जाँ जनमे हम आय।
जनमभूमि माता अपँइँ ऊ सम कोउ न आय।।७।।

जै-जै-जै बुन्देलखँड भारतवर्स महान।
जै बुन्देले सूरमा, सबै नमन धर ध्यान।।८।।

बुन्देली भासा ललित प्यारी प्रान समान।
कत बुँदेलखण्डी इऐ जीकी अद्‌भुत सान।।६।।

बिन्ध्यबासिनी देबि सम है पूजन के जोग।
बुन्देली भासा सरस उर बिलकुल नीरोग।।१०।।

बुन्देली भासा! नमन बाकसक्ति तुम मोइ।
देवी उर बसिओ सदा, क्रपा चाँउ्त हम तोइ।।११।।

मातृभूमि रच्छा करत जो बुन्देला बीर।
जूझे रन में उनइँ की बुन्देली जागीर।।१२।।

जाए बुँदेला बीर बे हैं मताइयें धन्य।
उनकों सीस नबाउ्त हम, भारत माँ है धन्य।।१३।।

जिन सतियन नें देस हित दव सुहाग को दान।
नमन उनें कर आरती, दै आसन सनमान।।१४।।

धीर-बीर, नारी सती, हैं संस्कृति की सान।
जिन कारन है आज़ऊँ भारत देस महान।।१५।।

पंलै जितै छत्री धरम, मानवता को मान।
ऊ माटी कों सीस धर नमन सैत सन्मान।।१६।।

बीर भूमि बुन्देलखँड और ओरछा धाम।
सूर सूरमइ सुघरई, 'श्याम' सबै परनाम।।१७।।

करत बुन्देली भूमि कों नमन सकल संसार।
ऊ बुन्देली भूमि कौ हिरदै भौत उदार।।१८।।

छन्द

जै बुन्देलखण्ड-बुन्देली, जै बुन्देला बलधारी।
तीनउँ बन्दन जोग धरा पै जैसें अपनी म्हाँतारी।।
सिरी राम की सरन थली बुन्देलखण्ड भू भाग रहो।
और कैउ रिसि मुनियन के कारन ई हरदम पूज्य अहो।।१।।

राज्य महोबा में आल्हा-ऊदल उर कइयक बीर भये।
राज्य ओरछा नृप अति न्यायी बीरसिंह रणधीर भये।।
छत्रसाल जू की क्रपान, हरदौल बीर बलिदान अमर।
लच्छमीबाई और अबन्तीबाई को संग्राम अमर।।२।।

चम्पतराय, तातियाँटोपे, मरदन सिंह, संकरसिंग से।
भये बीर बुन्देलखण्ड में गरिमावान देस जिनसे।।
अनगिन बीर बलंकारी ग्यानी-तपसी उर बिग्यानी।
भए बुन्देलखण्ड में जिनको लोहा दुनिया भर मानी।।३।।

पहले हिन्दी महाकाव्य के जगनिक रचनाकार भये।
मित्र मिश्र संस्कृत के पंडित केसव कबि आचार्य भये।।
भये बिश्वकवि तुलसी उर भए कबी बिहारी लाल इतइँ।
और लोककबि भये ईसुरी भए कबि माखन लाल इतइँ।।४।।

गुप्त मैथिलीसरन राष्ट्रकबि और बियोगी हरि हो गए।
घासीदास ब्यास, मुंसी अजमेरी से उद्भट हो गए।।
बुन्देली साहित्त रचइया अनगिन भए बिद्वान इतै।
है गुमान बुन्देलखण्ड कों भए अनगिनत महान इतै।।५।।

बुन्देली लेखन सम्बरधन उर सेवारत हैं जो जन।
उन मनीसियन और साधकन कों सादर कर जोर नमन।।
कै दइ जा सूच्छम उर लै दए नाँव कछू हमनें सूच्छम।
है बुन्देलखण्ड को माथौ ऊँचौ उर रैहै हरदम।।६।।

कइयक पावन नदियाँ अमरित पिबा रई हैं बसुधा कों।
कइयक तीरथधाम इतै हम करत नमन पावनता कों।।
बलिदानन की धरती है पहचान छंद आल्हा मानो।
प्रान चेतना बीर सहीदन की है ईऐ पहचानो।।७।।

संसकारबानन को है बुन्देलखण्ड भूभाग परम।
बुन्देलन की सूर वीरता को दुरलभ इस्थान परम।।
ऐसी अपनी मातृभूमि बुन्देलखण्ड की जै-जै-जै।
प्यारी ललित सबल है भासा बुन्देली की जै-जै-जै।।८।।

कासी सें चल गहरवार छत्री बिन्ध्यांचल आन रये।
बिन्ध्य छेत्र के सासक बे 'बिन्ध्येला' पद सन्नाम भये।।
बिन्ध्येला अपभ्रंस बनो 'बुन्देला' अब जग जाहिर है।
जादाँ का कयँ बुन्देलन को पौरुस-सौर उजागर है।।९।।

भये एक सें एक बाँकुरे जोधा बीर बुँदेलन में।
जिननें कभउँ न झुकबौ जानो, पीठ दिखाई ना रन में।।
भये बीरसिंग देव प्रथम उनईं में जोधा बलधारी।
राज्य ओरछा के म्हाँराजा धरमात्मा व न्यायकारी।।१०।।

उनके सुत हरदौल देव भए अपँए पिता के गुनधारी।
धरम-न्याय-नारी रक्छक निबलन बिकलन के हितकारी।।
बीर अजेय उदार निस्कलुस चरितवान निरभीक महा।
धन्न ओरछा भूमि बुँदेला बीर भये हरदौल जहाँ।।११।।

ऐसे बुन्देला बीरन कों सादर बारम्बार नमन।
तीरथधाम ओरछा की पावन धरती कों नमन-नमन।।
साच्छात श्रीराम और हैं देव रूप हरदौल जहाँ।
जिनके कारन बनो ओरछा पावन तीरथधाम महाँ।।१२।।

❋ दोहा ❋

बहै बेतवा की जितै निरमल पावन धार।
उतै देखबे जोग है प्राकिरतिक सिंगार।।१६।।

अति सुघरइ दइ दैव नें रई ओरछै छाय।
तन-मन लख पुलकात है, देखौ उतई जाय।।२०।।

भक्ती-सक्ती-सत्व को जितै अनौखो जोग।
सन्तन की किरपा बनो थल रचना संयोग।।२१।।

सबकी किरपा मान कें गही लेखनी 'श्याम'।
बुन्देला हरदौल को लिखबे चरित ललाम।।२२।।

बने मनुज सें देवता परम बीर हरदौल।
नमन करत जिनको चरित अति पावन अनमोल।।२३।।

देस-धरम पै मर मिटे सैनानी बलधाम।
उनें देव हरदौल सँग जोर हाँत पिरनाम।।२४।।

सबई भार उठाइओ देइ - देवता ब्रन्द!
श्याम बहादुर 'श्याम' है अनभिग उर मतिमन्द।।२५।।

बिनय करत हम सबइ सें अपँए दोउ कर जोर।
निभा लिओ जैसें बनै सबइ देव सिरमौर।।२६।।

छूट गये जो नमन सें करत तिनेउँ प्रनाम।
सबइ करो सैजोग जू! भाव मेव निस्काम।।२७।।

भले बुरे सब जनन कों सादर राम जुहार।
सबइ जनन सें चाँउ्त हम मानवता बौहार।।२८।।

'श्रीवास्तव बाड़ा' सुघर परकोटा में बन्द।
ग्राम बिनौरा बैद्य जाँ रच रए काब्ब प्रबन्ध।।२६।।

रिसी आसरम सो सुघर जाँ तरुवर फल-फूल।
परम सान्ति तरु छाँव में मिलत पौंन अनुकूल।।३०।।

कैउ भागवत जग्ग भए जई थली में 'श्याम'।
'श्रीवास्तव बाड़ा' बनो पावन उर सुखधाम।।३१।।

सृजन साधना की थली कों कर जोर प्रनाम।
ग्राम देवतन कों करत नमन सीस धर 'श्याम'।।३२।।

बुन्देलन की भूमि को जौउ गाँव इक अंग।
जाँ बुन्देली के सबइ बिद्यमान हैं रंग।।३३।।

जै-जै-जै बुन्देलखँड, जै बुन्देले बीर।
जै-जै बुन्देली ललित, भारत की जागीर।।३४।।

卐 ॐ 卐

सर्ग : दो
ओरछा दरस और हरदौल

❋ दोहा ❋

सबइ चलो दरसन करन, तीर्थ ओरछा धाम।
जाँ की म्हाँरानी प्रक्रति सुघर सान्त सुखधाम।।१।।

बाल जुबा उर ब्रध्धजन, भगत-अभगत तमाम।
जो जाउत जो भाव लै पाउत सब बिन दाम।।२।।

❋ छन्द ❋

कल-कल छल-छल बहै बेतवा फैले बिन्ध्य पठारन में।
तीर-तीर दोऊ लँग बिखरी हरयाली बा कानन में।।
फल-फूलन बाले तरु-बेलन की सोभा उत की न्यारी।
तरा-तरा के बिरछ किनारें लगत करैं पहरेदारी।।१।।
निरमल-पावन जल बाली बेतवा बिजन की पटरानी।
जो पठार महलन में मानो बसै ओरछा रजधानी।।
जीकौ अमरित सो जल जन-जन में सक्ती संचार करै।
सक्ती रूपा उतै बेतवा मन बुन्देली ओज भरै।।२।।
सुघर बेतवा उर निरझरनीं मिलकें उतइँ किलोल करें।
छम छम उनकी लगै कि नाँचनहारीं निर्त अमोल करें।।
बिरछन पै पंछिन को कलरव, प्रातकाल की सूरज कन।
संजा के दिनकर की डूबन सरस बनाउत मन-जीवन।।३।।
जाँ कोइल की कूकें हिय में रस बसन्त को भर जावें।
नचें मोर, हिन्ना मादन सँग उरझें झाड़िन दुक जावें।।
हिड़स-हिड़स जावें मादन सें नीलगाय उर बनरोजा।
बगरौ रात बसन्त जितै रयँ उतइँ सेर बन के राजा।।४।।

सिंग्घ दहाड़ै लगै बीररस साकछात आ गर्राबै।
मानो बुन्देलन कीं संग्रामी हुंकारें दुहराबै।।
सुन दहाड़ सब भगत जानबर स्यार आदि सब दुक राबैं।
जौं बुन्देला धाबा बोलैं, बैरी दल भाग-भग जाबैं।।५।।

नदी तीर इक 'तुङ्ग' नाम के रिसी करें तप बा बन में।
'तुंगरण्य' रव नाम सलौनी तपस्थली जाँ निरजन में।।
परम सान्त एकान्त आसरम हतो उतइँ उन रिसिवर को।
बनो लकड़ियन को परकोटा बीच पेड़ इक पाकर को।।६।।

परकोटा पै बेलें लटकें हरे रंग की झरपन सीं।
उनपै फूलीं बेलें सोहैं लटकीं सुघर झालरन सीं।।
मुख्ख द्वार पै नौंने बिटपन सँग बेलें फूलनवालीं।
मानो अतिथिजनन के स्वागत में रत ठाड़ीं मतवालीं।।७।।

केला आम अनार आदि के बिटप फलन बाले सुन्दर।
पीपर, पाखर, नीम और कचनार आदि कइयक तरुवर।।
कदम, गुलाब, मोंगरा, बेला और चमेली खिले सुमन।
जिनकी मादक गन्ध पौंन फैलाबै जो मोहत जन-मन।।८।।

सुघर पखेरू चौंचाबैं कोइल गाबै मीठे सुर में।
नचें मोर सुच्छन्द मगन ऊ निरजन इस्थित आश्रम में।।
मध्य भाग में पर्नकुटी उर बनी बगल में जग्गथली।
पाकर नेंचें बनो चौंतरा जीपै आसन लगत भली।।९।।

रिसिवर 'तुंग' श्रेष्ठ तपसी ऊ आश्रम में तपलीन रहैं।
आश्रम पास पठारन में निरझर व बेतवा नीर बहैं।।
सन्तन को हो बास जितै बो ठौर सिध्ध तीरथ जानो।
ऊ धरती की रज कों पावन चन्दन सें भी बढ़ मानो।।१०।।

बिक्रम संवत पन्द्रा सौ अट्ठाउन सें अट्ठासी तक।
रुद्र प्रताप नाम छत्री बुन्देला रहे बीर सासक।।
जई अबधि की बात रुद्र जू नें सोची इकदिन मन में।
अपँइँ राजधानी बनायँ जइ पावन सुघर तपोवन में।।११।।

हरसित मन सें रिसी तुंग के दरसन कों आश्रम आये।
नृप कों आओ देख उतै सिरधेय रिसी मन हरसाये।।
उनें उचित आसन बैठारो कुसल छेम बूझी उनसें।
कारन उनके सुभागमन को बूझौ रिसिबर नें नृप सें।।१२।।

सिरधा सैत नमन कर नृप नें कओ बिचार उनसें अपनो।
बोले रिसिबर! आग्या दो कर दो हमाव पूरो सपनो।।
सिरधा-आदर भाव देख सुभ काम मान रिसि मुसकाने।
दइ आग्या रिसि नें सुनकें म्हाँराजा जू अति हरसाने।।१३।।

सोच-समज बोले रिसिबर तुम कल्ल भुरारें निकर परो।
घूम-घूम कें ऊके लानें भूमि निरीक्छन सुयम करो।।
बड़े सबेरें भूमि देखबे जाओ तौ ई ध्यान रहै।
मौं सें पैलो शब्द कढ़े बस सोई ऊकौ नाम रहै।।१४।।

बौइ सब्द सें नाम राजधानी को सुभ राजन्! हुइऐ।
पावन भूमि इतै की है सो रजधानी पावन हुइऐ।।
लै आसीस गये, नृप नें भोरइँ उठ बौई काम करो।
लये सिकारी कुत्ता सँग ऊ जंगल कों प्रस्तान करो।।१५।।

राजा नें जंगली जानबर देखो कुत्ता हुलकारे।
ऊके लानें इकदम 'उछ-उछ' शब्द स्वमुख सें उच्चारे।।
'उछ-उछ' पैलो सब्द भोर को, ऊपै भौत बिचार भओ।
और 'ओरछा' रजधानी को मिलकें पारित नाव भओ।।१६।।

राजा नें रिसि आग्या लै सोधन करवाओ धरती को।
बिधिवत नामकरन करवाओ नृप नें निज रजधानी को।।
भई थापना उतै ओरछा राज और रजधानी की।
जितै हरदमइँ हार भई है मुगलन की मनमानी की।।१७।।

पुत्र भारतीचन्द्र रुद्र को नृप गद्दी आसीन भओ।
ऊनें राज्य ओरछा रजधानी कों दै दव रुप नओ।।
बिक्रम संबत पन्द्रा सौ अट्ठासी सें सोरा ग्यारा।
अपने राजकाल में ऊनें करो ओरछा पौबारा।।१८।।

गढ़कुड़ार सें रजधानी कों ल्याय ओरछै थाप दओ।
दैंकें अन्तिम रूप नृपति ऊके बिकास लौलीन भओ।।
सम्बत पन्द्रा सो छियानबे किला बनो तइयार भओ।
बौइ रामराजा मन्दिर के नाव ऐंन बिख्यात भओ।।१६।।

रानी महल व राजमहल उर दिवानखाना बनवाये।
बीर भारतीचन्द्र बुँदेला नें प्रबन्ध सब करवाये।।
बारा मील बिसाल एक दृढ़ नगरकोट निरमान करो।
नदी बेतवा के डेरे लँग बढ़िया चौकस काम करो।।२०।।

मधुकर, अनुज भारती चँद के गद्दी पै आसीन भये।
सोरा सौ ग्यारा सें अरतिस सालें राजा अपुन रये।।
मुगलन को दबदबो बा समय पै न साहजू घबराने।
अपँए धरम के कट्टर जोधा भक्त न कभउँ हार माने।।२१।।

मुगल नरेस हिन्दुअन कों तब भौतइँ भौत सता रए ते।
चिन्ह धारमिक मिटा रये ते, मन्दिर-मठ गिरवा रए ते।।
हार न माने ते बुन्देला उनकों धूर चटाई ती।
कदम-कदम पै उन अत्याचारिन नें मौं की खाई ती।।२२।।

ऊके बाद साह के बेटा रामसाह को तिलक भओ।
चउदा सालइ बाद उतै को राजा फिर सें बदल गओ।।
संबत सोरा सौ त्रेसट में मधुकर जू के तीजे सुत।
बीरसिंग्घ जू देव प्रथम नृप चौरासी लौं रये निरत।।२३।।

इनको सासन काल रहो बुन्देलखण्ड को 'सुबरन जुग'।
कला संस्कृति न्याय बीरता जे सबई हैं जाहिर जग।।
कलाकार, साहित्तकार, बीरन को रव सनमान उतै।
धन्न ओरछा भूमि कि जीकौ साक्छी है इतिहास इतै।।२४।।

लक्षमी जू को और बनोबासी भगवान आदि मंदिर।
बनवाये ते बीरसिंग्घ नें नगर ओरछा के अन्दर।।
गुप्त सुरंगें बनवाईं तीं, किला-महल जो बनवाये।
रहै सुरक्छा पूरी तरियाँ सो तहखाना बनवाये।।२५।।

साउँन सुकला पाँचें सम्बत सोरा सौ तेरासी में।
बीरसिंग्घ म्हाँराज ओरछा की पावन रजधानी में।।
एक ब्रह्मचारी कों उनके 'बाघराज' प्यारे सुत नें।
लगा सिकारी कुत्तन कों मरवा डारो तो आ मद में।।२६।।

पिरजाबतसल धरम-न्याय-गुरुभक्त बीरसिंह नरपति नें।
अन्न्याई बेटा मरवा दव बेइ कूकरन भूपति नें।।
ऐसे न्यायी राजा रए जाँ, बौ बुन्देली भूमि महाँ।
प्रजा रहै अनुसासन में अब ऐसे राजा राज्य कहाँ।।२७।।

ऐसी पावन भूमि ओरछा काए न तीरथ धाम रहै।
ऊपै जनमे बुन्देलन की काए न जै जैकार रहै।।
बीरसिंग्घ के तीन ब्याव भए जिन सें तेरा सन्तानें।
बारा बेटा एक बिटीना सबकी गाथा का गानें!!२८।।

नाव 'गुमान कुँवरि' रानी जो हतीं दूसरे लम्बर कीं।
उनसें भए हरदौल लाल भर गईं खौंड़ियाँ खुसियन कीं।।
बिक्रम संबत सोला सौ पैंसट जनमे हरदौल लला।
जो जेठे सुत माँ 'गुमान' के, जगी ओरछा नबल कला।।२९।।

पंडित चन्द्रदेव मिसरा नें जनम कुन्डली त्यार करी।
औरउ जुरे पंडितन नें ऊकी हामीं ततकाल भरी।।
जनम कुन्डली देख पंडितन नें गुन-दोस बखान करे।
हती अनौखी प्रतिभा उनमें गुन सब सत्त बयान करे।।३०।।

बोले इत्ते उत्तम गुन बिरलेइ महापुरसन में हैं।
सुघर गसीलौ बदन छरारौ लगै देवपुरसन में हैं।।
संबत सोला सौ पैंसट, साँउँन सुकला पूनौं मंगल।
सुयम बीर रस जनमो मानो करन देसभर को मंगल।।३१।।

रक्छाबन्धन साकछातई नगर ओरछा आ जनमो।
मानो बहन बिटीनन को रक्छक सबको भइया जनमो।।
अतुल पराक्रमधारी उर बैभवसाली हुइऐ बालक।
हुऐ अजेय न्यायकारी मानवता और धर्म पालक।।३२।।

ई बालक के नाम बुँदेला जात अमर हुइऐ मानो।
अपने उत्तम करमन कारन देव तुल्ल हुइऐ स्यानो।।
धन्न ओरछा भूमि जितै ऐसे लालन नें जनम लओ।
माता धन्न कि जीनें ऐसे उत्तम सुत कों जनम दओ।।३३।।

बालक के सुभ गुन बखान सुन बीरसिंघ जू हरसाये।
दानी ओरछेस नें तुरतइँ दान-पुन्न बहु करवाये।।
पिरजा में मुद्रा उर बस्त्राभूसन भौतक बँटवाये।
राजमहल उर नगर ओरछा मन्दिर आदिक सजवाये।।३४।।

राखी को तौहार दिबस, नृप घर लालन को जनम भओ।
दुगुनो भव उल्लास नगर के घर-घर में आनन्द भओ।।
लालन जनमो बजै बधाई सजी ओरछा रजधानी।
दान करो भरपूर बीरसिंग म्हाँराजा उत्तम दानी।।३५।।

जनम बधाई दैबे आये कैउ भूप-सामंत नगर।
सुइकारैं बधाइ सबई की ओरछेस म्हाँराज प्रबर।।
तिरियाँ गाबैं गीत मनोहर प्यारी बुन्देली बानी।
राजनर्तकी गाउ्त बधाई लोकगीत मीठी बानी।।३६।।

1. बधाई हो बधाई हो

महल जनमे कुअर राजा! बधाई हो बधाई हो।
महारानी-महाराजा! बधाई हो बधाई हो।।

ललन को तेज सूरज सो और मुख चाँद सो नौंनो,
लाल हुइऐं महाराजा, बधाई हो बधाई हो।।१।।

नजर लागै न काऊ की, डठूला दो लगा दाई!
करें सीतेश जू रक्छा, बधाई हो बधाई हो।।२।।

बढ़ै प्रिय लाल दिन दूनो, उठै आकास सें ऊँचौ,
असीसें दै रई पिरजा, बधाई हो, बधाई हो।।३।।

उजागर नाव हो कुल को, सफलता आ कदम चूमै,
अमर रय लाल हर-गिरजा! बधाई हो बधाई हो।।४।।

2. बधाई-बधाई

भूऽप घर जनमो लाल की बधाई।
बधाई हो बधाई, बधाई-बधाई।।

आ दाई नें खबर सुनाई।
गहाव हार अपनो लाल की बधाई।।१।।

तेज रूप रँग प्यारो - नौंनो।
सफल भओ सपनो, बधाई-बधाई।।२।।

महाराज - म्हाँरानी हरसित।
लुटाबैं धन अपनो, लाल की बधाई।।३।।

जुग - जुग जियै लाल परमेसुर!
सुरज-चाँद जबलों, लाल की बधाई।।४।।

लाल बनै जग को उँजयारौ।
भओ न होय अबलों, बधाई-बधाई।।५।।

छन्द

बीरसिंग्घजू नें बधाइ पै भर-भर कें उपहार दये।
सबइ बधाई-आसीसें दै हरसित निज आगार गये।।
समै-समै सब संसकार भए नामकरन भव जथासमय।
दओ नाव 'हरदौल' पंडितन ने देखो तब उचित समय।।३७।।

भओ जथोचित लालन-पालन सिक्छा को पिरबन्ध उचित।
अलप समै में पारंगत भए, पाई सिक्छा बीरोचित।।
मुगदर, कुस्ती, गदा और भाला, बरछी सब सीख गये।
दोउ हाँत तरबार चलाबौ सबई में पिरबीन भये।। ३८।।

❋ दोहा ❋

करत हते अभ्यास नित जुध्ध कला को ऐंन।
मुगलन के अन्याय नें खोले उनके नैंन।।३।।

पिता बीरसिंह नें दओ रीति-नीत को ग्यान।
माँ नें भक्ती साधना और बिचार महान।।४।।

अलप आयु मेंई लगैं पैलवान हरदौल।
जगी हिये में मनुज़ता-देसभक्ति अनमोल।।५।।

माँ 'गुमान' सें इक हती कन्या सुघर सुजान।
'कुंज कुँवरि' जो ओरछा कों बन गइ बरदान।।६।।

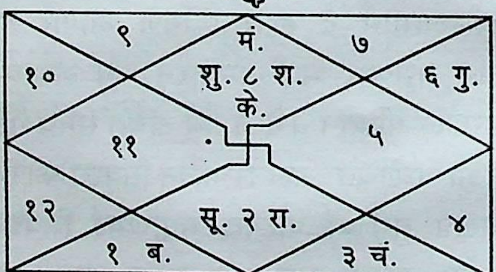
ल्हौरी इकलौती बहन पली-बढ़ी सँग-संग।
अतुल नेव हरदौल को रव कुन्जा के संग।।७।।

रखिया बाँधत है बहन भइया कें हर साल।
मन प्रसन्न दोऊ मिलत बे मिल होत निहाल।।८।।

श्री महाराजाधिराज बुन्देल वंशावतंश वीराधिपति भक्ति मणि मुकुट श्री 108 महाराज मधुकर शाह आत्मज बुन्देला वीरसिंहस्य पुत्रेषु हरिदोरस्तु -

जन्म कुण्डली श्री दिमान हरदौल, ओरछा धाम

जन्माङ्क



हहेवंश समुद्रभूतो हरि लक्षण संयुक्ता बुन्देलमणि ओड़छेन्द्र कुलदीप। रविवंशी काशीश पर।

साभार : श्री लक्ष्मन सिंह गौर, ओरछाधाम (टीकमगढ़) म.प्र. द्वारा रचित ग्रन्थ 'ओरछा का इतिहास' (23वाँ संस्करण) से उद्धृत।

सर्ग : तीन

ओरछा में रामराजा पधारे

❋ दोहा ❋

बब्बा जू हरदौल के राजा मधुकर साय।
परम भगत रए किसिन के बीर बुँदेला राय।।१।।

पतनी मधुकर साह की 'गनेस कूँवरि' नाम।
कमला दूजो नाम रव, जिने हते प्रिय राम।।२।।

साकछात आ अबध सें आन बिराजे राम।
ई कमला की दैन है, बनो ओरछा धाम।।३।।

❋ छन्द ❋

सिरी किसिन भगवान भगत म्हाँराजा मधुकर साह परम।
और गनेस कुँवरि म्हाँरानी हतीं राम की भगत परम।।
सोरा-तीस बिक्रमी इकदिन दोउ महल में बात करें।
बिसय भक्ति पै आपुस में बे मन बिनोद साल्हाद करें।।१।।

महाराज बोले कमला! जल्दियइ तुमें ब्रज चलनें है।
उतै सुरग सुख बरसत, स्यामा जमुना दरसन करनें है।।
जमुना जैसी किसिन प्रेंमिका और कोउ होबौ दुरलभ।
किसिन प्रेंम में स्याम करो तन ऐसो प्रेंम न सहज सुलभ।।२।।

रानी बोलीं, प्रेंमी-प्रीतम मिलकें होत एक ईमें।
जा सीमा है परम प्रेंम की, संसय ना नैकउँ जी में।।
तौ फिर अबसइँ म्हाँरानी जू! बिन्द्राबन चलनें पर है।
'नइँ म्हाँराज!' कही रानी नें, नृप बोले, सो का डर है।।३।।

अपुन किसिन के परम भगत सो बिन्द्रावन अपुनइँ जाबैं।
इस्ट हमाये बाल राम सो हमें अजुध्या पौंचाबैं।।
आज तुमाई भगति भावना-गूढ़ रहस को ग्यान भओ।
बाल राम में का है जो उनमें आतम बिसवास भओ।।४।।

राम तुमाये हैं पुरुषोत्तम, मरजादा पालन हारे।
'उत्तम' सर्वनाम बाले, कह हँसे भूप मद मतवारे।।
बोले, साँची कव म्हाँरानी! ब्रज कों तुम जैहौ कै नइँ?
रानीं भइँ गम्भीर और बोलीं हैं जू ! बस 'नइँ तौ नइँ'।।५।।

सुन रानी के बैंन भूप के मुख पै क्रोध झलक आओ।
बोले, राम साधना छोड़ो, सिरी किसिन कों अपनाओ।।
छमा करें म्हाँराज! न ऐसो ई तन सें कभऊँ हुइऐ।
बालक राम सिबा ना अपनो इस्टदेव कोऊ हुइऐ।।६।।

क्रोध भरे राजा बोले, तुम जाव अबध अबसइँ जाओ।
पै निज बालराम कों लौटत संगै लै अबसइँ आओ।।
नौंक-झौंक उपरान्त दोउ प्रानी अब निज-निज कक्छ गये।
बिना राम ना घर आबे की नृप जू बोल परोक्छ गये।।७।।

गई समिस्या गुरू ब्यास पै मधुकर जू नें बात कही।
रानी सर्जी अजुध्या कों उर ब्रज की हमनें बात कही।।
भौत कही पै अड़ीं जिद्द पै ब्रज जाबे कर दइ नइयाँ।
कै रइँ, "किसिन तुमाये तौ ईसुर के औतारइ नइयाँ।।८।।

माखन चोरी करी जुधिस्ठिर तक पै झूँटी बुलवाई।
करन-द्रौन्न इत्यादी की धोकौ दै हत्या करवाई।।"
सोला कला क्रिस्न औतारी, रामचन्द्र बारा सें हैं।
सोरा-जादाँ या फिर बारा, बड़े रामजी काँ सें हैं!!९।।

गुरुवर! कर दो समाधान, बिन्ती करजोर अपुन सें है।
म्हाँरानी कों समजा दो बौ भौतइँ दूर किसिन सें है।।
उनें ग्यान दै भ्रम मैंटें ब्रज जाबे कों तइयार करें।
छमा करें प्रभु! तुमें कस्ट दव, हम सबको कल्यान करें।।१०।।

गुरुवर ब्यास सोच रए मन में ईसुर में है भेद कहाँ।
राम, किसिन, बिस्नू, सिव इनमें करो जा रहो भेद यहाँ।।
नाम रूप गुन हैं अनन्त, ईसुर ब्यापक समान सबरें।
मोह आदि के बस में होकें भेद लोग अनजान करें।।११।।

सोच ब्यास जू बोले, पति-पतनी सँग तीरथ-दान करें।
सँग बिन्द्राबन, संग अजुध्या जा पूजन-इसनान करें।।
सोच राजहट बोले, कोऊ हो ना सकत किसिन जैसो।
रामचरित नइँ कभउँ हो सकत सिरी किसिन मौंहन जैसो।।१२।।

किसिन नाम लेतन खन तौ मन मोर नच उठत है राजन।
उनकी परम रास लीला दरसन कों हरदम हुड़कत मन।।
महाराज बोले, रानी कों गुरूदेव समजाओ तौ।
और महूरत बिन्द्रावन जाबे को देख बताओ तौ।।१३।।

"जतन करत हैं" कहकें गुरुवर तुरत उठे रनवास गये।
गुरुवर कों प्रनाम कर मधुकर साह सोच में डूब गये।।
राम साधना निरत हतीं जब गुरुवर रानी-म्हैल गये।
उठ कमला सतकार करो ऊँचे आसन गुरु बैठ गये।।१४।।

चरन ब्यास जू के छूकें आसीरबाद सुभ लेतीं हैं।
अपने मन की बात गुरूजी सें म्हाँरानी कैतीं हैं।।
अन्तिम दरस अपुन के भगवन! हमनें आज करे मानो।
सदा-सदा कों जा रइ कमला, अब न ओरछा के मानो।।१५।।

बोले गुरुवर पतनी पति सें रूठै जौ तौ ठीक नहीं।
पती देवता है ऊकौ, का कथा सती की ग्यात नहीं।।
रामायन तुम रोज बाँचतीं, सीता माँ को चरित पढ़ो।
तोऊ ऐसीं बातें हो रइँ, तौ ऊमें का सार कढ़ो।।१६।।

उन्नेंई तौ आज रामभक्ता को त्याग करो भगवन्!
अपुनइँ कव गुरुवर! जबरइँ कैसें जावैं हम बिन्द्रावन!!
राम उपासक के लानें गुरुदेव कहो का धरौ उतै।
रस सिंगार न मोइ साधना अबध छोड़ हम जायँ कितै!!१७।।

बोले गुरुवर राज लच्छमी कौ ना करत त्याग कोऊ।
छोड़ ओरछा जिन जाओ आधो है सब तुमाव सोऊ।।
कमला! तुमनें सब साँसी कइ, कौन अलौनी बात भई।
बाल रूप में राम साधना की अति नौंनी बात कई।।१८।।

किसिन साधना, राम साधना के समान कैसें हुइऐ।
कैसें माखन चोर बड़ो साकेत बिहारी सें हुइऐ।।
रानी बोलीं बे कै रए ते 'उत्तम पुरुस' राम केबल।
सई कात हैं पुरुसोत्तम भव नाव राम को ई के बल।।१६।।

गुरू ब्यास जू बोले, पूरन ब्रम्ह होत है परमेसुर।
जो ब्रम्हान्डन को नायक है सबसें पूज्य बौइ ईसुर।।
जीके हियैं प्रैंम है आँखें निरबिकार होतीं जीकीं।
आजउँ दरसन पाउत है बौ, ब्याधाँ सब मिटतीं ऊकीं।।२०।।

जो जन जैसें भजै उऐ ईसुर तैसेई रूप मिलैं।
जिनकों नइँ परतीत होत बे जन रत कोरे हाँत मलैं।।
मानै कठिन, कठिन हैं, मानै सरल, सरल बाके लानें।
'नहीं', कहै तो 'नहीं', कहै जो 'है' तो 'है' ऊके लानें।।२१।।

साँचे प्रैंम पुकारै मन, साँचो सिरधा बिसवास रहै।
देर न लगत प्रगट होबे में चाँयँ कछू संसार कहै।।
बोली रानी, बाल राम उर चोर किसिन में नइँ अन्तर।
एकइ के अनगिन चरित्र हैं, अलग-अलग भ्यासत गुरुवर!!२२।।

कीसें कैसो द्वेस-ईरखा जब सब है एकइ माया।
उऐ बौइ उम्दा जीके मन भाबै जो सरूप काया।।
तुमनें बिल्कुल सई कई सुन मन प्रसन्न भव म्हाँरानी।
पक्छपात राजा के मन को कही जा सकत नादानी।।२३।।

सुयम किसिन नें कइ गीता में, "लोग मनुज मोकों जानें।
हमें मनुज कयँ पै न प्रानियन के स्वामी हमकों जानें।।
बिस्नू सूरज चन्दा सिव सब, सिगई स्रिस्टी में हम हैं।
सबइ कछू जन्न हम हैं तौ फिर कहो न कहाँ काए हम हैं"।।२४।।

म्हाँरानी तुरतइँ बोलीं, गीता में का जउ बात कही।
प्रभू राम के दरस मिल सकत, कौन बिधी सें कान्ह! कही।।
अबसइँ तुमें मिल सकत दरसन गीतामें सब साफ लिखी।
सिरी किसिन नें कइ अरजुन सें, पै सबकों जा बात लिखी।।२५।।

"जो देखत सब जगाँ मोय प्रानिन में आत्मरूप जानै।
ईसुर में जग कों मानै उर मोय सबइ में पैंचानै।।
ऊके लानें कहूँ नइँ छिपौ", जो जन ऐसें मानत हैं।
ऐसी सच्ची प्रैंम अबस्था बाले दरसन पाउत हैं।।२६।।

चित्रकूट उर अबध राम, ब्रज में श्री किसिन रूप मानो।
कासी में सिव रूप रहत, साच्छात उतै हैं पैंचानो।।
बाल रूप में राम अजुध्या में हैं का गुरुदेव कहो ?
गुरु बोले, निस्चित हैं पै है गुप्त बात निस्चिन्त रहो।।२७।।

अमित भक्ति उर चाह सही बिसवास हियैं हो जात उदय।
सच्ची टेर जात नइँ खाली, ईस क्रिपा रबि होत उदय।।
असमंजस की दसा धरम संकट सें प्रभु! उध्धार करो।
कमला बोली, गुरुवर! आज्ञा दो बिनती सुइकार करो।।२८।।

बूझी गुरु नें, पतिनें तुमसें का कौनउँ कटु बैंन कहे ?
"बाल राम लैकेंइँ आइओ", ई तरेर कें नैंन कहे।।
कहें ब्यास, रामायन जुग में जो दण्डकबन परिसीमा।
बर्तमान बुन्देलखण्ड की बौइ मान लइ गइ सीमा।।२९।।

रामचन्द्र आयेते ऊ बुन्देली दण्डक तप बन में।
फिर सें बे बुन्देलखण्ड में आ रए ई ध्यासत मंन में।।
गुरुवर! मोय अबध पौंचा दो, दो आसीस लच्छ पावें।
साक्छात उन बाल राम कों लैकेंई प्रभु! हम आवें।।३०।।

रानी बोलीं, भौत कठिन है साक्छात दरसन करबौ।
ऐसो हो न सको तब तौ निश्चित मानो गुरुवर! मरबौ।।
अरी ओरछा म्हाँरानी! ई अब लों कोउ न कर पाओ।
भगवन कों साक्छात रूप में संग न कोऊ ल्या पाओ।।३१।।

मन-बच-करम लाज ईसुर कों जो हमाइ प्यारी होबै।
रानी नें कइ, अबसइँ आहैं उतै चाँयँ जैसी होबै।।
तुरत गनेस कुँवरि नें गुरुवर चरन सीस धर नमन करो।
गुरुवर ब्यास देव नें मन-मन प्रभु रघुवर को ध्यान धरो।।३२।।

सुफल मनोरथ होबै ईकौ, भगवन! लाज राख लिइओ।
पावन करबे भूमि ओरछा, अइओ ओ राघव! अइओ।।
सफल काम होबे की गुरुवर नें मन सें आसीस दई।
दिना दूसरे रानी की यात्रा की सब तय बात भई।।३३।।

-संबत सोला.... तीस बिक्रमी तिथि असाढ़ सुक्ला द्वादस।
सुभ है जाओ, शिवशंकर को पैलें धरिओ ध्यान अबस।।
सोमवार को दिन है, पैलें जाकें उनके दरस करो।
उनकी पाकें क्रपा लक्छ के लानें आँगूँ कदम धरो।।३४।।

करौ बौइ रानी नें तुरतइँ गुरु नें जो आग्या दइ ती।
लै सिव सें बरदान अजुध्या नगरी कों रानी गइ ती।।
मधुकर साह भूप बिन्द्रावन किसिन दरस करबे कों गए।
बानी भइ नभ सें जो नृप नें सुनी और मन हरसित भए।।३५।।

"रानी कों बरदान मिलो है सिव को सो धर ध्यान सुनो।
ऊकी मनोकामना पूरी हुइऐ, यह बरदान गुनो।।
भेद और मन की संका गइ राजा के मन हरस भओ।
भगति सराही म्हँारानी की, मन आनँद रस बरस गओ।।३६।।

लछमन किला पास सरजू तट रानी तप में लीन भई।
खाबौ-सौबौ-सुख साधन सब त्याग राम लौलीन भई।।
लगभग एक महीना बीतौ दरस राम के नइँ पाये।
बारा बजें रात कें इकदिन सब संकल्प याद आये।।३७।।

सोचन लगीं महारानी है राम-दरस संजोग नहीं।
हममें है ना राग-सक्ति उर हम भक्ती के जोग नहीं।।
मन उदास अति दुखी सोच रइँ, हाय संकलप मिथ्या भव।
मौं दिखायँ का जाय ओरछा, हाय रामजू जौ का भव!!३८।।

लै जाबैं हम किये ओरछा, दरसन तक नइँ मिल पाये।
प्रन न पलो तौ दीन और दुनिया न कितउँ के रह पाये।।
हा भगवान रामराजा! काया तुमाइ तुमकों अरपित।
टूटौ सबइ भरोसौ हम रयँ तौ प्रभु! कीके बल जीवित।।३६।।

खम्भफार प्रगटे ते हिरनाकुस नें जब खंजर तानो।
बरत अबा सें बचा बिलइया के बच्चा लए जग जानो।।
भगत सुतीच्छन–सबरी पै कर किरपा उनके थान गये।
भगती ना उनसी हमाइ सो भूल हमें भगवान! गये।।४०।।

आसा है न काउ की तुम बिन नाथ! ओरछै नइँ जैहैं।।
दरस न दए तौ इतइँ कूँद सरजू में हम प्रानइँ दैहैं।।
धार बही अँसुअन की रानी परम प्रैंम में डूब गई।
ध्यान धरें मन सिरीराम कोअपनो आपा भूल गई।।४१।।

पै दरसन नइँ भये राम के तौ मन भौत उदास भई।
ठाड़ी भइ बोली, हमाइ अब भगवन! पूरी साँस भई।।
आसा रइ न काउ की रोउत रानी जल में कूँद गई।
पै ना डूबी और ना मरी जल नें बाहर फैंक दई।।४२।।

तीन बेर कूँदी पै तीनउँ बेर किनारें जा पौंची।
चौथी बेर आत्महत्या कों बीच धार में जा पौंची।।
चमतकार भव बीच धार में बाल राम राजा प्रगटे।
साकछात दरसन दै रानी की गोदी में आ बैठे।।४३।।

बोले प्रभु, बरदान माँग लो, जो चाहो सो सब दैहैं।
तुम अनन्न भक्ता, प्रसन्न हम, माँगो मन बाँछित दैहैं।।
खो गइ रूप माधुरी में चौंकी सुन कें प्रभु की बानी।
करकें नमन करत है इस्तुति हाँत जोर कें म्हाँरानी।।४४।।

नाथ सकल बिरम्हाण्ड ईस साकेत बिहारी परमेसुर ।
सिगइ स्रिस्टि रचना तुमाइ हर प्रानी में तुम सरबेसुर।।
तुमसें अलग न कोऊ, काऊ सें न अलग हौ तुम भगवन!
तुमकों पा का सेस बचो जो माँगै मूरख परमात्मंन!!४५।।

जो कछु हमें चाँउँनें सो तौ बिनइँ कहें दै दव तुमनें।
फिरउँ चाउँनें है जो ईसुर सो तुम जानत का कहनें।।
मन नइँ मानत, कहैं देत सो, बिनती सुनो रामराजा।
साकछात प्रभु! बाल रूप सँग चलो ओरछा म्हाँराजा।।४६।।

बिन लिबायँ नइँ जायँ ओरछै चाँयें प्रान भलें जाबैं।
स्वामी ऊ बुन्देलखण्ड भू पै हम नित दरसन पाबैं।।
छिमा करो पतिदेव सैत हम सब हैं प्रानी अग्यानी।
मनोकामना पूरी कर दो, छिमा करो सब नादानी।।४७।।

बालक रूप रामराजा नें 'एवमस्तु' कह बात कही।
भगतन के बस में हैं हम तौ उर चल हैं भी साथ सही।।
तीन बचन कमला! हमाए सुइकार तुमें करनें पर हैं।
तभइँ इतै सें भूमि ओरछा के लानें संगै चल हैं।।४८।।

पैलो है, नच्छत्र पुख्ख मेंई पूरी जात्रा हुइऐ।
उतई रुकनें परहै जाँ भी खतम पुख्ख बेला हुइऐ।।
बौई नखत आय जब फिरसें तबइँ उतै प्रस्तान हुऐ।
अबध-ओरछा पूरी जात्रा को ना अन्य बिकल्प हुऐ।।४६।।

दूजौ बचन, समूची जात्रा साधु मण्डली के सँग हो।
जो न काउ बाहन सें हुइऐ सिगई जात्रा पैदल हो।।
बचन तीसरौ, तुम जाकें सबसें पैलें जाँ पधराओ।
ठौर छोड़ बौ कितउँ न जैहैं, भवन चाँयँ जाँ बनवाओ।।५०।।

नाम 'रामराजा' हमाव रैहै, न और कौनउँ हुइऐ।
जौइ रहै बिख्यात, बचन दो, ऐसोई सब कछु हुइऐ।।
तबइँ गनेसकुँवरि रानी नें हाँत जोर जे बचन कहे।
बचन हमें सुइकार अपुन के जो भी हे भगवान! कहे।।५१।।

ओरछेस म्हाँराजा मधुकर अपँए महल में सो रए ते।
बालक रूप रामराजा उनसें सपने में कै रए ते।।
हम आ रए हैं नगर ओरछा मन्दिर जल्दी बनवाओ।
साधु मण्डली सैत अजुध्धा आकें हमें लिबा जाओ।।५२।।

बालक रूप रामराजा सपने में किसिन रूप आये।
दोऊ एकइ हैं, दरसन कर राजा भौतइँ हरसाये।।
मन्दिर को निरमान शुरु कर भगत जनन सँग अबध गये।
पौंच राम के किसिन रूप में दरसन करकें मगन भये।।५३।।

भव अटूट विश्वास रामराजा कों गोद उठाय लओ।
फूले नईं समाने नृप नें आपा अपँव बिसार दओ।।
गोदी में लै नचे ऐंन नैंनन सें आनँद नीर बहै।
राजा-रानी के अन्तस को हर्स कोउ मतिधीर कहै।।५४।।

संबत सोला तीस बिक्रमी तिथि पूनों साउँन सुकला।
पुख्ख नछत्र अबध सें चल भए गोद लयें अपने कमला।।
सोला सौ इकतीस बिक्रमी चैत सुकुल नौंमी तिथ कों।
आठ मास सत्ताइस दिन में पौंच गये मंगल दिन कों।।५५।।

सिरी रामराजा जू जा रानी के महल बिराज गये।
बनवाओ गव तो जो मन्दिर, फिर न उतै रघुनाथ गये।।
बौ रनिबास बन गओ मन्दिर, उरछा तीरथ धाम बनो।
धन्न-धन्न बुन्देलखण्ड जो फिर सें राघव धाम बनो।।५६।।

धन्न-धन्न हरदौल देव ऊ कुल में तुमनें जनम लओ।
जी कुल कों कमला-मधुकर नें भक्ती रस भरपूर दओ।।
बौइ खून हरदौल पौत्र में, काए न होय सदाचारी।
क्रपा रामराजा की जिनपै काए न होबैं बलधारी।।५७।।

बचपन सें हरदौल देव नें बना लई ती दिनचरिया।
दरस रामराजा के पैलें फिर कौनउँ जीवनकिरिया।।
उनकी किरपा पाकें भए हरदौल देव समरथसाली।
अति निरभीक-सुयोग्य और छोटी उम्मर में बलसाली।।५८।।

❋ दोहा ❋

प्रैंम और सिरधा सहित जो जन मन्दिर जात।
करत रामराजा दरस सो सब कछु पा जात।।४।।
चलो-चलो उतई चलैं जहाँ बसत हरदौल।
पावन जाँ की भूमि है, सक्तिधाम अनमोल।।५।।

—•—

सर्ग : चार
निरभीक कुँअर हरदौल

दोहा

नगर ओरछा महल में पले लाल हरदौल।।
संसकार उत्तम मिले धरम-करम अनमोल।।१।।
भूपति मधुकर साह के पूत बीरसिंह देव।
उनके सुत हरदौल हैं जीपै सबको नेव।।२।।
छत्रीकुल जनमे-पले सिच्छा बइ अनुसार।
बालपनइँ सें रए चतुर भगतबीज औतार।।३।।

छन्द

यार दोसतन सँग बैठे ते बय किसोर हरदौल कुँअर।
करैं ग्यान चरचा आपुस में जीवन के हर पैलू पर।।
"चलत रहै बोई जीवन है, बिना गती कों म्रत मानो।
जितनी गती तेज हुइयै जीवन उतनो उन्नत मानो।।१।।
गति को होबै लच्छ सई बस तभइँ सारथक होत गती।
नइँ तौ भटके नाबिक जैसी मानो जू! नासमझ मती।।
प्रक्रति और ईसुर को सास्वत है अकाट्ट तौ जौइ नियम।
जीवन मोल समज में आबै तबइँ पलत हैं सब सइँयम।।२।।"
ई तरियाँ बे जीवन जात्रा पै कछु बातें कर रए ते।
और अन्त में सार रूप बे ऐसीं बातें कह रए ते।।
बोले, "सबइ जनन कों अपनो असली रूप समज आबै।
तौ फिर बिस्व और बिस्बम्भर कों नर सहज समज जाबै।।३।।

जत्री कों जीवन यात्रा को सई ग्यान जो हो पावै।
तौ फिर ऊकी जीवन यात्रा कहूँ न दुखकर रै जावै।"।
तर्क न हो पाओ गोस्ठी में, आ गइ इक आफत न्यारी।
नगर ओरछा की पिरजा में हलाकम्प मच गव भारी।।४।।

हल्ला सुन हरदौल और उनके संगी भए चौकन्ना।
का आफत आई, सोचत, जो भगदड़ मच गइ घरघन्ना।।
धरमपाल जइ बीच दौर कें आओ स्वाँसा फूल गई।
बूझी तब हरदौल कुँवर नें धरम! कहो का बात भई।।५।।

साँस थाम कत, कुँवर साब! भौतइँ अचरज की बात भई।
उऐ देख़बे उमड़ परी है नगरी की पिरजा सिगई।।
भौत बड़ो बनराज आ गओ साब! नगर चिड़ियाघर में।
पैलें ऐसो कभउँ न देखो हमनें अपनी उम्मर में।।६।।

बौइ हुलास भरो हल्ला है चलो देखबे जू अपुनउँ।
भीड़ और बौ सेर देखबे जोग दोउअउ हैं साँचउँ।
चलो रामराजा मन्दिर मैदान धरो है सिंग्घ जबर।
पिंजरा में है बन्द दहाड़ैं मार रहो है सत्त खबर।।७।।

बढ़त देखबे कों जनता, पै सुन दहाड़ सब भाग परत।
कँपत करेजौ भै के मारें, दौर घरन में जाय घुसत।।
बस इत्ती सी बात बताबे में तुमाइ दम फूल गई।
सेर बन्द तोऊ जनता सब भै में आपा भूल रई।।८।।

सुन हरदौल दिमान साब नें धरम गोसठी खतम करी।
मिन्त मंडली संग गये जाँ हती प्रजा आतंक भरी।।
पिंजरा बन्द सिंग्घ को है जाँ बौ बिसाल मैंदान हतो।
सेर पकर जो ल्याए सिकारी उनकौ भी आतंक हतो।।६।।

अपँई हिम्मत उर करतब बे बढ़ा-चढ़ा कें कै रए ते।
कर डरावनीं बातें जनता में भै पैदा कर रए ते।।
जनतउ भै अचरज में डूबी बाँधै पुल तारीफन के।
सुनैं सिकारी मद में बूड़े, बढ़े भाव भौतइँ उनके।।१०।।

मुख्ख शिकारी अनूपसिंग तौ ठाड़ो तो मद में अकड़ो।
पौंच गये हरदौल कुँवर जाँ हतो सेर जो नव पकरो।।
बोले बन सें पकर एक पिंजरा में डार ल्याए काका!
बौउ एक राजा है, ऊयै खुलो न काए ल्याए काका!!११।।

कोऊ और बूझतो तौ अबसईं बौ तुरत भड़क जातो।
कैसोऊ बल बालो होतो ई कुतर्क नइँ कर पातो।।
भड़क अनूप सिकारी मारा-मारी तक पै आ जातो।
पै सुन ऐसी बात घूँट बिस जैसो पी नइँ रै जातो।।१२।।

पै हरदौल कुँवर कों देखौ तो न कछू बौ कर पाओ।
फिरउँ बिंग बानी में बोलो, मनईं मन बौ अनख्याओ।।
अभै उमर बारी है बेटा! बनउँ न देखे हैं तुमनें।
का बनराज होत का जानो, फूलबाग देखे तुमनें।।१३।।

अभै 'अजुध्या' या सिकार बन 'लंका' देखे नइँ तुमनें।
बनवाये जो राज्य ओरछा में नरपती बीरसिंग नें।।
कुँवर! अभै बच्चा हौ, पैली बेर सिंग्घ देखो हुइये।
तइसें कर रए ऐसीं बातें, ग्यात न बल ऊकौ हुइये।।१४।।

बोले कुँवर कि सिंग्घ साब! तुमनें जा बात साँचियइ कइ।
पैली बेर सिंग्घ देखो है, पै हम जानत सच एकइ।।
सेर सेर सें कभउँ न उरझत और कभउँ नइँ देख भगै।
चाँयें जब जा परख लिओ, कक्कू! जो मौका कभउँ लगै।।१५।।

कुँवर साब! हो सकत सई पै है बिसवास न मो मन में।
धरती-आसमान को अन्तर होत सिंग्घ उर मानव में।।
सिंग्घ साब! हम बात आदमी और सेर कीअइ कै रए।
आतम बल-बिबेक के कारन सबल आदमीं कों कै रए।।१६।।

बात उदूली, हँस अनूप बोलौ, 'कइ ना, तुम बच्चा हौ'।
सेर और ऊकौ बल तुम का जानो, अल्लर बच्चा हौ।।
जेई बातन बीच पौंच गए पिंजरा नों हरदौल कुँवर।
जहाँ दहाड़ें लगा रओ तो ऊमें ठाड़ो सेर सतर।।१७।।

देख अनूप कह उठो, बेटा! ढिंगा सेर के जिन जाओ।
तुमें सेर खा लैहै, छोपौ हमपै आहै, रुक जाओ।।
म्हाँराजा मरवैंहैं हमकों, सो जिन ऐसो काम करो।
ढिंगा सेर के जिन जाओ, बस जा बिन्ती सुइकार करो।।१८।।

सुनी न मानी बात कुँवर नें, पास सिंग्घ के पौंच गये।
जनता ठाड़ी सिसयानी सी, सबई के उड़ होस गये।।
द्वारो खोल दओ पिंजरा को और बगल जा ठाड़े भए।
ई देखत खन भै के मारैं सबइ जने भग ठाड़े भए।।१९।।

तुर्त-फुर्त मैदान हो गओ खाली रव न कोउ अन्दर।
दोइ जीव अब हते उतै, इक वय किसोर उर सेर जबर।।
भारी भूँकौ-खीजौ-रूठौ बौ बनराज कढ़ौ बाहर।
बौ भौतइँ खूँखार दहाड़ो, पिंजरा के द्वारें आकर।।२०।।

सामूँ एक किसोर सौम्म-सालीन दिखाई दव ऊऐ।
उमर हती दस साल, देख बालक कों अचरज भव ऊऐ।।
देखन लगो एकटक नाहर उन हरदौल साहसी कों।
चल हरदौल ढिंगा आये, भै लगो न बालक छत्री कों।।२१।।

एक दूसरे नें आँखन में आँखें डारीं प्यार भरी।
लगौ कि उन दोऊ बीरन नें गुपचुप कौनउँ बात करी।।
सेर अहिंसक बनो, सान्त भोलो-भालो सो ठाड़ो रव।
ना दहाड़ ना आँख गरम, को कै देबै कैसें का भव।।२२।।

राजमहल उर नगर सिगयँ मच हलाकम्प गव तो भारी।
देखें ऊँचे चढ़े दूर सें भौंचक्के सब नर-नारी।।
भूँकौ सिंग्घ, सिकार सामनूँ, नइँ सम्भव जिन्दा बच जय!
पै, गए औरउ ढिंगा कुँवर जू मन नइँ कौनउँ भै-बिसमय।।२३।।

ठाड़े जबर सेर के सिर पै फेर रहे ते वे निज कर।
और दुलारौ-थपथपाव तो धन्न-धन्न निरभीक कुँअर।।
सिहर सिहर कें रौंम फुला कें जा पिंजरा में बैठ गओ।
भगो-भगो आओ अनूपसिंग थोरो सो आ ठैर गओ।।२४।।

खुलो देख पिंजरा को द्वारो मन अनूपसिंग भौत डरो।
मुस्काकें हरदौल कुँवर नें द्वारो ऊकौ बन्द करो।।
तुरतइँ जा अनूप नें ऊपै कुलुप करारौ डार दओ।
तब जी में जी आओ ऊकें, कुँवर साब कों मान गओ।।२५।।

मित्तमंडली आ गइ फिर सें सबई मिलकें हरसाये।
धन्न-धन्न कै-कै कें सबनें कुँवर साब के जस गाये।।
सबइ हँसत-खेलत भए फिर सें फूलबाग कों लौट गये।
भव सिकारियन को मद सीरौ उनकी हिम्मत मान गये।।२६।।

बीरसिंग्घ म्हाँराज पिता हरदौल कुँवर जू के ऊ दिन।
हते न नगर ओरछा में, जब लौटे भव तो अचरज सुन।।
बुला कुँवर कों म्हाँराजा नें छाती सें चिपकाय लओ।
हाँत फेर बोले बेटा! घटना सुन अचरज मोय भओ।।२७।।

डर न सेर को लगो तुमें ऊऐ इक्काई पकर लओ।
कोउ न रक्छक हतो संग में कैसें ई सब गजब भओ।।
"मन के हारैं हार" और "है मन के जीतें जीत" सदाँ।
हम डिराय जो गये मौंत सें तौ चारउ लँग मौत सदाँ।।२८।।

भै की मौंत पाय प्रानीं कों कमजोरी घेरेंइँ रहत।
साहस और धैर के आँगूं मौंत होत आकें नत मत।।
ई सब मन की पिरकिरिया पै निरभर है म्हाँराज पिता!
हम कितेक भैभीत और निरभीक होत सब ग्यात पिता!!२९।।

मनुजन सें है तेज मनोबिग्यान जंगली पसुअन को।
भै पै और निडरता पै निरभर पूरौ जीवन उनको।।
जौइ मनोबिग्यान रहो है कल जो तात! भई घटना।
ना जादू ना टोंना कौनउँ ना कौनउँ तान्त्रिक रचना।।३०।।

पूरी तरियाँ समज गओ तो सेर मिला आँखें हमसें।
कौनउँ भै या हानी की संका ना रइ ऊऐ हमसें।।
बस बौ मीत बन गओ अपनो हमनें ऊऐ प्यार करो।
नम्र भओ बैठो पिंजरा में मेव नेव सुइकार करो।।३१।।

बेटा! 'इतनो निरभै-निरमोही होबौ ना साधारन।
तुम जैसे निरभै तौ जग में बिरले योगी साधक जन'।।
'साँचो एक ब्रम्ह है झूँटी मानो सिगई संसारी।
महाराज ईमें का अपनो सबई एक जीवधारी'।।३२।।

सबइ सभासद बालक की कर-कर बातें जस गाउ्न लगे।
दसइ साल के कुँवर देव कों दैंन भौत सम्मान लगे।।
पिता बीरसिंग उर सबनें हरदौल कुँअर को मान करो।
दइ दस लाख रुपए की निज जागीर, तुरत ऐलान करो।।३३।।

मुस्क्याकें कर नमन पिता कों राजमहल हरदौल गये।
पै जन साधारन उर चतुरन की चरचा में छाय गये।।
उनके साहस-धीर-ग्यान की चरचा घर-घर पौंच गई।
नगर ओरछा का, सिगये बुन्देलखण्ड में फैल गई।।३४।।

❋ दोहा ❋

घर-घर में जस फैल गव, सेर हतो बौ काल।
सबा सेर अपनो कढ़ो, बौ गुमान को लाल।।४।।
सेर और हरदौल की घटना है इक सीक।
ओज बालकन में भरत, ई साहस की लीक।।५।।
घर-घर अब माता-पिता, लरकन कों समजाउ्त।
सेर और हरदौल की घटना उनें सुनाउ्त।।६।।

—•—

सर्ग : पाँच

साउन तीज पै झूला

✹ दोहा ✹

कुँअर लड़ैतौ सबइ को बुन्देला हरदौल।
धन्न कूँख जीनें जनो ऐसो सुत अनमोल।।१।।
सदाचार सदगुन सदन बे हरदौल किसोर।
लरकन के आदर्स हैं, गली-गली है सोर।।२।।
पिता बीरसिंग के समै रए हरदौल सुतन्त्र।
पै सीखे ते बे सबइ राज-काज के मंत्र।।३।।
पिता बीरसिंह जू हते हर सें भौत प्रसन्न।
आगम सें निसचिन्त भए, सुत कारन भए धन्न।।४।।

✹ छन्द ✹

संबत सोला सौ चौरासी बीरसिंग्घ जू देव प्रथम।
गए परलोक सिधार देव जू पूरी कर स्वाँसा अन्तिम।।
सोक सिन्धु में डूब गओ बुन्देलखण्ड भर जा सुनकें।
सब चिन्तित, आसीन हुऐ को गद्दी पै राजा बनकें।।१।।
पहली रानी सें जैठौ सुत भव जुझारसिंग बलधारी।
और दूसरी रानी सें जेठौ हरदौल बलंकारी।।
इनमें जेठे सुत जुझारसिंग हते राज्य के अधिकारी।
पै नृप नें मरबे के पैलें गुप्त बात इक लिख डारी।।२।।
बाद हमाए ओरछा गद्दी सुत हरदौल देव पाबै।
कारन, बौई जोग्ग राज के, सनद मेइ पाली जाबै।।
जेठे पुत्र जुझारसींग जो कछु ईमें इतराज करैं।
तौ दस लाख रुपए की र्‌यासत हक्क अलग सें प्राप्त करैं।।३।।

महाराज जू देव आचरन उर सुभाव सें खिन्न रहे।
तइसें बे जुझार जू गद्दी के अधिकार बिहीन रहे।।
जइ कारन जुहार जू मन में द्वेस भाव पालैं रत ते।
और बिरोधी सड़जंत्रन में रुची अपँईं बे राखत ते।।४।।

लिखी सनद के पालन में ऐलान राज्य में कर दव गव।
भए हरदौल ओरछा सासक पै उनकों बौ मान्न न भव।।
सुत दिमान हरदौल बीर नें सनद न ऊ सुइकार करी।
परम्परा पाली स्वबंस की घरी न एकउ देर करी।।५।।

जेठे भइया जुझार जू कों तुरत भौत सन्मान दओ।
और ओरछा के सिंग्घासन पै उनकों बैठार दओ।।
अब बुन्देला जुझारसिंग ज़ू बने ओरछा के राजा।
साहज़हाँ नें तुरत करो सुइकार उतै को म्हाँराजा।।६।।

नृप जुझार सिंग कों न ओरछा रैबौ लगत हतो नींकौ।
उनें आगरा उर दिल्ली में लगन लगो रैबौ नींकौ।।
मुगलन के दरबार उनें भा रए ते उर सुख दै रए ते।
ओरछेस बन कछू दिनन के बाद आगरा बे गए ते।।७।।

राज ओरछा को भइया हरदौल देवं कों सौंप गये।
जन-जन के प्यारे हरदौलै सौंप राज्य अधिकार गये।।
अलप आयु, पै चतुर और गम्भीर साहसी बलधारी।
राज-काज में निपुन और पिरजा उनकों प्रानन प्यारी।।८।।

पिरजउ उनके लानें जीबे-मरबे कों तइयार सदा।
उनें आतमा सें चाहै उर देबै आदर नेव मुदा।।
उनके फैले जस सें उनकी उम्मर के संगी कइयक।
करें ईरखा जो उनसें बे रहैं संग जौं खलनायक।।६।।

राजदण्ड दै पिरजा पै अधिकार न कभउँ जताउत ते।
बरन प्रजा में प्रेंम बाँट उनके हिय में बस जाउतते।।
नेव-धरम-सक्ती कौ संगम तीर्थ ओरछा धाम बनो।
भव बिख्यात सिगए भारत में दरसजोग इस्थान बनो।।१०।।

बने कारबाहक नरेस हरदौल जुझार सिंग्घ नृप के।
सब अधिकार सैत कर रए ते राजकाज बे सब हुन के।।
उन्निस साल उमर में ई आ गओ भार ऊपर उनके।
बड़ी निपुनता सें सँमार रए ते सब काम प्रसासन के।।११।।

निधन पिता जू को संबंत चौरासी मेंई हो गव तो।
उनके सुत हरदौल देव को तौतक नई ब्याव भव तो।।
संबत सोरा सौ पच्चासी कुँवर देव को ब्याव भओ।
दुर्गापुर के लखन सिंग्घ परमार सुता के साथ भओ।।१२।।

नाव हिमांचल कुँवरि, हती जो भौत चतुर सालीन सुघर।
तैसेई हरदौल बुँदेला परम बीर तन मन सुन्दर।।
हर की माइ गुमानकुँवरि, भइया जुझार, परिवारी जन।
लोकरीत बुन्देली ढँग सें करो ब्याव मिल हरसित मन।।१३।।

राजघरन की रीत-नीत सें भये सगुन कारज सबई।
दुर्गापुर (दतिया) के लानें एक बिसाल बरात गई।।
हाँती पै हरदौल देव दूला अति नौंने लग रए ते।
सजे-धजे हाँती पै दूल्हा राजा भौतइँ फब रए ते।।१४।।

चमचमात हीरा-मौंतिन बाले जामा में जँच रए ते।
कानन कुण्डल गरैं हार चमचम आभूसन कर रए ते।।
सुघर-छबीले मुखमण्डल पै मुच्छ रेख मुख बीरोचित।
पगड़ी-मौर भौतई नौंनी मुतियन लर कलगी सोभित।।१५।।

फेंटा धवल रेसमी उर कम्मर कटार लग रइ प्यारी।
रतन जड़ी जूतीं पाँउन में सिर ऊपर छतरी न्यारी।।
बरनन में नइँ आबै दूला की छबि, सज्जा उर सुसमा।
मंथर गति गज चलै, न कातन बनै बरातिन की गरिमा।।१६।।

घुड़सबार रक्छक जोधा हतयार लैस सँग चल रए ते।
हाँती, घोड़ा, रथ, पैदल, चतुरंगी सैनिक लग रए ते।।
भाँत-भाँत के बाजे बज रए तोपैं गोला छूट रहे।
नगर निबासी दौर-दौर सोभा बरात की देख रहे।।१७।।

नगर सजावट, जनवासो, जलपान आदि दव स्वाद भरो।
लाखन सिंग जू नें बरात को जथाजोग पिरबन्ध करो।।
जगाँ–जगाँ रस्ता में स्वागत द्वार भूप नें बनवाये।
आदर सैत बरातीयन कों अपँए दुर्ग में बुलवाये।।१८।।

भइ बरात की अगवानी भौतइँ स्वागत सतकार भओ।
बाजे–गाजे सें बरात गइ बर को टीकाचार भओ।।
छज्जन चढ़ी निहारैं तिरियाँ दूला राजा की सुसमा।
मौं न पिरात सराहत उनको, नौंनो हेमा को बलमा।।१६।।

कैउ देखतइ रै गईं दूल्हे अपँए भाग्ग सें तौल रईं।
कछु गईं हेमै लिबा ल्याईं दूल्हे कर ओट दिखाय रईं।।
टीका पै देखौ हेमा नें चाँउर उनपै फैंक दये।
मानो अपँईं राजी कैबे कों तंदुल पौंचाय दये।।२०।।

दूला के नैना दुलहिन के नैंनन सें जा टकराये।
नैंनन सें नैना कछु झट्टइँ कह सुन कें बापस आये।।
का कइ नैंनन नें नैंनन सें बे बातें बेई जानें।
इक मुस्क्याने, एक लजाने जादाँ कछुअउ का कानें।।२१।।

गाबैं मंगल गीत मनोहर बुन्देली बानी तिरियाँ।
साखोच्चार उचारैं पंडित संस्कृत में नौंनी तरियाँ।।
टीका, भाँउर, कुँअर कलेऊ, लोकरीत सम्पन्न भये।
पंगत पै जौनारें–गारीं सुनकें सब पिरसन्न भये।।२२।।

जो ना बैसें कै पाईं सो गारिन में गा कै डारीं।
लरका बारे ज्वान ब्रध्ध सबकों दईं हन–हन कें गारीं।।
ऐसौ रस, अलगईं मिठास, रईं गारीं बे इतेक नीकीं।
बन्न–बन्न कीं धरीं मिठाईं पातर बाली भईं फीकीं।।२३।।

नजर भेंट दइ जथाजोग सबरेइ बरात पाउँनिन कों।
छमा–याचना कर समधी नें बिदा करो मैंमानन कों।।
धूम–धाम सें ब्याव हिमांचल कुँवरि संग हरदौल भओ।
भींजी पलकन भई बिदाई सिगव ब्याव सानंद भओ।।२४।।

बिन्नूँ हेमा मात-पिता सें चिपक रोइ जब बिदा भई।
भेंटी सखी-सहेलिन सें नम आँखिन सबसें बिछुड़ रई।।
पती संग बौ गई ओरछा लाखन सिंग की सुकुमारी।
बधू आगमन की महलन में सबइ भई ती तइयारी।।२५।।

बर-दुलहिन को नगर ओरछा में सन्मान भओ भारी।
भइँ बुन्देली रीत महल में बर-दुलहिन रसमें सारी।।
नई नबेली सुघर बधू पाकें सबई कों हरस भओ।
भौजी चम्पावती और सासू सबई नें नेव दओ।।२६।।

हेमा उर हरदौल एक सँग भौत प्रेंम सें रान लगे।
देव न निज करतब भूले ते राज-काज में आन लगे।।
'अली कली सौं बिंधौ' बात हरदौल संग ना रंच रई।
अति सुन्दर उर समजदार पतनी नें मानो सक्ति दई।।२७।।

भओ ब्याव पै पिता बीरसिंग जू जा दुनिया में न हते।
जी कारन हरदौल व उनकी माँ न भौत पिरसन्न हते।।
उतै पिता को सोक इतै न्रप मुगलन को दौंथर भारी।
तउपै भइया जू जुझारसिंग की मुगलन सँग लाचारी।।२८।।

सब हरदौल झेल रए ते, मानी उननें न हार नेंकउँ।
पिरजा को सुख, देस धरम रक्छा सें रए न बिमुख नेंकउँ।।
साउन को मइँना आ गव बुन्देलखण्ड में आ बिखरौ।
चारउ लँग हरयाली धरती पै मानो मखमल पसरौ।।२९।।

ठंडी-ठंडी पौंन संग झूमैं तरुबर झौंरन बाले।
धरती सें मिल गरज हँसैं बादर प्रेंमीं जौं मतवाले।।
परत फुहार, इन्द्र परियन के धबल चीर सी लहराबै।
करत जुब्तियन के मन चंचल मन सिंगारिक कर जाबै।।३०।।

दादुर मोर पपीहा बोलैं जीव जन्तु सब रैत मगन।
प्यारी बरखा आकें अमरित बरसाउत खेतन-खेतन।।
पसू पंछियन और किसानन में अटूट उतसाय भरै।
झूला उर राखी कौ मइँना बहनन में उल्लास भरै।।३१।।

साउन तीज परब भारत में मनत इतै हर साउन में।
पै बुन्देलखण्ड में मेला लगत इन दिनन गाँउन में।।
नगर ओरछा में बिसेस ढँग सें ई उतसव मनत रऔ।
उतै तीज सें नागपंचमी नौं मेला भी लगत रऔ।।३२।।

भौत महात्तम को साउन तौहार बिटीनाँ-बहनन को।
ससुरारन सें आय करें घर पावन अपने भइयन को।।
सजधज बैठें गाँव मुअल्ला कीं जुरकें बिटियाँ-बहनें।
देख उनें अम्मा बापू भइयन को आनँद का कहनें।।३३।।

हँसीं-ठिटोलीं करें परसपर गाबैं साउन गीत मधुर।
झूला झूलैं सबइ, इन दिनन झूला डरत 'श्याम' घर-घर।।
जी घर बिटियाँ-बहन न आबैं ऊ घर लगै भौत सूनौ।
अँसुआ भरैं मताई, भइयन के मन रात दुक्ख दूनौ।।३४।।

परम्परा है साउन पूनों भइया घर बहनें आबैं।
टीका कर आरती उतारें, भइया कों मिठाइ ख्वाबैं।।
करतीं भेंट गरी को गोला, खबा पान सम्मान करें।
राखी बाँध उमर लम्बी, रच्छा की प्रभु सें माँग करें।।३५।।

भइया अपँव असीम प्रैंम बहना पै ऐंन लुटाउत है।
राखी बन्धन बदलैं अपनो रच्छा-फर्ज निभाउत है।।
रच्छाबन्धन सब परबन सें पाबन पर्ब हिन्दुअन को।
भइया-बहनन के आपुस के निरमल प्रैंम समरपन को।।३६।।

जिनकें भैंन नईं बे औरन सें रखिया बँधवाउत हैं।
सगी बैंन की तराँ नेव-रच्छा को फरज निभाउत हैं।।
जात-पाँत को भेद न राखत है पावन राखी बन्धन।
मुख्ख पर्ब बुन्देलखण्ड को, गरें मिलत हैं भाइ-बहन।।३७।।

नगर ओरछा में ई उत्सव भौतइँ ढँग सें मनत रओ।
मेला और कारक्रम हुन को ओज-प्रैंम मन भरत रओ।।
मेला में सरीर के करतब और सूरता के जौहर।
कैउ होत रए हर सालै, कछु बीच नगरं उर कछु बाहर।।३८।।

परम्परा चल रइ है जा बुन्देलखण्ड भर में आजउँ।
कऊँ भौत तौ कऊँ होत कम साउन मइँना में साँचउँ।।
बुन्देला हरदौल काररत हते कारबाहक राजा।
भई 'तीज तौहार' बिबस्था मन्दिर जितै रामराजा।।३६।।

भौत बड़ौ मैदान उतै भारी मेला आयोजन भव।
नगर प्रजा उर बाहर सें आई जनता को जमघट भव।।
उतई मन्दिर ढिंगा बनो नौंनो लाला हरदौल महल।
इस्थाई निबास उनको, अब 'साउन-भादौं' नाव महल।।४०।।

राजा उर सम्भ्रान्त घरन कीं बैठीं ती आकें तिरियाँ।
सबइ दिखउअन को चोहद्‌दी सब पिरबन्ध हतो बढ़िया।।
चम्पावती राजरानी पतनी जुझार सिंग जू नृप की।
और हिमांचल कुँवरि धरमपतनी हरदौल बीरबर की।।४१।।

रानी हीरा देवी पतनी नृप पहाड़सिंग ऐरच के।
सामूँ छत पै बैठ गईं सब खेल देखबे ऊ दिन के।।
जथाजोग थानन सब बैठे उर कछु रए उतईं ठाड़े।
आजोजन की पहल भई, हरदौल देव अब भए ठाड़े।।४२।।

भरो हतो मैदान खचाखत, करी घोसना करतब की।
सबइ जने रयँ सान्त और देखें है बेला आनँद की।।
पैले करतब में 'पत्थर की नाल उठाबौ' घोसित भव।
मन सें पाँच-सात मन तक की नालन कों धरवा दव गव।।४३।।

प्रतिजोगी जो हते हतौ 'बाँके सरदार' मुख्ख उनमें।
हलो बीर जगमन खँगार हरदौल मिन्त सामिल उनमें।।
ऐरच के राजा पहाड़सिंग उर पिरतीत राय भी सँग।
सबइ हते बल में बढ़-चढ़ कें जो ठाड़े सन्मुख सँग-सँग।।४४।।

सबई उतसुक ठाड़े, जैसइँ भई घोसना करतब की।
एक-एक कर बढ़े अँगारूँ, देत दुहाई निज बल की।।
खेल सुरू भव, नाल एक मन की उठाय लइ उन सबनें।
दो मन बाली नाल उठा लइ करकें हिम्मत जगमन नें।।४५।।

दो मन तक लगभग सब पौंचे आ नइँ पाए अढ़ाई पै।
सबई बगलें झाँक रये ते, टँग गइ बात अढ़ाई पै।।
होय बिजय ऐलान कि भइ रनबास–घोसना ऊपर सें।
नाल पाँच मन जो उठाए तौलो जैहै बौ सुबरन सें।।४६।।

और पाँच मन सौनो उर सम्मान दओ जैहै ऊऐ।
सुनी घोसना, खिंचो सनाका, सब सोचें कैसें हूऐ।।
इत्तौ धन–सम्मान सोच लालच आओ सबके मन में।
सोउ्त खून सुन–सुना उठो अब हर प्रतिजोगी के तन में।।४७।।

सबइ लगे जी जान, का करैं, बात दोइ पै जा अटकी।
नइँ अढ़ाइयउ मन पै पौंचे, मानो सब खाये पटकी।।
दैकें ताव मूँछ पै अब तौ हाँत उठा बोलो जगमन।
'हमसें ऊपर कोउ उठाबैं तौ आबै कर पक्को मन'।।४८।।

बोलो, 'कोउ न बड़ो बजनकस है मो जगमन की समसर'।
भुजा उठा कें ताल ठोक दव, होबै, आबै मो ऐंगर।।
ताल ठोकबौ होत चुनौती, उर अपमान सूर मानत।
तउपै जू! बुन्देलखण्ड में सुन चुप रबौ मौंत मानत।।४६।।

सुनी चुनौती तौ कछु पल कों इकदम सन्नाटो छाओ।
काऊ की हिम्मत न परी उर कोऊ ना सनमुख आओ।।
ई अपमान न सह पाये, हरदौल छोड़ आसन आये।
मनई मन कर नमन रामराजा सें बे आसिस पाये।।५०।।

सिगइ प्रजा, म्हौंरानी जू उर सिगइ सभा कों नमन करो।
पौंचे जब मैदान बर्जी तार्री उनकों पिरसन्न करो।।
पत्थर नाल ढिंगा तुरतइँ हरदौल कुँअर जू पौंच गये।
ढाइ ढाइ मन के दो पाथर हाँतन ऊपर तान लये।।५१।।

पिरजा में उल्लास छा गओ, सबई जै–जैकार करें।
पै जगमन बोलो, हमाइ बातउ पै सबरे गौर करें।।
राज घोसना भइ जैसी बैसो न अभै ई काम भओ।
इऐ जीत हम नइँ मानत, सोचो ई बजन कितेक भओ।।५२।।

पत्थर एक पाँच मन होबै उऐ उठाओ जानें है।
ढाइ एक फिर ढाइ एक करकें नइँ नाल उठानें है।।
मुस्काने हरदौल कि जगमन तुमनें बात पते की कइ।
राज घोसना भई ऐसियइ भइया! तुमनें जैसी कइ।।५३।।

बढ़कें डेरे हाँत कुँअर नें नाल पाँच मन तान दई।
धर कें नीचैं हाँत दाइने सें फिर नाल उठाय लई।।
फिर उतार कें नेंचें धर दइ जगमन भव नौ दो ग्यारा।
कोउ देख नइँ पाव कितै गव, बुलो कुँअर को जैकारा।।५४।।

प्रतिजोगी जन हारे ईमें उनमें बैरभाव जागो।
उनके मन कुबिचार आए उर सबरो प्रेंमभाव भागो।।
हो रइँती अब तरा-तरा कीं बातें नर उर नारिन में।
बातें कछु भइँती आपुस में छत पै बैठी तिरियन में।।५५।।

चम्पाबती राजरानी नें कइ कि कुँअर ब्रम्हचारी है।
हीरा देवी बोलीं कौनउँ जादू को बौपारी है।।
जीकौ जैसो भाव सोच रव तो तैसो अपने मन में।
सत्त-न्याय कों चीनत ते जो जस गा रए ते आपुस में।।५६।।

खुसी प्रजा नें उठा कुँअर कों अपँए कँधन बैठार लओ।
नभ में पिरजा के मुख ऊँचो जैकारा सुर गूँज गओ।।
बाताबरन सान्त भव औरउ खेल उतै आरम्भ भये।
भाला-बल्लम तेगा तरबारन के करतब ऐंन भये।।५७।।

इन खेलन के बाद लोंग रेसम डोरा में बाँधी गइ।
टँगी लौंग-प्रतिजोगी की दूरी पचास गज राखी गइ।।
प्रतिजोगी पचास गज दूरी सें ऊ लौंग काट देबै।
भई घोसना बौ प्रतिभागी स्रेस्ट धनुरधर कैलाबै।।५८।।

भाग्ग पचासन नें अजमाओ पै न सफल बे कोउ भये।
छाइ उदासी सबई में, हारी सबई बे मान गये।।
अब तौ जनता चिल्लाई हरदौल देव जू अब आबैं।
आकें लोंग काटबे बा़लो अपनो करतब अजमाबैं।।५९।।

बेर-बेर जब कई गई पिरजा की कइ न टार पाये।
उठे और करतब थल पै बे लैकें धनुस-बान आये।।
करी घोसना कुँअर साब नें, पैलें फूल गिरैंहैं हम।
निरनायक जू! लौंग देखिओ तुरतइँ तीर चलैंहैं हम।।६०।।

बान चढ़ाकें अपँए धनुस पै कुँअर देव नें छोड़ दओ।
फूल लोंग को काटो उन्नें, निरनायक उद्घोस भओ।।
सुनो भाइ! हरदौल साब नें फूल लौंग को काट दओ।
पै बा लोंग टँगी है अभऊँ, साधुबाद गुंजार भओ।।६१।।

बोले फिर हरदौल, लौंग जो लटक रई है डोरा में।
सबरे देखौ, उऐ काट रए, आधी रैहै डोरा में।।
चढ़ा धनुस पै बान छोड़ दव, लौंग गिरी कट कें आधी।
निरनायक नें दई सूसना अभऊँ लटकी है आधी।।६२।।

कर प्रनाम सब जन समूय कों, आसन पै जा बैठ गये।
निरनायक नें करी घोसना बिजई श्री हरदौल भये।।
नभ में जै-जैकारें गूँजीं आँगूँ करतब और भये।
मल्ल जुध्ध, मलखम्भ आदि के खेल देखबे जोग भये।।६३।।

रए आँगूँ हरदौल सबइ में जै-जैकार करी सबनें।
जो ना औरन नें कर पाओ सो करकें दिखाव उननें।।
कौनउँ करतब नइँ तौ ऐसौ जी में दच्छ न बे होवैं।
ऐसोऊ नइँ लगो राज मरजादा में हेटे होवैं।।६४।।

ब्रमचारी उर चरितबान उर नित को अभ्यासी मानव।
कभउँ न हेटौ परत काउ सें सत्त और न्यायी मानव।।
सबई में दुरभाव बिना सन्मान-प्रैंम जो राखत है।
बइकौ जस गाउत है दुनिया, परमधाम बौ पाउत है।।६५।।

समारोय कों पूरौ करकें निज निवास हरदौल गये।
फूलबाग में कइयक झूला डरे देव जू पौंच गये।।
झूलैं राजमहल की तिरियाँ ठिटक देव जू देख रये।
देख उमंग राजतिरियन में मन आनंदित देव भये।।६६।।

चम्पावती राजरानी जाँ झूल रईं ती झूला पै।
उतइँ बगल में कुँअरि हिमांचल झूल रईं ती झूला पै।।
बई लैन में रानी हीरादेवी झूलैं हरसाबैं।
झूलैं उर खिलखिला हसें सब द्रस्स उतै के मन भाबैं।।६७।।

सिगए ओरछा में घर-घर-चौराहिन झुल रए ते झूला।
पर्व देखबे जोग उतै को सबइ देख रए ते मेला।।
बाल-बृध्ध नर-नारी सबई पैंग बढ़ाबैं झूलन पै।
साउन गीत मल्हारन की झमकइँयाँ लेबैं झूलन पै।।६८।।

फूलबाग को साउन झूला सबइ देखबे ललचाबैं।
राजा और रानियन के झूला करतब लख हरसाबैं।।
सजे-धजे झूलन पै झूलत देख देव को भी मन भव।
चम्पावती देख बोली आओ लाला! ठाड़े जिन रव।।६९।।

झूला खाली है सामूँ कौ जउ पै करतब आन करो।
भौत चलाई खडगें झूलउ के पूरे अरमान करो।।
फिर का हतौ, दौर भौजी सामूँ झूला पै पौंच गये।
उतइँ उतार पनइँयाँ, झूला पै चढ़ गए पिरसन्न भये।।७०।।

चम्पा भौजी के सामूँ देउर हरदौल झूल रए ते।
दोऊ लँग सें पैंग बढ़ौ सब उनकी होड़ देख रए ते।।
आमूँ-सामूँ झूला पौंचे तिरियाँ लख हरसातीं हैं।
तारीं बजा-बजा सब हँस रइँ इठलातीं उकसातीं हैं।।७१।।

जई बीच हरदौल कुँअर नें अपनो झूला छोड़ दओ।
और छलाँग लगा कें भौजी के झूला कों थाम लओ।।
पौंच गये उनके झूला पै अचरज को बौ खेल भओ।
सीमा रइ न खुसी की सबई हँसे सबइ मन हर्स भओ।।७२।।

देउर नें भौजियै झुलाओ सबइ मगन मन नचन लगे।
करतब देख दिखउआ भर-भर मौं सरायना करन लगे।।
झूला रुको राजमहसी चम्पा जू नें सन्मान दओ।
कंठहार मौतिन को अपनो गरैं कुँअर कें डार दओ।।७३।।

बढ़ दिमान हरदौल देव नें भौजी चरनन सीस धरो।
म्हाँरानी नें पीठ थपथपाई उर सिर पै हाँत धरो।।
म्हाँरानी गईं राजमहल, गईं सिगईं तिरियाँ अपने घर।
पतनी कुँअरि हिमांचल के सँग गए हरदौलउ अपँये घर।।७४।।

दोहा

हर इक करतब में निपुन जुबा कुँअर हरदौल।
बुन्देला भाग्गी परम पाय रतन अनमोल।।५।।
संगी-साथी-मींत जौं पिरजा सँग बौहार।
गुन बिसेस हरदौल पै है जन-मन बलिहार।।६।।

सर्ग : छै

तरबारबाज हरदौल

❋ दोहा ❋

मीत बनैं बैरी जहाँ, बढ़त कलव–उतपात।
मीत मीत सँग मिल करै, घात, घत पै घात।।१।।
दैव सक्ति रक्छा करत, कहाँ साँच कों आँच।
बिजय सत्त की होत है, दो–दो होत न पाँच।।२।।

❋ छन्द ❋

फारस को मेंहदी हुसैन तरबार चलाबे में नामी।
करबे कों मुकाबला आओ गबालियर में सन्नामी।।
नृपति ग्वालियर 'आसकरन' नें उतै डिमडिमी पिटवाई।
'जो मुकाबला करें चाँय, आ जाय', बिबस्था करवाई।।१।।

जगमन घोड़ा पै सबार हो सहर आगरा जा रव तो।
सुनी मुनादी तौ मुकाबला देखन बौउ पौंच गव तो।।
पौंच किला मैंदान गई ती भीड़ दिखउअन की भारी।
राजकरन लघु भ्राता नृप के तुरत घोसना कर डारी।।२।।

जो कोऊ मँहदी हुसैन की इतै चुनौती सुइकारै।
आबै लै तरबार सामनूँ आकें ऊऐ ललकारै।।
बेर–बेर दुहराइ घोसना पै न अँगाइँ कोउ आओ।
मँहदी नें करतब दिखाए पै ऊमें उऐ न चैन आओ।।३।।

मँहदी बोलो, कोउ दोसतीअइ में आ तलबार करै।
चाल लगी ईमें लोगन कों, कोउ काए कों आन मरै।।
मँहदी घूम मंच पै बोलौ का न मर्द है कोउ इतै।
जो मुकाबला करै बीर की नाईं हमसें आन इतै।।४।।

रहो न गव जगमन खँगार पै आ नृप कों पिरनाम करो।
हाँत मिलाओ जा हुसैन सें मुकाबला सुइकार करो।।
भव तरवार प्रदरसन भौतइँ दाव-पैंच उर काट भये।
सबइ दिखउआ सिहर उठे जब घात और प्रतिघात भये।।५।।

टूँक-टूँक तरबार हो गई जगमन बाजी हार गओ।
बर्जी तारियाँ तब हुसैन नें छाती सें चिपकाय लओ।।
पीठ थपथपाई जगमन की उर करतब की दाद दई।
नृप नें कर सनमान दोउ बीरन कों ऐंन इनाम दई।।६।।

समारोय भव खतम दोउअन नें सरायँ बिसराम करो।
परचै भव, फिर दोउ जनन नें, आपुस में सनमान करो।।
फारस देस निबासी हम, करनें है फतै सिगइ दुनिया।
निकर परे हम यार! अकेले, आए छोड़ निज घर दुनिया।।७।।

जगमन भाई! हमें अभै लौं मात न कोऊ दै पाओ।
जगमन कय, अब का बिचार कितकों जानें सो बतराओ।।
दच्छिन दिसा जायँ चाँउत हम, कइ हुसैन नें जगमन सें।
तौ फिर भइया! चलो ओरछा, जो लगाव होबै हमसें।।८।।

जगमन बोलो, उतइँ अपँव घर, हती आगरा की त्यारी।
पै जनाब मिल गये अपुन कर दई जोजना रद सारी।।
गाढ़ी भई दोसती उनमें दोउ ओरछा पौंच गये।
मँहदी साब ओरछा में जगमन खँगार घर ठैर गये।।९।।

जगमन नें हुसैन साहब की ऐंन करी खातिरदारी।
पी अफीम प्याला सोये बे भूल गये दुनियादारी।।
उठे दिन चढ़ें, नगर ओरछा कों घुमाउँन लै गव जगमन।
नहा बेतवा में लौटे पिरतीतराय सें होत मिलन।।१०।।

एक-दूसरे को बढ़-चढ़ परचै करवाओ जगमन नें।
भई दोसती घर प्रतीत के भोजन जाय करो उननें।।
हो गइती संजा बेरा बैठैंईं बैठें गप्पन में।
मँहदी मसजिद गव नमाज कों, बातें भईं उन दोउन में।।११।।

राय साब! हम अपने मन की बात बता रए आज तुमें।
जगमन बोलो, भौत दिनन सें खटक रई जा बात हमें।।
अब हरदौल देव को मद सिगईं सीमन कों नाक रऔ।
हँत राजसत्ता उनके, हो तन बल को अभिमान गऔ।।१२।।

हमें लगत है कौनउँ जादू-टौना उनके हाँत लगे।
तभईं दिखा अनहौने करतब सबकों ऐंन रिझान लगे।।
सब छेत्रन में अपँईं असाधारन प्रतिभा दरसाउत हैं।
हरदम अपँए संगियन कों नीचौ हरदौल दिखाउत हैं।।१३।।

अब तौ लगत कि उनसें बढ़कें बैरी अपँव कोउ नइयाँ।
हम अपमान तीज मेला को कभऊँ भूल सकत नइयाँ।।
बदलौ लैकें रैंहैं ऊकौ नइँ तौ जगमन जिन कइओ।
तुमें न अखरी हो प्रतीत जू! तौ तुम चुप्प बैठ रइओ।।१४।।

हमऊँ तौ जानें जगमन ! बदलो कैसें लैहौ उनसें!
नइँ तौ मिमयाओ छिरिया से बे कौं हैं हेटे तुमसें।।
राज ओरछा को उनपै उर भौत फौज फाँटौ उनपै।
मन के लड़ुआ खाव, हँस परे कह प्रतीत, का है तुमपै!!१५।।

राय साब! उदना तुमाव उर कुँअर पहाड़सिंग्घ जी कौ।
भओ घोर अपमान, आज हरदौल बनो काँटो जी कौ।।
इत्ते बन निरबीर गये कैसें तुम सबरे नेंक कहौ।
जगमन बोलो, समज न आ रइ, ऐसो काये होय रहौ।।१६।।

हम तौ साब! आगरा अपनो बदलो लैबे जा रए ते।
म्हाँराजा ज़ुझार सिंग जू सें जइ सब कैबे जा रए ते।।
पहलवान जे मिले ग्वालियर, हैं तरबारबाज भारी।
भिड़वैहैं हुसैंन - हरदौले, हुइऐ खतम ब्याध सारी।।१७।।

बोले राय, न भिड़े कहूँ बे, तुमईं जूझ मरे पैलें।
तो बताव तुम का कर लैहौ सोच लेव जउपै पैलें।।
जई बीच रानी हीरा उर कुँअर पहाड़सींग आये।
जगमन और प्रतीतराय नें देखो उनकों हरसाये।।१८।।

बैठारौ ऊँचे आसन स्वागत सत्कार करो उनको।
पैलें झिजकौ, फिर जगमन नें द्वेस भाव भाँपो उनको।।
बोलो, कुँअर साब! हम अपनो भूल जायँ अपमान भलें।
पै न भुलाओ जात अपुन को, चाँयें जाबै जान भलें।।१६।।

गरैं अटक गव बौ हमाए अब जो न बनें गटकत हमसें।
बदलो लैबौ उर हिंसा को भाव नई जा रव मन सें।।
दम लग रइ तुमाइ बातन में पै हम करऊ का लैंहैं।
हमउँ दुखी हरदौल देव सें बदलो कैसें लै पैंहैं।।२०।।

जगमन! बा अपमान गरल को घूँट पियें बैठे हमऊँ।
लै उसाँस बोले पहाड़सिंग, पै चुप्पी सादें हमऊँ।।
तबइँ उबल हीराजू बोलीं, बातें नइयाँ कैबिन कीं।
का हो रव रनबास महल में, बे न अदेखी करबिन कीं।।२१।।

बात आ परी सो बताउत हैं, हाल दिबर-भौजाई कौ।
गाढ़ो नेव दोउअन में है करै खुलासा को ईकौ।।
बड़े घरन की तिरियन सामूँ जो-जो भव सो बात सुनो।
बौ झूला झुलाउ्त तो म्हाँरानी कों सो जा बात गुनो।।२२।।

रानी डारें गलबइँयाँ हँस-हँस हरदौल संग झूलीं।
लाज-सरम खुटिया पै टाँगी बे अपनो आपइ भूलीं।।
हद्द होत बेसरमाई की, कहै पापियन सें को का!
सरम लगत कैबे में औरउ बातें हैं कयँ जिनकों का!!२३।।

नकली अँसुआ बहा, मिला चूरन-चटनी कछु और कही।
आँखिन पै धर हाँत चुप्प भइ, मानो नइँ कइ सोउ कही।।
तुरत प्रतीतराय जू बोले, भौजी चिन्ता नइँ करनें।
काँटो हम निकार कें रैंहैं, ई बस जल्दीयइ करनें।।२४।।

आय गओ मँहदी हुसैन ऊके सँग मिलकें बात भई।
तुरतइँ निकरै काँटो, सबनें अपने मन में ठान लई।।
डुग्गी नगर ओरछा के कौंने-कौंने में पिटवाई।
बा मद भरी चुनौती मानो घर-घर उननें पौंचाई।।२५।।

मँहदी सें तरबार कलाबाजी में जो बिजई रैहै।
एक लाख मुद्राँ सौने कीं, उऐ इनाम दई जैहै।।
सुन इत्ती बढ़िया इनाम कइयक करतब कों ललचाये।
जंग लगी तरबारन बाले तक लड़बे सज-धज आये।।२६।।

टुंट लगौ भोरइ सें गइ सातार नदी तट पै जनता।
जितै हतो आजोजन पौंची उतै हजारन में जनता।।
प्रतिजोगी कइयक पौंचे पै सब हुसैन सें भै खाये।
कोउ न बढ़ो अँगारूँ तौ फिर काये तरबारें ल्याये।।२७।।

भोरइ सें हो गई दुफरिया जनता को मन ऊब गओ।
जई बीच जगमन नें बढ़ मँहदी से हाँत मिलाय लओ।।
भव मुकाबला तरबारी मँहदी हुसैन उर जगमन में।
जगमन कों उरझायँ रओ बौ दिखा-दिखा कें करतब में।।२८।।

जगमन भव परास्त, मँहदी नें बीरन कों फिर ललकारौ।
अब प्रतीतराय नें प्रतिदुन्दी बन करतब सुइकारौ।।
भौत लगाओ तो कस पै जगमन जैसोई हाल रऔ।
हारे, मौं लटकायें लौटे, पै ना जादाँ खेद भऔ।।२६।।

करतब इक दिन में इक प्रतिदुन्दी सें होबौ चल रव तो।
दिना तीसरे अब पहाड़सिंग के सँग होबौ तय भव त्रो।।
चमकीं तरवारें पहाड़ उर मेंहदी की आजोजन में।
पै पहाड़ सें निकरी चुइया, भव सब आनन-फानन में।।३०।।

भए पहाड़सिंग जू परास्त मेंहदी हुसैन सें हार गये।
मौं लटकायँ जाय बैठे ऊनें सब बीर पछाड़ दये।।
नगर निबासी सब उदास मानो जा हार उनइँ की हो।
मेंहदी ललकारै ठाड़ौ, अब आबै हिम्मत जी की हो।।३१।।

नगर ओरछा मचौ तहलका, सबै पराजै बा खटकी।
अब का करें, न सोच पाए कछु, बात सिंघासन जा अटकी।।
लगो सफल भयँ चाँउत है अब जगमन को सड़यंत्र जबर।
हते ओरछा सें बाहर, कुन्डेसुर में हरदौल कुँअर।।३२।।

बात भई तब मँहदी सें कै असली काम अभै रै गव।
सो कछु दिन कों और ओरछा नगरी में साहब रै जव।।
ऊकी हाँ भइ, गए जगमन, पिरतीत, पहाड़सिंग कुण्डेश्वर।
जाँ सिवसंकर–अनुस्ठान रत हैं दिमान हरदौल कुँअर।।३३।।

मान बदी परबा सें लैकें तिथी पंचमी के दिन तक।
अनुस्ठान जो कर रए ते बौ पूरो हो गव तो तब तक।।
दिबस बसंत पंचमी कों ब्रत जग्य आदि भए सम्पूरन।
अब दिमान हरदौल देव नें दओ प्रजा कों उद्बोधन।।३४।।

आत्मावत प्रियजनों! आज है सिरी पंचमी परब महाँ।
हम 'श्री' कोइ समज लें मतलब तौ निच्चूँ कल्यान यहाँ।।
मानव जीवन सुभारम्भ कों भी 'श्री' कैत मनीसीजन।
नित को हर बदलाव मान लो देत हमें नूतन जीवन।।३५।।

है अपनो दाइत्व पिछाऊँ भी मुर कें देखें चइए।
काँ सें चले, कहाँ के लानें, काँ जा रए सोचें चइए।।
जनमे सिसु बालक, किसोर फिर युवा प्रौढ़ उर ब्रध्ध भये।
माध्यम मौत बनी फिर जनमे, नव जीवन कों प्राप्त भये।।३६।।

है बसन्त ई 'सिरी पंचमी' या कैलो रितुराज इऐ।
रितुअन द्वारा होत काल परबरतन सबई मान्त इऐ।।
रितुअन में बसंत रितुराजा जो कछु हमें सिखाउत है।
द्वेस, ईरखा, मतसर, छल, परित्याग भाव उपजाउत है।।३७।।

बिना भेद तरुअन कों नव कोपल दै उनसें प्यार करै।
नये फूल फल दैकें जग कों धरती को सिंगार करै।।
मन उर आत्मा पै पत्ता उर झाड़ बिकार छाए दूसन।
पतझर देत सँदेस त्याग दो सब बिकार बसनाभूसन।।३८।।

ऐसौ करबे सें मानव में सर्वलोकहित जागत है।
निरबिकार होकें सबकों बौ सुखी व निरभै चाँहत है।।
सब रितुअन को रितुराजा पै होत प्रैंम–बिसवास अटल।
सबको उपकारी बसंत है, रच्छा–जीवन देत नबल।।३६।।

राजा और प्रजा में ऐसोई बौहार भयें चइए।
सुख-समरिध्धी के लानें मिल कें सब काम भयें चइए।।
जन-जन की जब एइ भावना रूप समस्टी को लेबै।
तब श्रीरूपा माँ बिद्या की जननी की किरपा होबै।।४०।।

बौइ सारदा क्रपा, सबइ अग्यान तिमिर कों हरन करै।
तम अँदयारे सें निकार बौ सुभ सिव तत्व प्रदान करै।।
जइ 'सिवत्व' पाबें कों कर रए जतन सबइ जड़ उर चेतन।
पै प्रकिर्ति सौभाबिकता सें जुड़े लीन बामें जो जन।।४१।।

उनें जल्दियइ उर निच्चूँ मिलजात 'सिवत्व' स्वजीवन में।
पा सिवत्व नर सकल कामनाहीन होत निज जीवन में।।
जीवन को उद्देस सत्त, सिव, सुन्दर आउत मानुस में।
तब बौ पावनतम सुरूप आ जात सुयम जन मानस में।।४२।।

ई सब तै तब होत कि जब माँ 'श्री' अनुकम्पा कर देबैं।
करें जतन, हम अपँए आचरन कों ऊ लायक कर लेबैं।।
'श्री माँ' तो आसीरबाद हम सबकों बाँट रईं अपनो।
जो लै पाबै सो लै लेबै, करतब-श्रम अपनो-अपनो।।४३।।

कइयक हैं प्रारब्ध भरोसें, जतन करें नइँ चाँउत बे।
भौत देर हो जात उनें निज पाँव कुल्हरिया मारत बे।।
पत्ता ऐंन गिरत पेड़े सें नई कौंप आउत ऊमें।
पेड़ सूखबे के पैलें बौ अपँव बीज डारत भू में।।४४।।

जा करनी का जड़ पेड़न की होत? बिग्यजन! सोच कहो।
जड़ ई करनी कभउँ नइँ करत, करता-धरता कौन कहो!!
आदि सक्ति 'श्री माँ' की है जा करनी सबई जानत हैं।
पै जड़ता के अँदयारे में हैं हम अपँईं तानत हैं।।४५।।

जीवन है उर अभै समय है हम जड़ता को त्याग करें।
सई बना कें लच्छ चलें उर पूरौ जीवन लच्छ करें।।
'श्री माँ' हरदम हमें नई नौनीं रस्ता लै चलती हैं।
करें प्रार्थना उनसें बे आसीसन झोरीं भरतीं हैं।।४६।।

करत बिनय हरदौल, सरसुती माता! जड़ता दूर करो।
सिरधा उर बिसवास-सत्त किरनन सें जग भरपूर करो।।
निरमल अन्तस बन जाबैं नव ग्यान कोपलें उग आबैं।
मानव मन के बुझे दिआ श्रीमाता! हो जगमग जाबैं।।४७।।

अपने सस्त्र-सास्त्र सें हम बढ़िया समाज निरमान करें।
देस-धरम की रच्छा में अपनो सरबस बलिदान करें।।
आतमीयजन! जगो देस उर मानव को कल्यान करो।
उठो और हरदौल संग मिल हर सम्भव उत्थान करो।।४८।।

भओ खतम उद्‌बोधन सबके मुखड़ा जैसें फूल खिले।
बजीं तारियाँ कुँअर साब परिवार जनन सें जाय मिले।।
अब पहाड़सिंग उर प्रतीत जू जगमन जाय मिले उनसें।
बूझत हैं हरदौल नगर के हालचाल मिलकें सबसें।।४९।।

तब पहाड़ बोले, तुमाए तप सें है सबइ ठीक भइया!
बिंग भरे मुस्क्या बोले, है कितउँ न हाय-हाय दइया।।
भइया! सइ कै रए दुनिया में तपई स्रेस्ट और उत्तम।
औं हमाव तप, का कह दें, कह हँसे कुँअर हरदौल सुयम।।५०।।

कयँ पहाड़सिंग तुमें लिबाउन आये हम हरदौल लला!
महिनक बीतौ, जमकें रै गए जाबे को नइँ हला-चला।।
जा उम्मर में सन्यासी बनबौ है का उत्तम बोलो!
ऊतर दें हरदौल कछू आ धरमपाल इकदम बोलो।।५१।।

महाराज लग गईं पत्तलें, जीमे कों जू! अपुन चलें।
बाट हेर रए सबइ अपुन की सो सबरेई उतइँ चलें।।
गये लिबा हरदौल सबइकों पंगत में बैठे सब जन।
बाँटी गई दच्छिना जैसइँ निपटे ते करकें भोजन।।५२।।

साधू, संतन, बिप्रन कों, अभ्यागत, निबलन-बिकलन कों।
दान दओ हरदौल देव नें जथाजोग धन उन सबकों।।
हो सबार निज-निज बाहन पै सबनेंई प्रस्तान करो।
नगर ओरछा आये सबनें जथाजोग सनमान करो।।५३।।

पौंचत खन हरदौल कुँअर सबसें पैलें मंदिर पौंचे।
दरसन करे रामराजा के फूलबाग अन्दर पौंचे।।
उननें आ दरबार लगाओ सबइ सभासद जन आये।
नगर-राज्य के हाल बूझ कें बिन्तबार जन बुलावाये।।५४।।

सुनी बिन्तबारी, निरनय दए, आबस्यक सब काम करो।
ईके बाद राजरानी के मन्दिर कों प्रस्तान करो।।
रानी चम्पावती ओरछा, करो उर्हाने सँग स्वागत।
मुस्क्या कें हरदौल कुँअर नें पाँव छुये जौं सरनागत।।५५।।

बैठइ पाये ते कै रानी हीरा देवी आ धमकीं।
कुसल छेम बूझी उर तुरतइँ कैन लगीं अपने मन कीं।।
कर रए ते दिमान साहब! का अनुस्ठान कौनउँ भारी!
भौत दिना लग गए का कौनउँ बिधना नें अड़चन डारी!!५६।।

हमउँ सुनें, तप कौन लच्छ या सिध्धी के लानें कर रए।
सबइ मिलो है रामक्रपा सें कस्ट और काये कर रए।।
तुम पै तौ बैसेंइँ फूल चम्पा के बरसत हैं हरदम।
और कहौ का तुमें चाँउँनें? बिंग बैन बोलीं इकदम।।५७।।

जो चम्पा के फूल बरस रए बे हरदम बरसत रैंहैं।
चम्पा बोलीं, चम्पा रैहै तौनों बे नइँ रुकनें हैं।।
पै हो सकत कि इनके जूतन को रँग फीकौ भव होबै।
उनमें हीरा जड़बे काजें अनुस्ठान बौ भव होबै।।५८।।

बातन-बातन हीरा बौ अपमान घूँट पीकें रै गइ।
झलको हिंसा भाव सुमुख पै, बेबस मुस्क्याकें रै गइ।।
बैठे रए हरदौल बिंग चरचा सुन-सुन मुस्क्यात रहे।
बातन में पैदा तनाव भव फिरउँ कुँअर जू सान्त रहे।।५९।।

जई बीच इक नगर मुनादी सुनी भये उठकें ठाड़े।
खिरकी पै जा पौंचे ऊऐ सुनैं देव ठाड़े-ठाड़े।।
सुनकें मुरक पिछाई बूझत, ई मँहदी हुसैन को है ?
जीकी ई डिमडिमी पिट रई भौजी! कव मकसद जो है।।६०।।

रानी चम्पावती कह उठीं फारस देस निबासी है।
बौ तरबार चलाबे में पारंगत, लग रव घाती है।।
कोऊ बीर होय आ जाबै लै तरबार अखाड़े में।
कैउ देस में बिजै पा चुकौ कोउ न जात अखाड़े में।।६१।।

तुरतइँ तुरुप लगाई हीरा नें चम्पा की बातन पै।
बोलीं, लाला! जुँआ न रिंग रव काउ बीर के कानन पै।।
लगत बुँदेला नगर ओरछा भई औरतन की बखरी।
एक जबन ललकार रहो है सातक दिन सें आ नगरी।।६२।।

बौ ऊँचौ तरबारबाज है, पहलवान भी है भारी।
मर्द इतैके मौं दुकायँ बैठे, मानी सबनें हारी।।
सक्ति एक की इत्ती, कर रए मूँठाभर सासन तइसें।
कहत 'बीर भोग्या बसुन्धरा' इऐ सत्त मानत जइसें।।६३।।

कत हरदौल चाँउँर्तीं का हौ, भौजी! सो तुम कै डारौ।
और भूमका जिन बनाव, कब का होनें, मन नैं मारौ।।
नाक न कटै ओरछा के बुन्देलन की हम जा चाँउत।
का भइया सें नइँ कइ तुमनें, भौजी! जानें जा चाँउत।।६४।।

दिखा चुके भइया जौहर, ढूँड़ीं उनके लानें चुरियाँ।
नगर ओरछा में नइँ मिल पाईं, हँस रइ उनपै दुनिया।।
करकें ब्यंग हँस परी हीरा, लच्छ याद ऊऐ अपनो।
ईकौ मतलब भौजी! करतब हमें दिखानें है अपनो।।६५।।

तुमनें पानी धर दव, जौहर कल्ल दिखें हैं हम अपनो।
तबइँ ल्याय सबकों चुरियाँ, कर लिइयो पूरौ निज सपनो।।
तुम करिओ दरबार और रनिबासी हम सबरे हुइऐं।
हँस बोले, तुम राज चलइयो, सबइ काम नौंने हुइऐं।।६६।।

पाँव छुये चम्पा भौजी के फूलबाग कों लौट गये।
अपनी बैठक में मिन्तन-सामन्तन के ढिंग पौंच गये।।
कल तरबार दुन्द मँहदी को हमसें हू सब जन चलिओ।
बोले, संदेसा हुसैन नौं ई पौंचा अबसइँ दिइओ।।६७।।

सुन खँगार जगमन ऊलौ, नगरी भर में चिल्लात फिरौ।
कल दिमान साहब-हुसैन में है मुकाबला कात फिरौ।।
सबके मन बिजली सी कौंधी, रात कटी जैसें-तैसें।
भोरइ भइ सातार नदी पौंची जनता फौजें जैसें।।६८।।

भुंसारें नियमित किरिया सें निपटे हैं हरदौल कुँअर।
करे रामराजा के दरसन, गये राजमन्दिर अन्दर।।
पाँव छुये रानी चम्पा के बोले सादर नेव बचन।
भौजी! हम आसीस लैंन आये बोलो आसीरबचन।।६९।।

मधुकर साह महाराजा की बंस धरोहर है तुमपै।
बा तरबार लैंन आये, बब्बा जू नें दइ, है तुमपै।।
रानी चम्पा नें बब्बा जू की तरबार दई ल्याकें।
बोलीं, है जा बौइ जियै अकबर नें दइती हरसाकें।।७०।।

दै रानी मुस्क्या कें बोलीं, दै रए हम ईऐ जैसी।
लाला! तुम लौटाय लियइओ ईकौं जैसी है तैसी।।
तब दिमान हरदौल देव गम्भीर भये तरबार लई।
लगा खडग माथे सें भौजी सें पावन आसीस लई।।७१।।

घोड़ा पै होकैं सबार सातार नदी के तट पौंचे।
बाट हेर रव तौ जाँ मँहदी, लै तरबार उतइँ पौंचे।।
नीयत के खोटे हुसैन कों आज फतै नइँ लैनें है।
बल्कैं ऊऐ उनकी जीवन लीला पूरी करनें है।।७२।।

कर हत्या हरदौल कुँअर की उऐ ओरछा पानें है।
जौइ सोच थराथरा रहौ मन, राज्य उऐ हतयानें है।।
गव तरबार-अखाड़े में मँहदी हुसैन इठल्यात भओ।
आय गये हरदौल कुँवर भी मँहदी लख मुस्क्याय गओ।।७३।।

हल्की उम्मर चढ़त जबानी जे हमाव का कर लैहैं।
आनन-फानन में कुमार कों हरा प्रान हम हर लैहैं।।
सोचत मँहदी, उर जगमन भी सोच अमंगल संकित है।
जनता भी किसोर के कारन उमड़ परी अति चिन्तित है।।७४।।

सबइ रामराजा सें मन-मन रच्छा हेत करत बिनती।
मौं पै तारीफें कर रए पै उल्टौ सोचत सड़यन्ती।।
भव मुकाबला सुरू और मँहदी नें पहली बेरइ में।
करो प्रानघाती हमला, हरदौल भये संकित मन में।।७५।।

प्रजा और हरदौल कुँअर सब भाव यबन को ताड़ गये।
चौंके उर भए सावधान अब तौ बारन पै बार भये।।
मँहदी की हरकत देखी, दव उत्तर जैसे कों तैसो।
टूँक-टूँक तरबार करी मँहदी की, कट मारो ऐसो।।७६।।

बजा तारियाँ प्रगट करो उल्लास तुरंतइ लोगन नें।
बुन्देला हरदौल बीर की जै-जै-जै बोली सबनें।।
सेर दहाड़े जंगल में मानो बेऊ जैकार करें।
भुजा उठा बीरन के जैकारा मन भौत उछाव भरें।।७७।।

ऐसो बार करो तो मँहदी चक्कर खाकें चित्त गिरो।
दौड़, प्रतीत, पहाड़ और जगमन नें छाती हाँत धरो।।
हबा करी, पानी के छींटा मारे, उऐ होस आओ।
उठ ठाड़ो भव, बढ़ दिमान नें पीठ ठोक कें सहलाओ।।७८।।

तब हुसैन बोलो, दिमान जू फारस खाड़ी सें चलकें।
करत फतै पै फतै आए सातार नदी लौं हम लड़कें।।
पै हमाइ तरबार बिजै को इतै आज उतरौ पानी।
आज अपुन सें हार गये हम कोऊ ना तुमरौ सानी।।७६।।

अरजी एक दिमान साब! जो आग्या हो तौ हम बोलैं।
बोले कुँअर हुसैन साब! बेझिजक और निधरक्क बोलैं।।
भौत मिले तरबारबाज पै मजा न आव काउ के सँग।
तबियत खुस हो गई इतै करकें तरबार अपुन के सँग।।८०।।

हार मान लइ हमनें पै इच्छा इक भारी है मन में।
अपुन संग तरबार दोसताना करबे की है मन में।।
दिली तमन्ना पूरी कर दो इत्ती अरजी है साहब!
मजा अपुन कों आहै उर देखै सारी जनता करतब।।८१।।

मुस्क्या कें हरदौल बीर नें कइ हुसैन साहब आओ।
हम तइयार तुमाई जैसी इच्छा सो सनमुख आओ।।
सुन पहाड़सिंग नें हुसैन कों दै अपनी तरबार दई।
मँहदी मन को कुटिल हाँत में बढ़कें लै तरबार लई।।८२।।

लयँ नकली मुसकान अधर पै फिर मँहदी को आबौ भव।
हरदौलउ अब बढ़े अँगारूँ, चम्पत जू को आबौ भव।।
हाँत जोर पिरनाम करो, कइ कक्का जू! अच्छे आये।
अपुनउँ खेल देख लो काका! बढ़िया मौंका पै आये।८३।।

काका चम्पतराय कै उठे बिजै प्राप्त कर लइ तुमनें।
लाज ओरछा की उर पानी बचालओ लालन! तुमनें।।
अब जो कर रए उऐ रहन दो लगत खुलो सड़यंत हमें।
काये सें कै है मुकाबला और खेल ना लगत हमें।८४।।

सड़जंत्रउ हूऐ कक्का जू! तौ फिर ऊसें का डरनें।
हमें रामराजा को बल है, संग अपुन को, का हटनें।।
कैकें अपुन अखाड़े में उतरे निरभै-उतसाय भरें।
हौंन लगे तरबार पैंतरा, दोउ दोउ पै बार करें।।८५।।

अब हुसैंन प्रानन की बाजी लगा बार पै बार करै।
नहीं दोसताना बल्कें बैरी समान बौ घात करै।।
देख पैंतरा हाव-भाव मँहदी के सबई जान गये।
परखा जन भए सिहिर रुमाँचित कपट जबन को ताड़ गये।।८६।।

जो तरबारबाज ग्याता फूटी उनके मौं सें सिसकी।
करै घात-प्रतिघात हुसैना बिलकुल बैरी के ढँग की।।
सो हरदौल बीर नें मँहदी के चहरा पै पाप पढ़े।
सावधान हो और सँमर कें जुबाबीर हरदौल बढ़े।।८७।।

मँहदी पै अब पूरे कस सें कुँअर देव नें बार करो।
टूँक-टूँक तरबार करी पै ऊकौ नइँ संघार करो।।
खुस भइ पिरजा उछल परी जैकारन सें आकास भरो।
बुन्देला हरदौल बीर को ऊँचे सुर जै घोस करो।।८८।।

देखो नइँ गव ई हुसैन सें ऊनें फिर सें ललकारौ।
ताल ठोक दव तो हुसैन नें, हरदौलउ नें ललकारौ।।
दइ तरबार सौंप चम्पत काका कों मँहदी ओर बढ़े।
ताल ठोक ऊ प्रतिदुन्दी सें तुरतइँ जा हरदौल भिड़े।।८६।।

मँहदी नें भर लव बाहन में छाती सें पीसें डारै।
चीखें निकरीं जनता के मौं, लगै कि बौ मारें डारै।।
पहलवान मँहदी हुसैन नें दाबौ बे न छूट पावैं।
लगै कि आँखें निकरीं परतीं सबइ दिखउआ घबरावैं।।६०।।

जई बीच हरदौल देव नें लई फुरैरी छूट गये।
कोउ न देख पाव कब का भव और बन्ध सब टूट गये।।
मँहदी कों हरदौल बीर नें दोउ भुजन पै टाँग लओ।
और हबा में तैराकें धरती पै ऊऐ पटक दओ।।६१।।

लमक भये ठाड़े छाती पै, जैकारा हुन छाय गओ।
चम्पतराय आए आँगूँ उर छाती सें चिपकाय लओ।।
बोले बारेलाला, लाला! तुमनें गजबइ कर डारौ।
पहलवान मँहदी हुसैन के मद कों चूरन कर डारौ।।६२।।

तुम तरबारबाज के सँग-सँग पहलवान भारी निकरे।
सक्तीपुंज देव पुरुसन सम बीर बलंकारी निकरे।।
माथौ चूम अपँए कंधन पै चम्पत जू नें बैठारौ।
और ओरछा तन कों चल भए, गजब हुसैना कर डारौ।।६३।।

काढ़ कटारी पूरी तागत सें छाती पै मार दई।
दैवजोग सें छाती पै मारी कटार बौ चूक गई।।
जाय लगी बौ बीच जाँघ में तब हरदौल कुँअर चीखे।
एकदमइँ मच गऔ तहलका, दौरी भीड़ काए चीखे!!६४।।

फूटौ खून प्रपात जाँघ सें, अति अचरज की बात भई।
धरती पै बह चलो लहू हरदौल संग मिल घात भई।।
ढूँड़ौ गव हुसैन कों पै बौ भीड़इ बीच बिलाय गओ।
बौ इसलाम धरम पिरचारक छल सें दै आघात गओ।।६५।।

धोके भरी चाल चल कें जब मँहदी हो न सफल पाओ।
करम नीचता के कर भागो, बौ हतया न राज पाओ।।
बैठारौ रथ में हरदौलै तुरत ओरछा लै आये।
राजबैद जू चन्द्रदेव मिश्रा इलाज करबे आये।।६६।।
भई चिकित्सा, पै न चेतना अभै लौट उनकी पाई।
देख कुँअर की बेहोसी मानो दुख की बदली छाई।।
जाय मन्दिरन में जनता कर रई प्रार्थना ओ ईसुर!
जल्दीअइ हो जायँ ठीक हरदौल बीर ओ परमेसुर!!६७।।

दोहा

दुक्ख हरौ हरदौल को, उलट हमें दै देव।
बे हमाए बल–आतमा, प्रभु! जिन खैंचें लेव।।३।।
जोधा–बीरन को कभउँ प्रभु! मूड़उ न पिराय।
देस–धरम रच्छक उनें, कोउ न बला सताय।।४।।
सबइ जगाँ ढूँड़ौ गऔ मँहदी कों भरपूर।
पै न पतौ खल को चलो, लगत निकर गव दूर।।५।।
काउ बैरियन–खलन नें, लव मँहदियै लुकाय।
कायेसें कै इकदमइँ, भू में गव न समाय।।६।।

—•—

सर्ग : सात
भइया हरदौल

❋ दोहा ❋

मुगल बीर मँहदी हँसन निकरो धोकेबाज।
मार कटारी कूँच भव, कर गव धूर्त अकाज।।१।।
करी प्रजा हरि प्रार्थना, भओ इलाजउ ऐंन।
घाव बीर कौ जब भरो, आव सबइ मन चैंन।।२।।

❋ छन्द ❋

घाव जाँघ को भरो मगर है आग्या अभै न चलबे की।
बैद्यराज नें साफ कही है, अभै न कछुअउ करबे की।।
सान्त परे हरदौल कच्छ में म्हाँरानी चम्पा आई।
गरम दूद में मिला दबाई उनें पिबाबे कों ल्याई।।१।।
दूद-दबाई पिबा, खबा दव पान और सिर सैलाबैं।
देख रहे हरदौल एक टक देखत-देखत बतयाबैं।।
भौजी! अब तौ डरैं-डरैं जी ऊब गओ, अकुलाय रहौ।
राज-देस के हाल न मिल रए, अब मन उठबौ चायँ रहौ।।2।।
भइया अटक आगरा रै गए कुसल छैम नइँ मिल पा रइ।
चिठियउन नइँ लिख पाए उनें हम, मन में इक आ रइ जा रइ।।
सबसें पैलें अपुन लिखो इक चिठिया भइया के लानें।
भौजी बोलीं, का लिखायँ चाँउत ऊमें उनके लानें।।३।।
का मतलब भौजी! तुमाव का कहैं चाउँती साफ कहौ।
लाला! जो बूझैं हम ऊकौ ऊतर हमसें सोच कहौ।।
कैबे कौ मतलब हमाव, चिठिया कैसी लिखवानें है।
राजपत्र या प्रैंमपत्र, का - का ऊमें टँचवानें है।।४।।

रानी मुस्क्यानी कहकें, खिलखिला हसें बे अब का कयँ।
बोले, पत्र खरीता में कर बन्द पठइयो, उर का कयँ।।
मन आबै सो लिखिओ, भइया सिबा न काऊ कों मिल है।
कलम उठाओ अब न कछू कव, खबर अतर उनकों मिल है।।5।।

चिट्ठी लिख कें रानी नें साड़िनि सबार कों पकराई।
साहजहाँ दरबार आगरा में निज पति कों पौंचाई।।
अबनौं तो सुभचिन्तकजन आउत रए कुसलछैम लैबे।
आज, द्वेस राखत जो मन में बे आये उनसें मिलबे।।६।।

पहाड़सिंग, रानी हीरा पिरतीतराय भीतर आये।
जई समै चम्पत काका उर धरमपाल भी घुस आये।।
परैं-परैं हरदौल कुँअर नें नमन करो उर मुस्काये।
और बैठबे की कइ सबसें, कुँअर लिंगा चम्पत आये।।७।।

फेरौ हाँत मूड़ पै उनके बइ पलका पै बैठ गये।
बोले कृपा रामराजा की, संकट के दिन बीत गये।।
आसतीन के उन साँपन को लव है पता लगा हमनें।
पै का करें और का कै दें सोच बतइओ का करनें।।८।।

अपँई जाँघ उघारौ तौ लाजन तौ अपुनइँ कों मरनें।
बात सई तौ जइ है बेटा! अभै न कछु जादाँ कहनें।।
हम बैरी मँहदी हुसैन कों बिना तलासें नइँ रैंहैं।
बस तुमाए चम्पत काका ई पूरी बात तबइँ कैंहैं।।६।।

बातन-बातन तैस आ गओ उठ ठाड़े भए झटका सें।
उतई टहलन लगे, देख कइ कुँअर देव नें कक्का सें।।
सान्त भाव हरदौल कै उठे, काका! जे बातें छोड़ौ।
होकें सान्त सुनो जो कै रए, अपँव ध्यान इतकों मोड़ौ।।१०।।

पूर्व जनम के काउ पाप को फल जो स्यात् मिलो होबै।
दुक्ख भोग के बदलें सुभ के रबि को उदय भओ होबै!!
सोचौ बा बिस बुझी कटारी जाँघइ में काये लगती।
सीधी-सीधी आकें बा काका जू! छाती में घुसती।।११।।

ईसुर की किरपा सें भारी संकट छोटे में टर गव।
करो न चिन्ता, अच्छे कों भव मानो काका! जो कछु भव।।
अब तौ अपुन हुसैनें उर सड़जन्त्रकारियन कों रन दो।
उनको पाप उनइँ के सिर पै, सो उनई कों भोगन दो।।१२।।

एक दिना सबकों अपने करमन को फल अबसइँ मिल है।
सुभ या असुभ हौयँ कैसेऊ उनके फल सें नइँ बच है।।
जो बोउत नर सो काटत है जातौ सबरेई जानत।
बात उदूलै चायँ कोउ पै साँची तो सठऊ मानत।।१३।।

कैकें मुस्क्याने दिमान जू, कक्का जू अब बोलत हैं।
तुम धरती के देव, देवतइ ऐसो सुभ-सुभ सोचत हैं।।
इतने पैऊ छमा कर सकत, बौइ देव स्रैंनी में है।
पै ई सब तो ना हमाइ कथनी उर ना करनी में है।।१४।।

'जैसे कों तैसो' बालोई पाठ पढ़ो है चम्पत नें।
और मानतउ है ईऐ, करबे की ठानी है मन नें।।
दाव लगत खन जई सूत्र को हम प्रयोग करकें रैंहैं।
जान जाय तौ जाबै पै ईकौ बदलो लैकें रैंहैं।।१५।।

इन बातन कों सुन पहाड़सिंग उर प्रतीत जू ऊब गये।
मनई मन अकबका रहेते, कुँअर भाव कों भाँप गये।।
बाताबरन देख कें बोझिल हल्कौ करबे के लानें।
बात बदल हरदौल कै उठे, सुनो हमउँऐं कछु कानें।।१६।।

बोले, भइया! देखौ अब तौ घाव ठीक हो गव अपनो।
बैदराज सें छुट्टी दिबवा दो ऊबौ है मन अपनो।।
इकदम चौंके हैं पहाड़सिंग, बोले, हाँ-हाँ, देखत हैं।
पै बे कहैं न जौलों तौतक कों तौ हमऊँ रोकत हैं।।१७।।

बात और है दिना-दो दिना की फिर तौ छुट्टीअइ है।
कहूँ समिस्या नइयाँ कौनउँ राजकाज सब ठीकइ है।।
जई बीच जलपान लयें आईं हैं चम्पा म्हाँरानी।
देख एक सँग परिवारी जन रानी मन में हरसानी।।१८।।

सोच रई म्हाँरानी जू कित्तौ नींकौ लग रव घर में।
संग बैठ बतया रए सबरे, घर को सुख मिल रव घर में।।
परिवारीजन एक ठौर जब बैठ प्रैंम सें बतयाबैं।
कित्तौ आनँद आउत सबई मिलत–हँसत–सँग–सँग खाबैं।।१९।।

बूझें इक दूजे को सुख–दुख उर आपुस में मिल बाँटैं।
जित्ती होय सामरथ मिलकें कलह और संकट काटैं।।
का मजाल बैरी की जो फिर आकें हमसें टकराबे।
सबइ स्वस्थ–पिरसन्न रहें सुख–सान्ती हर परिजन पाबै।।२०।।

मन प्रसन्न रानी नें करवाओ जलपान सान्ति छाई।
एकाएक सुन चौंके ते सब करुन चीख इक जब आई।।
गरो फार नर्राय रई ती कछू दूर कौनउँ नारी।
हियौ बिदारक करुन चीख आ कमरा में भर गइ सारी।।२१।।

उठ बैठे हरदौल सुनत खन बोले, धरमपाल! जाओ।
पतो करो को रो रव तुरतइँ कारन ऊकौ बतलाओ।।
पता लगाबे घटना को गव धरमपाल भागो–भागो।
इतै कुँअर के उठबे पै सबके मन अपनोपन जागो।।२२।।

कोउ कहै बेकार उठ रये, अभै घाव नइँ ठीक भओ।
कोउ उर्हानो देवै, कोऊ घाव देखबे पास गओ।।
दए ऊतर उननें सबके पै ध्यान चीख पै रव उनको।
कभै आय! बौ धरम बताबे, दुखी हो रऔ मन उनको।।२३।।

धरमपाल आ बोलो है सरकार एक बिटिया रो रइ।
छूट रहे हैं बाप–मताई, गौनें ससुरारै जा रइ।।
डँकराउत भइ बिटिया पौंची तब हरदौल महल सन्मुख।
औरउ मरम बिदारक क्रन्दन कर रोई उतईं कर मुख।।२४।।

हँसीं मौं बना हीरादेवी बोलीं, बिटियाँ गाँवन कीं।
ऐसे सुरन रोउतीं जैसें अम्मा मर गइँ हों उनकीं।।
पै अति कोमल हियौ कुँअर को तलफौ, बे नइँ सह पाये।
कूँद परे तुरतइँ पलका सें नंगे पावन उठ धाये।।२५।।

कमरा सें कढ़कें सिड़ियन सें उतर दौर बाहर आये।
फूलबाग सें बाहर पौंचे बिटिया के ऐंगर आये।।
रो का रइती, घसिट-घसिट कें आँगूँ कों बौ रिंग रइती।
रोकी बिटियै और उनें जिनके सँग जबरन चल रइती।।२६।।

बढ़े बिटीना के ससुरारी हरदौले पिरनाम करो।
अपनो परचै दै बोले, कछु गल्ती भइ तौ माफ करो।।
नगर ओरछा में म्हाँराजा जू! मौड़ा ब्याहो अपनो।
सौंनी पातीराम हमाये समधी, ई नातौ अपनो।।२७।।

करा बिदा गौंने की बिटिया हम लिबायँ जा रए उनकी।
भौत चुपा रए सबरे पै नइँ मान रई बौ अम्मउँ की।।
करत हुऔ आराम अपुन ऊमैं रोबिन सें भइ बाधा।
का कयँ बिटियाँ बुरें रोउतीं, छमा करो का कयँ जादा।।२८।।

सुन बोले म्हाँराज, अपुन उनके समधी तौ अपने हौ।
हमें जान कें खुसी भई तुम सबइ हमाए पाँउने हौ।।
अपुन सबइ सें एक निबेदन करबे हम दौरे आये।
नाहीं जिन करिओ ऊके लानें, जो हम कैबे आये।।२६।।

बस्स आज की रात अपुन कों घरै हमाये रुकनें है।
बिटिया सैत सबइ कों रैकें ई घर पावन करनें है।।
प्यारेलाल सुनार ससुर बिन्नू के बोले, जो आग्या।
हम तौ ताबेदार तुमाये बिनय करो जिन म्हाँराजा।।३०।।

कय सुनार, डिर लगत मोय, गल्ती को देव डंड हमकों।
मुगल भूप देखे हैं उनको भै मारें डारत सबकों।।
मुगल-पठान न हम हैं बल्कें मुगलन सें रच्छा कर हैं।
चिन्ता करौ न सौंनी! भोरइँ आदर सैत बिदा करहैं।।३१।।

लिबा बिटीनैं गये दुर्ग में करो बहन जैसो आदर।
अतिथि कच्छ में ठैरा दव गव सब मेंमानन कों सादर।।
अति नौंनो रनिबास त्रियाँ आ गइँती ऊ कमरा भीतर।
सबनें दइ बिन्नुयै दिलासा भीतर गइँ लिबाय सादर।।३२।।

धुबा हाँत-मौं, करवाकें जलपान, प्रैंम सें बैठारो।
आई चम्पावती बिटीना पै कर फेरौ-पुचकारो।।
बोलीं हँस-मुस्क्या कें रव, हरदौल लगैं तेरे भइया।
भौतइँ नेक दयालू हैं उनकों प्यारीं बहनें-बिटियाँ।।३३।।

चलो तुमें मिलवाबें उनसें, मन में भ्रम भै जिन मानो।
भरी मनुजता कूट-कूट हरदौलै देव पुरुस जानो।।
गईं लिबा हरदौल-कक्छ में बिटिया कों मन हरसाकें।
उऐ उचित आसन बैठारो, धरमपाल नें कइ आकें।।३४।।

उचित बिवस्था सबइ पाँउनिन की माराजा बनवाई।
आसन, सुल्पाहार, भजन-भोजन सब सुबिधा करवाई।।
हो सन्तुस्ट कुँअर नें कइ, होबै ना कस्ट पाँउनन कों।
रखिओ ध्यान, सबइ सें कइओ, भोर बिदा करनें उनकों।।३५।।

बिन्नूँ तर मौं कर बोले, बहना! का नाव तुमाओ है ?
बिन्नूँ बोली, महाराज! सावित्री नाव हमाओ है।।
साबित्री! 'म्हाँराज' हमें तुम भूलउ कें अब जिन कइओ।
हम तुमाए भइया हैं सो बस 'भइया' भइया सें कइओ।।३६।।

'भइया!' कह सावित्री इकदम रोई हिल्की भर आई।
अँसुआ बहैं औल्तियाँ जैसें, बौ कछुअउ नइँ कह पाई।।
हाँत फेर चम्पा नें ऊऐ दई दिलासा समझाओ।
बोलीं, भइया तौ हैं जे अब तुम नेंकउँ ना घबराओ।।३७।।

मरम बिदारक रुदन बिटीना को सुन सबई दुखयाने।
सँमरी साबित्री बोली, सुच भाव सबइ के पैंचाने।।
भइया! लाज लगत कैबे में, बात मोए बापइ की है।
नाक कटी सौंनी समाज की, हँसी ओरछा भर की है।।३८।।

कोउ ओरछा की बिटियँन कों काये कों ब्याहन आहै!
सुन हमाए बापू की करनी मौं हर कोऊ बिदकाहै।।
करौ बौइ भइया! बापू नें सोइ सोच हम डिड़याबैं।
बैंच खाव जेबर हमाव सब, सो न काए हम फिफयाबैं।।३९।।

चढ़ो ब्याव में जित्तौ जेबर ससुर साब नें मोय दओ।
एकउ चीज न रै गइ हम पै बापू नें सब बैंच दओ।।
का दिखायँ मौं ससुरारै जा, का उत्तर उनकों दैहैं।
भर उसाँस साबित्री बोली, प्रान अपँए हम खो दैहैं।।४०।।

मरैं चाँव तौ मौंत न आउत, जियैं चाँव तो बस नइयाँ।
कैसी गत है इन प्रानन की, सोचो कछु उपाव भइया!!
इतै पिता, ससुरार उतै, है भार दोउ कुल लाजन को।
दो पाटन के बीच पिसैं, है कैसो जीवन तिरियन को।।४१।।

सइ कैदो जीकी सो बैरी, दुख की मूल बनत नारी।
सबइ भाँत के दुक्ख भोगबे, रची गई बौ बेचारी।।
ना-ना बहन! न कव ऐसी, चिन्ता छोड़ो अँसुआ पौंछो।
सब जेबर दैकें पौंचें हैं, अब जिन कछु जादाँ सोचो।।४२।।

अब तौ जा बताव ल्यायींतीं तुम जेबर कितनो का-का?
बैंच खाव है जो बापू नें, चइऐ अब तुमकों का-का ??
चाँदी की गूजरी और कछु चीजें तीन सेर भर कीं।
हतीं पाँच चीजें सौने कीं जो पउआ-पउआ भर कीं।।४३।।

सुन भइया हरदौल देव नें धरमपाल कों टिरवाओ।
कही, सराफै जाओ अभईं अमुक-अमुक चीजें ल्याओ।।
डेड़ सेर सौने की होबैं, पाँच किलो चाँदी कीं हौं।
सुघर लियइओ जो भौजी कयँ, सइ सौंने चाँदी की हौं।।४४।।

बूझौ जेबर म्हाँरानी सें, नाँव-नमूना लिखवा लव।
साबित्री की राय लै लई और सराफा पौंचा दव।।
उतै धरम गए इतै बैठ सब आपुस में बातें कर रए।
ई समाज, परिवार और बौहारन पै चरचा कर रए।।४५।।

रीति-कुरीति - रूढ़ियन पै भईं कइयक बातें आपस में।
उनको सई रूप रक्खो हरदौल कुँवर नें उन सब में।।
रीति-नीति बौ उत्तम जीमें होय लोकहित नेह मिलै।
परम्परा बौ नींकी जीमें जन-मानस कों ओज मिलै।।४६।।

बे जन परिबारी हैं जो काऊ को दुख सुन दौर परैं।
जात-पाँत उर ऊँच-नीच तज मानवता सें प्यार करैं।।
देस-धरम-जनरक्छा के लानें जीबै सो बलिदानी।
सदाचरन पालै-पलवाबै है बोई सच्चौ ग्यानी।।४७।।

नारी सक्ति सरूपा है - भगनी-भार्या-बिटिया माता।
सबइ रूप सम्मान जोग, सबई जन-मानस सुखदाता।।
पौरुसबान सोइ जो मानव-मानवता को मान करै।
अपँए आचरन सें समाज को सबइ भाँत उत्थान करै।।४८।।

आ गए धरमपाल जेबर लै जैसो दव आदेस गओ।
लै हरदौल देव नें साबित्री कों बकसा सौंप दओ।।
पहनो बहन! आ गओ जेबर देख लेव वो कैसो है।
देखो उर कछु पैंनो, साबित्री नें कइ सब नौंनो है।।४६।।

बो सरम्यानी सी मुस्क्यानी, आँखिन में अँसुआ छलके।
खुस भइ मनई मन बोली, ऐसे होबैं भइया सबके।।
मनई मन दै रइ असीस, भइया हरदौल अमर होबै।
राखी लाज हमाइ प्रभू! इनको ना नीचौ सिर होबै।।५०।।

लिबा लै गई रानी भीतर उर भौजी सें मिलवाओ।
कछू देर भईं हँसी-ठिटोलीं, साबित्री मन हरसाओ।।
सँग-सँग भोजन करो बैठ कें, कौनउँ छल-दुरभाव बिना।
साबित्री घुल-मिल गइ उनमें, नीसंकोच-छलाव बिना।।५१।।

रानी के सँग रात बिताई साबित्री नें ननदी सम।
मेंमानन की खातिरदारी भई बराती-समधी सम।।
भोर भई तइयार भये सब उर सबनें जलपान करो।
साबित्री को कुँअरि हिमांचल भौजी नें तइयार करो।।५२।।

म्हेंदी-माहुर खुदईं करो, पकवान पिटारी सजवाई।
सावित्री की ननदबाइ जैसी तइयारी करवाई।।
तिलक करा हरदौल कुँअर नें सबइ पाँउनिन को सादर।
बिदा करो हरदौल-हिमांचल नें दैकें सबकों आदर।।५३।।

सजल नैंन हेमा नें साबित्री कों छाती चिपकाओ।
साबित्री भेंटी भौजिन सें नैंन नीर नइँ थम पाओ।।
भींगी पलकन भई बिदाई, धन्न-धन्न हरदौल कुँअर।
धन्न-धन्न बहना साबित्री, धन्न ओरछाधाम नगर।।५४।।

'साबित्री की भई बिदाई' उर 'मेंमानी' की चरचा।
सिगए ओरछा में फैली उर घर-घर में छाई चरचा।।
तबई सें हरदौल कुँअर नें पाओ सम्बोधन 'भइया'।
बहनें-बिटियाँ-बाल-ब्रध्ध सब लगे कैन 'भइया'-'भइया'।।५५।।

इतनो उम्दा काम करो पै भी अनासक्त हरदौल रहे।
साधु सन्त सम मिली कीरती में भी बे समभाव रहे।।
ई घटना उपरान्त देव नें करी बिबस्था इसथाई।
नगर ओरछा भर में उन्नें जई घोसना करवाई।।५६।।

नगर ओरछा सें जैहै होकें जो बिटिया-बहन बिदा।
पूरी तभई मानी जैहै करें हिमांचल कुँअरि बिदा।।
चाँयँ जौन होबै बिरादरी, जात-बरन की बौ बिटिया।
धरम आदि की आड़ें आहै ऊ में ना कौनउँ टटिया।।५७।।

बिटियन नें जा सुनी सूचना उनके मन उल्लास भओ।
बढ़ौ सबइ में अमित आत्मबल रक्छा को बिसवास भओ।।
दई असीसें मनई मन, जुग-जुग भइया हरदौल रहैं।
करें प्रार्थना परमेसुर सें, हर संकट सें दूर रहैं।।५८।।

✵ दोहा ✵

दीन-हीन नर-नारि सें जिनकों भौतइँ प्यार।
नगर निबासी कुँअर की बोलें जै-जैकार।।३।।
नगर ओरछा में मिलो बिटियन कों सनमान।
सबई के भइया बने, जै हरदौल महान।।४।।
नारि सुरच्छा-मान बिन नइँ समाज उत्थान।
जो मानत-पालत इऐ सोई पुरुस महान।।५।।

—●—

सर्ग : आठ
ओरछा में दंगल

❋ दोहा ❋

जन – मन रंजन हेतु सें कुँवर कराउत खेल।
दंगल, मेला आदि सें बढ़त परसपर मेल।।१।।
पुरस्कार–प्रतियोगिता भरत मनुज मन ओज।
निज प्रतिभा समरिध्धि हित करत रहत नइ खोज।।२।।
फूलबाग मैंदान है, नागपंचमी पर्ब।
कुस्ती आजोजन भओ, सबई के मन गर्ब।।३।।
उतरत साउन पंचमी जंगी मेला होत।
आउ्त देस–परदेस सें देखन जनता भौत।।४।।

❋ छन्द ❋

बीरभूमि बुन्देलखण्ड में है बिख्यात भौत कुस्ती।
गाँवन–गाँवन मिलत अखाड़े और पहलवानी मस्ती।।
होत कइयकन जगाँ गाँव में कुस्ती दंगल साउन में।
और साउनउँ छोड़ होत हैं और–और तौहारन में।।१।।
खात दूद–घी–मेबा ऐंनइँ करत रियाज सालऊ भर।
पहलवान पट्ठा हमाइ थाती मानो भारत भू पर।।
पहलवान तन–मन संयम सक्ती की हैं साँची प्रतिमा।
का बुन्देलखण्ड, जे पट्ठा सारे भारत की गरिमा।।२।।
है कसरत ना नई चीज ना अचरज भारत के लानें।
है प्राचीन काल सें, सक्ती अरजन–बरधन के लानें।।
नगर ओरछा फूलबाग में हती एक साला सुन्दर।
जियै कुँअर हरदौल देव नें खुदहँ बनाओ तो रुचकर।।३।।

निज बिबेक-कौसल सें साला की रचना करवाई ती।
बइ साला ब्यायाम थली कों मेला में सँजवाई ती।।
स्वागत द्वारे बनवाये उर धुजा-पताका लगवाये।
लगे सामयाना छाईं कों बन्दनबारे बँधवाये।।४।।

पानी दूद मलाई रबड़ी-टाल सजे बाके लानें।
अलग बिबस्था पैलवान उर आए पाहुनन के लानें।।
दंगल-मेला-उत्सव देखन सबरी जनता उमड़ परी।
जीकी जामैं रुची हती पिरजा जा-जा उतई बिखरी।।५।।

"साला में कुस्ती आयोजन, ऊमैं जो बिजई हुइऐ।
'सरदूल बुन्देलखण्ड' ऊ बिजई की पदबी हुइऐ।।
सबा लाख सौंने की मुद्राँ बिजई कों सँग में मिल हैं"।
पैलें ऐसो कभउँ न भव तौ, भाग्ग बिजेता के खुल हैं।।६।।

ऐसी हती घोसना, साठा पाठा बनबे कों दौरे।
कच्छा, चड्डी और लँगोटा सब खरीदबे कों दौरे।।
खरदउआ ई माल दुकानन पै जा थोकन में ल्याये।
बरसन पैलें पैलवान रए बेऊ फिर सें मनवाये।।७।।

नगर ओरछा में आई ती मानो बाढ़ अखाड़िन की।
तला, बगैचा, नहर-नदी तीरें दिख रइ सोभा इनकी।।
गूगर धूप कपूर आदि की मँहक अखाड़िन पै छाई।
नगर ओरछा भर सुगन्ध सें मँहकौ जैसें फुलवाई।।८।।

बादामी बरफी, बादामी ठंडाई की बूझौ जिन।
चौराहिन पै सजीं दुकानन पै मिल रईंती ढेर-मनन।।
दिन भर छानैं पैलवान फुरसत दुकानदारन कों काँ!
माल पुजैबौ मुसकिल पर रव आमदनी आँकत को काँ!!९।।

एक करहिया दूद मात्र दो मल्लइ लैकें पी जाबैं।
होड़ लगी ती जउ में केसर उर इलायची बे चाबैं।।
छोड़ तमाकू और सिपारी, चिलगोजा-किसमिस खाबैं।
मालिस करत मलाई की, अब तेल न कौनउँ मन भावैं।।१०।।

सारदूल बनबे की इच्छा, पाँव पबनसुत के दाबैं।
लैबे कों बरदान बिजै को सबइ मन्दिरन में जाबैं।।
आलस थर-थर कँप कें मानो नगर ओरछा त्याग गओ।
भै के मारें आलस मानो भाग बेतवा पार गओ।।११।।

बल बिक्रम पौरुस अब मानो घर-घर लगो करन चुहलें।
सिगयँ पैलवानी की बातें, पहलवान गलियन टहलें।।
हती घोसना पैले सें, अब नागपंचमी नगच्यानी।
उतसुकता बढ़ गइ पट्ठन की मानो तागत उफनानी।।१२।।

अब सबई जी जान करें अभ्यास नये हतकन्डन के।
आये पूरी तइयारी सें मल्ल कैउ परदेसन के।।
बुन्देला हरदौल देव नें राजकीय दव संरक्छन।
खान-पान-आबास-र्‌याज की करी बिबस्था भौत सनन।।१३।।

नागपंचमी मेला मानो लगो पंचमी के पैलइँ।
नगर-दुकानन की सज्जा हो गइती मेला के पैलइँ।।
कुसल प्रबन्धक मेला के श्री चम्पतराय नियुक्त भये।
पानी-छाँई और सुरच्छा, करे सबइ पिरबन्ध गये।।१४।।

मुख्ख मल्ल बालाप्रसाद नौंनी ब्यायामथली को है।
कुस्ती को उस्ताद उमर में हरदौलउ सें कम को है।।
फूलबाग के कदली बन में बौ लगायँ तौ सीसासन।
एक दिना भर सेस बचो तइयारी में है सबको मन।।१५।।

फूलबाग के सबई माली फूल चुन रहे उपवन में।
मेला उर कुस्ती आयोजन को हुलास सबके मन में।।
फूलबाग को पिरमुख माली हरीबंस की जो बिटिया।
'बेला' नाव किसोरी आई फूल टोरबे कों बगिया।।१६।।

संग सहेली चन्द्रकला के, कदली बन के पार गई।
गई मौंगरा फूल टोरबे, बेला इकदम चौंक गई।।
ठिटकी फिर बालाप्रसाद कों देख ढिंगइँ जा पौंची बौ।
देख उऐ खिलखिला हँसी उर चन्द्रा सें हँस बोली बौ।।१७।।

चढ़त उमर बेला कों सूजी चुहल सखी सें बौ बोली।
सुना-सुना कें बाला कों कै रइ सब बेला अलबेली।।
सारदूल कल कोऊ बन है राज बिबस्था सिगईं भईं।
परौं प्रजा तर सें कर हैं हम आजोजन अदभुत अलगईं।।१८।।

चन्द्रा बोली सो ऐसो का हूऐ हमऊँ सुन लेबैं।
कौन कल्पना उपकारी मन आई हमऊँ गुन लेबैं।।
सुनो सखी कल्पना हमाई चाँयँ जौन हो हँसियो जिन।
भलें बड़ाई ना करिओ पै तनिकउँ बात काटियो जिन।।१९।।

री बेला! कह साफ-साफ जोजना कौन सी है मन में।
री चन्द्रा! सुन हम बताउ्त हैं जो कछु आई है मन में।।
जो भी पुरुस ऊर्धमुख लटकै और अधिक लटको रैहै।
'चमगादड़ी राज्य के राजा' की पदबी बौ पा जै है।।२०।।

दोउ एक दूजे कों धकया कें हँस लोट-पोट हो गईं।
पाँव अधर सें लए समेट बोलो, काये ब्हैबल हो रईं।।
बोलो, ई मौलिक रचना पै देत बधाई हम तुमकों।
कायेसेंकै सिर्फ प्रसंसा होत पसंद देबियन कों।।२१।।

बात बिरुध्ध न कछु कैनें है, पैलेसेईं रोक लगी।
तौ फिर ब्यंग बात काये कइ, भौत अलौनी मोय लगी।।
तुम तौ सिस्टाचारउ भूले जो सामाजिक साधारन।
पहलवान जू! सुनो, अपुन नें करो नियम को उल्लंघन।।२२।।

भले आदमीं बात करें दो, काए तीसरौ आ बोलै!
बिनईं मतलब टाँग अड़ाबे, काये अपनो मौं खोलै!!
बेला! बात तीसरेऊ की सीखौ सुनबौ उर गुनबौ।
तौइ सइ चलत जा संसारी, छोड़ौ बिरथा मद करबौ।।२३।।

हतो आदमी इतै तीसरौ और साधना में ततपर।
तौ फिर बाधा काये डारी तुमनें देवी! खिस-खिसकर।।
बात इतेक जोर सें कइ जो साफ सुनाई दै जाबै।
उर बाधा अबसइँ हमाइ ब्यायाम साधना में आबै।।२४।।

तनिक तनाव आ गओ भौं पै बेला बाला सें बोली।
हम का जानें कोउ हमाई सुनत इतै छिप कें बोली।।
हमनें जानी सिबा हमाये इतै और कोऊ नइयाँ।
तौ का बेला तुमें अभइँ सें सूजत साफ–सई नइयाँ!!२५।।

जा कैसें कइ बाला तुमनें, कतई ऐसो तौ नइयाँ।
तौ काये सामूँ सीसासनरत बाला सूजौ नइयाँ।।
अबउँ भूल रए पैलवान जू! तुमें बूझबौ जा चइये।
देख अपुन कों हमें का लगो, हमसें जानें जा चइये।।२६।।

कैकें बेला हल्की सी मुस्क्याई उर फिर सान्त भई।
चुहल भाव भाँपो बाला नें भाव बदल अब बात भई।।
किरपा करकें जौइ बता दो का समजो तुमनें हमकों!
सीर्सासन में तुमें लगो का? दूर करो मन के भ्रम कों।।२७।।

फिर तिरछी हेरन कर देख बोली, साफ–साफ हम तौ काबैं।
पै संका है बुरौ मान कें रुस्ट अपुन ना हो जाबैं!!
कहौ बिना संकोच कुमारी कछुअउ जिन राखौ मन में।
बात अन्नथा कछू न लैंहैं, कै डारौ जो हो मन में।।२८।।

तब तौ सुन लो, हमनें जानी कौनउँ जनी आइ हुइऐ।
फुलबगिया में दो मूँसर घर सें ल्याकें धर गइ हुइऐ।।
पै जब पाँव तुमाये नेंचें आउत देखे अचरज भव।
ऊपै सोची, मूँसर हैं पै हैं चेतन जो नइँ संभव।।२९।।

पै जब देखौ तुमें, अपनियइ जीब काट लइती हमनें।
सोची, अरे! अपनिनइँ में है, गलत सोच लइती हमनें।।
बेला के बिचित्र बचनन पै लोट–पोट हो गव बाला।
बेउ दोउ हँस लोट–पोट भइँ, जौं कान्हा पै ब्रजबाला।।३०।।

एक दूसरे कों धकयाउत भइ जोड़ी आँगूँ बढ़ गइ।
बालउ नें मुस्क्या कदलीबन छोड़ौ साला की सुध लइ।।
ई घटना कारन बाला–मन रहो भटक जानें काँ–काँ।
काया लगी डन्ड बैठक में, घूमै मन जानें काँ–काँ।।३१।।

जैसें-तैसें नित्त क्रिया निबटाई बाला गव घर कों।
बस में नइयाँ ऊके, ईसें छुट्टाँ छोड़ो निज मन कों।।
परैं-परैं बिन सोचेंई मन में इक आवै इक जावै।
कारे कोरन बाले मौंटे नैंनन में धँस-धँस जावै।।३२।।

सुघर गुलाबी ओंठन की मुस्की सें मन जुर जुर जावै।
सुघर किसोरी उतै बिकल, उन दोउन कों को समजावै।।
जब किसोर सें युवा उमर में काया-मन पिरबेस करैं।
प्रैंम रेग लग जात उनें बिरलेइ होत जो बच निकरैं।।३३।।

भरो किला मैंदान खचाखच नागपंचमी बाले दिन।
भओ ओरछा में कुस्ती को नामी दंगल आजोजन।।
पैलवान नामी भारत के आये हैं आजोजन में।
चम्पतराय प्रबन्धक नें जोड़ीं बनवाई हैं उनमें।।३४।।

भव दंगल अब सुरू दस बजें तुरत घोसना करवाई।
नियम सुनाये सब कुस्ती के, सई बिबस्था बनवाई।।
अपने-अपने दाँव-पैंच करतब दिखाए हैं सबई नें।
ऐंन मजा लै रहे दिखउआ, दई दाद उन सबई नें।३५।।

कोउ छरैरे बदल, कोउ लग रहे भीम देही बाले।
चौड़ी छाती, उन्नत कंधा, पैलवान कुस्ती बाले।।
मछलीं लोटैं जाँघ-भुजन पै काया सें पौरुस टपकै।
ठसक चाल में अलबेली हर कोउ उनें देखन लपकै।।३६।।

हारौ कोउ, कोउ जीतौ पै बैर न पालें अन्तस में।
प्रैंम देखबे जोग हतो उन सब मल्लन को आपुस में।।
भईं कुस्तीं हो गई दुफरिया, मल्ल एक आँगूँ आओ।
प्रथबीसींग बिजावर बालो, बीच अखाड़ें चिल्लाओ।।३७।।

घुमा लँगोटा अपनो बोलो, लड़ैं चाँयँ सन्मुख आवै।
जोड़ करै हमसें बौ आकें अपनो करतब दिखलावै।।
'सारदूल बुन्देलखण्ड' की मोय मान्यता दइ जावै।
है ऐलान कोउ दंगल में मल्ल होय आ टकरावै।।३८।।

भौत देर भइ कोउ न आओ प्रथबी को मद भव दूनो।
बेर-बेर बौ ताल ठोक कें कहै ओरछा है सूनो।।
बात साफ भइ बिनइँ लड़ैं प्रथबी जा पदबी हतयैहै।
सबा लाख सौने की मुद्राँ पा बिनई मेंनत लैहै।।३९।।

हतो उतइँ बालाप्रसाद भी बिकल भौत अपने मन में।
निरनै नइँ लै पा रव तौ बौ, भौत कसक ऊके मन में।।
सबकें कसक, करै का बाला, सूजै ना उपाव ऊकौं।
बइ मेला में बेला आई, बाला नें देखौ ऊकौं।।४०।।

आँखें मिलीं दोउअन कीं भइँ बातें आँखन-आँखन में।
अजब दसा देखी बाला की प्रस्न हतो उन आँखन में।।
बेला नें जो कइ आँखन सें, बाला तन रोमांच भओ।
धिक्कारत मनई मन खुद कों, जनम अखारत मेव गओ।।४१।।

पीर और तब बढ़ी, उतारै दिखा-दिखा बेला चुरियाँ।
ब्यंग भरी मुस्की ढीली ती हतीं न ऊ संगै गुइँयाँ।।
तड़प उठौ जी देखत चुरियाँ हियरा जाय फटो ऊकौ।
चीरत भीड़ तुरंतइँ बढ़ गव, अब बल जिन तौलौ ऊकौ।।४२।।

'का चुप साधि रह्यो बलवाना' द्रस्स घूम गव आँखन में।
लगै बीर रस पैरो नस-नस, सुन परबत सम भव मन में।।
फैंक दये उन्ना उतार कें और सँमार लँगोट लओ।
प्रभू रामराजा को सुमरन करकें आँगूँ पौंच गओ।।४३।।

लई अखाड़े की माँटी उर अपने तन पै मल डारी।
. उतरौ बाला पैलवान अब जनता हती सन्न सारी।।
पिरथीसींग देख मुस्क्यानो, हँसी खिलखिला कें जनता।
ठोकत चम्पतराय पीठ, तौलत मन दोउन की समता।।४४।।

बोले बेटा! देख तुमाई हिम्मत भौतइँ हर्स भओ।
पै किसोर बय अभै तुमाई, सबइ हौसला ब्यर्थ गओ।।
उम्मर पन्द्रा साल अभै है तुम बयस्क नइँयाँ बाला!
पिरथी और तुमाई कुस्ती को नियमइँ नइँयाँ बाला!!४५।।

बोलो बाला, कक्का जू! जा बात अपुन कर रए कैसी!
घोसित नियमन में न डरी ती, सर्त बताउत तुम जैसी।।
उम्मर के बन्धन की कौनउँ बातइ नइँ खोली गइती।
तइसें है सुइकार चुनौती, कहौ घोसना का भइती।।४६।।

बात ओरछा की है अब तौ उम्मर की बिलकुल नइँयाँ।
बीच अखाड़ें ताल ठोंक बोलो, काऊ से कम नइँयाँ।।
सीना तान हो गओ ठाड़ौ बीच अखाड़े में आकें।
जनता कर-कर ब्यंग हँस रई, रोकें तौ कैसें रोकें।।४७।।

'जीतेगा भइ जीतेगा', 'बस बाला अपना जीतेगा'।
बाला के संगी इक सुर चिल्लाये, 'बाला जीतेगा'।।
बारेलाला आपा खोकें बोलो, बाला बिजई हो।
टाँची खोल असरफीं उल्लाईं, कह, बाला बिजई हो।।४८।।

फिर पूरी तागत चिल्लानो पै 'बाला की......' कह पाओ।
'जीत होय' ई एक अकेलौ खुल बेला को सुर आओ।।
अब तौ आधी पिरजा, 'जै हो', 'जै हो' कह कें चिल्लानी।
गूँजी भारी गूँज गगन में, अब को बाला के सानी।।४६।।

पहलवान पिरथी मुस्काकें उतर अखाड़े में आओ।
फैंक हाँत की माँटी ऊपै बौ मनई मन इतराओ।।
बाला उर पिरथीसिंग भिड़ गए कुस्ती अब प्रारम्भ भई।
प्रथबी नें बाला की हस्ती 'गीली माँटी' आँक लई।।५०।।

उऐ काँच को कंचा मानो और लगो खेलन मानो।
पै भिड़तन खन रौम-रौम प्रथबी को मानो सन्नानो।।
बौइ ओरछा बाली गीली माँटी अब फौलाद लगी।
सावधान भव प्रथबी ऊके तन-मन मानो आग लगी।।५१।।

प्रथबी नें बाला कों जैसइँ जकड़ैं चाँहो बाँहन सें।
बाला बदन छरारो छिटको और अलग भव हाँतन सें।।
उछलो अपने पंजन पै, चढ़ गव पृथबी के कंधन पै।
बैठी जनता ठाड़ी हो गइ, खुसी छाइ सबके मन पै।।५२।।

बर्जी तारियाँ सुनकें बौ भारी भरकम काया धारी।
क्रुध्ध भओ कंधन पै देख़ौ लघु बानर की उनहारी।।
पाँव जकड़ लए प्रथबी नें कंधन पै ठाड़े बाला के।
तुरतइँ बाला नीचें लटकौ पाँव चपेटे ते बाके।।५३।।

पकरें-पकरें पाँव झट्ट प्रथबी नीचें आ धम्म भओ।
पकरें पाँव दोउ दोउन के देखन लायक द्रस्स भओ।।
गेंद नाइँ बे बीच अखाड़े में दोऊ पट्ठा लुड़कें।
कोउ काउ के पाँव न छोड़ै कुस्ती हो रइ ती जमकें।।५४।।

तीन दिना सें हो रए जोड़न में है ई सबसें अद्‌भुत।
कोउ काउ सें कम नइँ पर रव दरसक हैं आचरज चकित।।
उलट-पुलट ढोलक से ढुरकें पैलवान गुत्थमगुत्था।
जितकों जाबै जोड़ी उतकों जाय दिखउअन को जत्था।।५५।।

हती देखबे जोग दिखउअन के तन-मन की प्रतिकिरिया।
गड़ी हतीं आँखें जोड़ी पै, हती खचाखच फुलबगिया।।
कोउ ओंठ दाँतन में दाबें, मूँठा कोउ कसें अपने।
कोउ-कोउ भौं बायें देखें, कोउ दाँत पीसें अपने।।५६।।

ठाड़े कोउ, कोउ बैठे, नुहरे घूँटिन पै हाँत धरें।
जोड़ी जाय तितइँ आँखें, देखत भए सरकें अधनुहरें।।
द्रस्स देखबे जोग और अति अचरज सें भरपूर हतो।
पउआ एक, दूसरो पौंना कतइ न उनको मेर हतो।।५७।।

मैंड़ अखाड़े की आई तौ बाला छिटको है इकदम।
बौ छलाँग मारी, प्रथबीसिंग चित्त अखाड़े में भव धम।।
तुरतइँ बाला बढ़कें प्रथबी की छाती पै ठाड़ौ भव।
धनुस राम नें टोरौ तैसइँ आँख झपकतन खन जौ भव।।५८।।

तुरतइँ उठ हरदौल देव नें बाला कों चिपकाय लओ।
उऐ खुसी सें उठा गोद में कंधा पै बैठाय लओ।।
जनता को उल्लास न बूझौ घोर बँधी जैकारन की।
ऐसो जैकारा गूँजौ कै कँपीं दिबारें महलन की।।५९।।

कंधा पै बैठार देव नें प्रैंम और सम्मान दओ।
पैलवान बाला प्रसाद बुन्देलखण्ड की सान भओ।।
कन्धन-कन्धन बाँहन-बाँहन फूलबाग बाहर निकरो।
बाला सीधौ द्वार रामराजा जू के मन्दिर उतरो।।६०।।

बाला नें सास्टांग बिजय राघव कों लोट प्रनाम करो।
कई, राखिओ हरदम किरपा, जइ किरपा श्रीराम करो।।
बिना तुमाई किरपा भगवन! पत्तउ हलत न है जग में।
करता-धरता तुमइँ सियावर! दइ तुमाइ तागत हममें।।६१।।

गरैं लगाबैं सब बाला कों, कोउ जेट भर चिपकाबैं।
सबइ बधाई देत उऐ अब कौन-कौन कों गिनवाबैं।।
भौत देर लौं जौइ चलत रव संजा की हो गइ बेरा।
रात समापन भव मेला को पुरस्कार की भइ बेरा।।६२।।

'सार्दूल बुन्देलखण्ड' बाला प्रसाद अब घोसित भव।
दै उपाधि सम्मान करो, अब सबई को मन हरसित भव।।
राजकोस सें सबा लाख सुबरन मुद्रन की भेंट दई।
बुन्देला हरदौल देव नें पैंना पुस्पन माल दई।।६३।।

बय में छोटे बाला नें हरदौल देव के पाँव छुये।
गुरु समान हरदौल बीर नें आसिस के अम्बार दये।।
अब तौ कैउ जनन नें बाला को आकें सम्मान करो।
अक्च्छत कुमकुम पुस्पहार पैराकें भौतइँ मान करो।।६४।।

आइ अन्त में उतै मंच पै चन्द्रकला के सँग बेला।
बौइ घरी आ गई कि जीकी पिरतीच्छा कर रव बाला।।
देख छबीली बेला कों बाला तुरतइँ उठ ठाड़ो भव।
औचक आँखें छलकीं बाला कीं ऊऐ देखत रै गव।।६५।।

बेला भी पुलकायमान भइ लयें मोंगरा की माला।
कलगी जीमें सजी चमेली, सँमरी पौंची जाँ बाला।।
करत भेंट माला बाला कों, बाला नें नइँ हौंत लई।
सुघर करन में सुघर हार लख गरदन अपैंइ नबाय दई।।६६।।

नार नबायें ठाड़ो बाला, करै बिचारी का बेला!
कछू देर सोचत रइ ठाड़ी, हती परीच्छा सी बेरा।।
निज बिबेक सें कर बिचार देखत है चारउ लँग बेला।
देख सान्ति मनईं मन सुमिरन सियाराम को कर बेला।।६७।।

आँगूँ बढ़ी और पैंनाई है बाला कों जैमाला।
बजीं तारियाँ और असरफीं उल्लाबैं बारेलाला।।
सारदूल पद मंच बनो बौ मंडप प्रैंम सुयम्बर को।
उतै सैकरन भूप बिराजे, प्रैंम मिलन बौ रोकत को।।६८।।

बाला नें बढ़कें बेला कों भेंट असरफी एक दई।
लइ झिजकत बेला नें पै उँगठा सें ऊऐ रगड़ दई।।
तागत सें मल दई, पुतरियाँ मिटीं असरफी की तुरतइँ।
देख सपाट असरफी, बेला नें लौटाई ती तुरतइँ।।६९।।

बोली जा तौ खोटी है, ई देख हँसे हरदौल कुँअर।
कुँअर सैत तारीं बजाइँ सबनें बेला की जै-जैकर।।
मड़वा नेंचें कंगन छूटै लगो कारक्रम बइ जैसो।
देख बधू-बर को कौसल सब हँसत उतै लग रव तैसो।।७०।।

लेत असरफी बाला झैंपौ, आँख फार देखै ऊऐ।
आँक-पुतरियाँ साँचउँ मिट गए, का ऊतर देबै ऊऐ।।
देख-देख मुस्क्याबै बेला, जगी चेतना बाला की।
बीच अँगूठा उर अनामिका धरी असरफी बेला की।।७१।।

धर दाबी दो टूँका हो गइ, उऐ दिखाउत है बाला।
तुमनें जीऐ खोटी आँकी, सुध्ध धातु की है बेला।।
बेला के [illegible] पै ढूँहला बाला नें तुरतइँ मारौ।
मार ठहाका सबइ हँस परे खेल लगो भौतइँ प्यारौ।।७२।।

खबर असरफी उर जैमाला की पौंची ती घर-घर में।
नगर ओरछा में चलकें फैली बुन्देलखण्ड भर में।।
बाला जैसे पैलवान उर बेला सीं बिटियाँ जाँ की।
ऊ बुन्देला बीरभूमि की है ई छोटी सी झाँकी।।७३।।

दोहा

भई समापन घोसना, सब गए निज-निज धाम।
बोले सब जै ओरछा जै-जै सीताराम।।५।।
बाला-बेला सक्ति को सिगयँ हो गओ सोर।
सबइ सराहत बीरता, जुबतीं-जुबक किसोर।।।६।।
धन्न ओरछा भूमि जाँ हैं हरदौल कुमार।
जिन कारन समरिध्ध रव पौरुस को संसार।।७।।
नइ उमंग नव जोस भर करे बीर तइयार।
धन्न-धन्न हरदौल जू! कहै सकल संसार।।८।।
अधिपति होकें राज्य के, मन न रहो अभिमान।
पिरजा सँग घुल-मिल रहे जय हरदौल महान।।६।।

सर्ग : नौ

धरती के देव हरदौल देव

❋ दोहा ❋

सक्ति सरूपा नारि है, आदिगुरू पहचान।
नेह-ओज की सुरसरी, नारी सक्ति महान।।१।।

❋ कुण्डलिया ❋

नारी सक्ती संग हो हियें होय सदभाव।
तौ समाज की प्रगति को रै नइँ सकत अभाव।।
रै नइँ सकत अभाव, सुक्ख रय हर घर-आँगन।
जनमत पूत सपूत सदाचारी माँ कारन।।
जननी सम नइँ कोउ 'श्याम' जग में उपकारी।
सुरगउ सें बढ़ ठौर, जहाँ कुलबन्ती नारी।।

❋ दोहा ❋

नारी कों जी देस-घर, मिलत 'श्याम' दुतकार।
ऊके सुख-सान्ती चमन को हो जात उजार।।२।।

❋ छन्द ❋

'सारदूल बुन्देलखण्ड' बन गव बाला बेला कारन।
जीकी सोचउ नइँ पा रएते, बनो काम बौ साधारन।।
उऐ प्रेरना मिली न होती सक्ति सरूपा बेला की।
बंजर जैसी भूमि डरी ती अतुल सक्ति बा बाला की।।१।।

बाला को मन मान गओ तो बेला नें उपकार करो।
दई प्रेरना ख्याति मिली मन में ऊकौ आभार भरो।।
जइ कारन बाला को मन बेला मेंईं उरझौ रै गव।
बेला को मन भी बाला के प्रैंम भँमर में फँस रै गव।।२।।

एक दूसरे कों चाँहत ते पै न ग्यात का चाँहत ते।
स्यात खुलै आँगूँ रहस्य जो बे आपुस में चाँउत ते।।
एक दिना संजा कें बाला नगर बजारै जा रव तो।
पार करो तो ब्यासपुरा उर तेज गती में आ रव तो।।3।।

औचक रस्ता के पथरा की ठोकर खाकें लगो गिरन।
गिरत बचो, सँमरो, चौंको, बालायै सामूँ देखत खन।।
बेला बाला सें बोली, तुम नाव पलट लेते अपनो।
नामइँ पै तौ ग्रहन लगत है, देखौ जिन दिन में सपनो।।४।।

बाला बोलो, ग्रहन लग चुको, नावइ बदलें का हुइऐ।
तभइँ छूटहै जनम दूसरो जब हमाव बेला! हुइऐ।।
याफिर जी ग्रह की छाया है बौइ ग्रहन कों दूर करै।
याफिर अपनी किरपा कर दे उर सिगये संताप हरै।।५।।

जेइ दोउ बातें हैं जो अब मन कों सुख पौंचा सकतीं।
और न कौनउँ रस्ता सूजत, बोलो बेला! का कहतीं ?
दोउ हँस परे खिलखिलाय कें अब थम कें बाला बोलो।
जानबूझ घर बैठ गईती, बात और कछु या बोलो।।६।।

जब है पूरो सूर्य ग्रहन तौ काए कोउ ऊऐ देखै!
जियै फोरनें होबैं आखें, तौ बाहर निकरै देखै।।
देखत तौ हौ ग्रसित ग्रहन सें अपुन ठोकरें खात फिरैं।
जादाँ का कयँ, सोचौ हमऊँ, काये ठोकर खाय गिरैं।।७।।

करो ब्यंग खिलखिला हँसी पै बोलो धर संयम बाला।
जी ग्रह को प्रभाव ऊनेंईं दओ सहारो सुन बेला!!
अभै मूँड़ फट जातो उर मौं टेढ़ो हो जातो नइँ तौ।
लगत हमें ग्रह भओ पच्छ में, जानें का होतो नइँ तौ।।८।।

बेला बोली, हमें ग्यात है तुमें पता हो या नइँ हो।
बीचइँ बाला बोल उठो, बेला! जो कहनें साफ कहो।।
कहो कि बाला उर बेला की चरचा है हर घर-आँगन।
और हरदमइँ हुइऐ बेला! गाँठ बाँध लो ई निज मन।।९।।

किरनें सूरज सें बनती हैं, बनै न सूरज किरनन सें।
बनै दूध सें घी पै कभऊँ दूद बनत है नइँ घ्रत सें।।
बात न ई उदूलबे बाली, चायें कोऊ अजमा ले।
साँच साँचई होत, इऐ जानत हम सब दुनिया बाले।।१०।।

जो तुमनें उकसाव न होतौ, नाक ओरछा की कटती।
बाला कों बुन्देलखण्ड की कतइ न ई पदबी मिलती।।
बाला तौ अब बेला के संकेतन पै मरहै – जीहै।
बस-बस कबिता जिन सुनाव, बेला मुस्क्या कें बोली है।।११।।

ब्यासपुरा तौ जनमभूमि है केसवदास महाकबि की।
अचरज का ठाड़े हौ उतईं, बोल रही छाया उनकी।।
असर आ गओ कबि को तुमपै, बोलत कबिताई भासा।
दोउ हँसे खिलखिला उतै मन में दबायँ मीठी आसा।।१२।।

तभइँ हबेली सामूँ बाली सें निकरीं हा-हाकारें।
सुन कें इकदम चौंके दोऊ जा पौंचे ऊके द्वारें।।
हती हबेली बैदराज श्री चन्द्रदेव मिसरा जी की।
बेला-बाला का, सिगई जनता जा पौंची नगरी की।।१३।।

उनके इकलौते बेटा कों डँसो भयंकर बिसधर नें।
भौत भओ उपचार और मृत घोसित कर दव बैदन नें।।
घटना सुनकें नगर निबासी सन्न रै गये भए जड़बत।
चन्द्रदेव को दुख कैसें कयँ बैठे ते बे पाथरबत।।१४।।

सुजन सान्तुना दै रए, ग्यानीजन उपदेसन समजाबैं।
मानो खतम हो गये अँसुआ, आँखें अब काँ सें ल्याबैं।।
फटीं रै गईं टिकीं सून्न में अब कोऊ का बतराबै।
हा बेटा! हा लाल! कहाँ गए, कै-कैकें माँ डँकराबै।।१५।।

बिलख-बिलख रोबै म्हाँतारी पकर-पकर मृत सुत काया।
सादैं तिरियाँ, लोग सोच रए, ईसुर की अद्‌भुत माया।।
"पुत्र सोक सम सोक नईं" सह सके न दशरथ से ग्यानी।
मिसरा-मिसरानी का, हम सबरेई साधारन प्रानी।।१६।।

फटो हियौ भव टूँक-टूँक, माँ को क्रन्दन को सुन पावै।
रोय परो हर हिरदय, ऐसे में को कीयै समजावै।।
देव पुरुस आवै अब कोऊ तौ सब बिगरी बन जावै।
बौइ अँपइँ सक्ती प्रयोग सें अँसुआ बहत रोक पावै।।१७।।

कछू देर में चन्द्रदेव जू झटका सें उठकें आये।
और मरे बेटा कों कन्धा पै धर घर बाहर ल्याये।।
कछू जने पागलपन कह कें, लैंन लगे सव कों उनसें।
पै न सफल भव कोऊ ई में, कै न कछू पाओ उनसें।।१८।।

इतनी तेज चाल भइ उनकी भूले शव लादें ऊपर।
भीड़ नगर भर की पिछाइँ दौरी सँग-सँग सोचै ईपर।।
फूलबाग आये सीधे उर जा पौंचे हरदौल महल।
करुना द्रस्स देख कें इकदम मची उतै भारी हलचल।।१९।।

मिसरा लयें लास भीतर घुस गये भीड़ द्वारें गइ रुक।
जाँ हरदौल प्रिया सँग बैठे बई कक्छ में गए निधरक।।
सुना रहेते गीता पढ़कें पतनी कों हरदौल कुँअर।
किसनार्जुन सम्बाद बता रए ते बे उनें अर्थ कर-कर।।२०।।

जई बीच आ चन्द्रदेव नें बालक धर दव चरनन में।
फूट-फूट रो परे नबा कें सीस कुँअर के पाँवन में।।
चौंक परे हरदौल, भर लओ मिसरा जू कों बाँहन में।
पलका पै बैठारो बोले, तुमउँ अग्रनी ग्यानिन में।।२१।।

बैद्य बिसारद हौ ग्यानी हौ, मिसराजू! का समजावें!
भारत के सब जनसाधारन जानत सो का दुहरावें!!
करम और प्रारब्ध दोउ सें हरस-बिसाद पाउ्त प्रानी।
आयू सीमा निस्चित, ईमैं चलत न कौनउँ मनमानी।।२२।।

मानव के बस में नइयाँ सो सीस झुका सहनें सबकों।
पिरकिरती नें ग्यान, समझ उर सक्ति दई जो कछु हमकों।।
उत्तोई उपयोग और उपभोग कर सकत हैं हम सब।
है मिरतू बौ सीमा रेखा जी सनमुख बेबस हम सब।।२३।।

हो निरास कैनेंइँ परत कै अनहौनी होतइ नइयाँ।
हौंनी केई आँगूँ पंडिज्जू! माथौ टेकत दुनियाँ।।
बैदराज! अब जई मानकें हम सबई कों चलनें है।
बैद मिसर जू बोल उठे, जू! हमें कछू नइँ सुननें है।।२४।।

सुनो देव हरदौल कुँअर! सब हमें पतो है तुम का हौ।
हौ गनेस साच्छात देव तुम सकल अमंगल हरता हौ।।
जनम कुन्डली कुँअर तुमाई बनी हमाये हाँतन की।
छिपी न कौनउँ छमता–सक्ती देव! तुमाये जीवन की।।२५।।

बाल अकाल मिर्तु भइ है, सो देव! कलंकित राज भओ।
तुमसो धरम सक्ति रच्छक राजा होकें जौ काय भओ।।
असह तड़प सें बिलखे उर उठ नियरे चन्द्रदेव आये।
पकरन लगे पाँव उनके, हरदौल कुँअर अति दुखयाये।।२६।।

सरक दूर हो गये देव बोले, जा बेझाँ हो जैहै।
बिप्रदेव, भूदेव, ब्रह्मग्यानी! सब अनरथ हो जैहै।।
महाराज! तुम पूजनीय हौ पाँव हमाये छू लैहौ।
तौ समजौ जू! हमें पाप के सागर बीच डुबै देहौ।।२७।।

बदल सकें बिधि को बिधान बौ छमता सोचौ काँ हममें।
सबइ दुखी दुख में तुमाए पै बौ सक्ती काँ हम सबमें।।
धीरज तौ धरनेंई परहै, है प्रारब्ध भोग भोगौ।
हम तौ जइ कै सकत अपुन सें, अब तौ अपँव मोह त्यागौ।।२८।।

'चन्द्रकान्त' है इकलौतो सुत सुघर और कुल उजयारो।
निरख रहे हरदौल एक टक, अति अलोल बालक प्यारो।।
ममता उर आसक्ती कारन मिसरा कों नइँ कछु भाबै।
सब अध्यात्म धरोई रै गव, उनकी समज न कछु आबै।।२९।।

रोये दै दहाड़ पंडिज्जू, घूँटिन में सिर दाब लओ।
घुक्की डारैं बैठे रोबैं, जनसमूय सँग रोय दओ।।
फूलबाग भर भव उदास, चारउ लँग सन्नाटो छाओ।
कँपे हिये सबई के हरदौलउ को मन अति दुखयाओ।।३०।।

रोओ–गाओ, करो चाँयँ जो बिधि–बिधान कैसें बदलैं।
हरदौलउ कछु सोच न पा रए दुखी कक्छ में वे टहलैं।।
चन्द्रदेव सें आँखें मिल गइँ जो बिलकुल पथराईं तीं।
जादाँ देख न पाये उनकींअउ आँखें भर आईंतीं।।३१।।

बढ़कें चन्द्रदेव के कंधा मसक कहैं, इक बात सुनो।
घटना है भगवान बुध्ध उर इक चेला की सान्त सुनो।।
उनके एक सिस्स के बेटा की औचक मिर्तू भइ ती।
ऊन्नें भी बेटा के जीवन के लानें ऐसइँ कइती।।३२।।

तुम तौ जानत हुइऔ, तब भगवान बुध्ध नें का कइती।
जानत हैं, "सरसों के दाना ल्याबे की आग्या दइती।।
जउ कइती चेला सें, दाना बस ऐसे घर सें ल्यइओ।
कभउँ न मिरतू भइ होबै बस तुम ऐसे घर में जइओ"।।३३।।

बोले मिसरा, ऐसो घर तौ दुनिया भर में कउँ नइयाँ।
जनम जहाँ मिरतू भी अबसइँ हूऐ जा जानत दुनियाँ।।
जानत उर मानत हैं हम सो मिरतू नइँ हटवाय रये।
बालक की मिरतू अकाल है, बइ कौ निरनै चाय रये।।३४।।

सहज मौत होती ना काते, तुम समरथ हौ, बिनती है।
अपँए राज में अपजस कों ना ठौर देव, जा अरजी है।।
चन्द्रदेव लम्बी उसाँस लै, करकें बिनती सान्त भये।
पै आँखन सें बे अबिरल करुना सागर छलकाउत रये।।३५।।

अब तौ श्री हरदौल देव ई घटना पै गम्भीर भये।
करो गहन चिन्तन मनई मन, उनके पूत समीप गये।।
उठा लओ ऊऐ बाँहन पै और महल बाहर आये।
सिगई जनता ठाड़ी द्वारैं, देखत अँसुआ भर आये।।३६।।

सिसकारी छूटी जनमुख सें बेउ कछू नइँ कह पाये।
दुखी हृदय साहस बटोर हरदौल बढ़े मन्दिर आये।।
पौंच रामराजा मन्दिर भगवान राम के चरनन में।
धरौ सँमर ऊ बालक को सव, डूबे हरि आराधन में।।३७।।

हाँत जोर एकाग्र भये बन्दना करी आरत मन सें।
'भावी मैंट सकहिं त्रिपुरारी' सुनी गई उनके मुख सें।।
जादाँ सुनी न कछू काउ नें, का कइ अँसुआ भर उन्नें।
करी प्रार्थना रामलला जू सें आधेक पहर बिन्नें।।३८।।

सिरीराम को चरनामृत लै ऊ बालक के मुख डारो।
माथे पै छींटा मारे, बस तीन बेर ई कर डारो।।
भई रामराजा की किरपा बालक उठकें बैठ गओ।
चमत्कार लख जनसमूह अचरज सागर में बूड़ गओ।।३६।।

बढ़ दिमान हरदौल देव नें छाती सें चिपकाय लओ।
मिसरा सुत प्रिय चन्द्रकान्त कों ढेरन अपनो नेव दओ।।
बोले, भइया! उठो और परमेसुर कों पिरनाम करो।
मन सें करो बन्दना उर फिर चरनाम्रत को पान करो।।४०।।

बालक नें सास्टाँग लोट कें सियाराम कों नमन करो।
कर चरनाम्रत पान देव सँग मन्दिर बाहर गमन करो।।
घटना कछु बताइ माँ नें उर और जनन नें रुक-रुक कें।
सुत नें मात-पिता, सबई कों सादर नमन करो झुक कें।।४१।।

मन्दिर बाहर आये, बालक कों देखौ जीवित सबनें।
अचरज और खुसी के संगम में डुबकी लइ उन सबनें।।
चन्द्रदेव मिसरा नें सुत कों निज बाँहन में टाँग लओ।
सिगइ उड़ेली ममता सुत पै हरदौलै धनबाद दओ।।४२।।

बोले जन सनमुख मिसरा, हरदौल न मानव साधारन।
हैं 'धरती के देव' देव जू जीवित भव सुत इन कारन।।
पूजनीय हैं, बन्दनीय हैं, सदा-सदा हरदौल कुँअर।
आज साकछी हैं हम सबरे, हैं साक्छी अबनी-अम्बर।।४३।।

कह 'धरती के देव' सबइ नें उनकी जै-जैकार करी।
श्री दिमान हरदौल देव पै फूलन की बौछार करी।।
लगत रहे जैकारा उनके आधी रात बीतबिन तक।
प्रभू रामराजा की किरपा उतै सतत बरसत अब तक।।४४।।

❋ दोहा ❋

श्री दिमान हरदौल जू हैं 'धरती के देव'।
जीवन दव इक म्रतक कों, 'देव' देव सुयमेव।।३।।
गाँवन-गाँवन चौंतरन, थपे देव हरदौल।
पुजत अपुन हर कार्ज में, करत क्रपा अनमोल।।४।।
काटै बिसधर काउऐ, देव थान पै जात।
ऊकौ संकट हरत बे, सब सिरधालू कात।।५।।

—•—

सर्ग : दस

क्रान्तिकारी बीर स्वतंत्रता सेनानी बुन्देला सूपत हरदौल

❋ दोहा ❋

जब-जब हिन्दू धरम पै भए हैं अत्याचार।
बीर सपूतन नें करो दुस्टन को संहार।।१।।
मातृभूमि रच्छा करै, जन-गन-मन कल्यान।
बौई पूत सपूत है, सोई देस महान।।२।।
नगर ओरछा में भये अतुल बीर सिरमौर।
बीर सींग जू देव सुत बुन्देला हरदौर।।३।।

❋ छन्द ❋

सम्बत सोरा सौ चौरासी, जहाँगीर सुत साहजहाँ।
गद्दी पै आसीन भओ जो अति मदान्ध धरमान्ध महाँ।।
जहाँगीर के मरत खैम श्री बीरसींग म्हाँराजा नें।
करो ओरछा कों सुतंत्र, सँग दओ समूची पिरजा नें।।१।।
साहजहाँ कों लगो न नींकौ सो ठानी बैरादारी।
कढ़ौ मुगल समराट घमन्डी और दुराचारी भारी।।
हिन्दू उर हिन्दू समाज पै भौतइँ-भौत कहर ढाबै।
धरम गिरन्थन कों जरवाबै उर मठ-मन्दिर गिरवाबै।।२।।
लक्खन हिन्दू पकरे जबरइँ मुसलमान बनवा डारो।
करो हरन हिन्दू तिरियन को, सत्व भंग करवा डारो।।
जजिया कर थोपौ मानो अपराध भओ हिन्दू होबौ।
लगन लगो तो धरम और हिन्दू समाज मुसकिल रैबौ।।३।।

भारत माँ उर धरम सनातन देख दसा मानो रोये।
तब सुतंत्रता सेनानी हरदौल उठे आँगूँ आये।।
लइ सुइकार चुनौती भारत के सपूत नें मुगलन की।
कइयक बीर आ गये सँग में, करी न चिन्ता जीवन की।।४।।

करो घोर संग्राम भयंकर भौ माने अत्याचारी।
सावधान भए मुसलमान सासक बैठो मन भयभारी।।
बीरन के बलिदान-त्याग सें सबकी रक्छा हो पाई।
धरम और हिन्दू समाज नें साँस चैन की लै पाई।।५।।

महाबीर हरदौल बुँदेला दुरलभ अदभुत गुनधारी।
अति निदाग उत्तम चरित्र तन हस्ट-पुस्ट मन ब्रह्मचारी।।
कुसल साहसी सेनानायक उर जोधा निरभीक महाँ।
उनसो देस-धरम रक्छक, मर मिटबे बालो बीर कहाँ।।६।।

बे आदर्सबाद अनुयायी पै अति बौहारिक प्रानी।
और यथार्थबाद बिसवासी, उनकी कहाँ कोउ सानी।।
एक दिना हरदौल गये जंगल सिकार करबे काजें।
भओ सामनो एक सेर सें, दौरो बो खाबे काजें।।७।।

सेर भयंकर दै दहाड़ हरदौल बीर पै टूट परौ।
पै निरभीक बीर नें ऊसें तुरतइँ अपँव बचाव करो।।
दोउ सिंग्घ अलबेले गरजें, इक-दूजे पै बार करें।
कोउ काउ सें कम नइँ, मानो दो जोधा संग्राम करें।।८।।

जैसइँ झपटो सेर देव नें बदल पैतरा बार करो।
धरती गिरतइ खन उन्नें दूजे में बेड़ा पार करो।।
मरो भयानक सेर, देख उनकी सरायना भइ भारी।
सिगँयँ सोर हो गओ देख कें हरसाने सब नर-नारी।।९।।

फूलबाग में एक दिना आये मुसलिम सैना नायक।
हिन्दू धरम बिरुध्ध कर रये ते भौतइँ जादाँ बक-बक।।
मूरतपूजा, धरम पोथियन की कर रएते कुबड़ाई।
फारैं ग्रन्थ, कुभर भाखैं बे, गुस्सा हरदौलै आई।।१०।।

बिक्रम सम्बत सोरा सौ इक्यासी की है ई घटना।
रोको गव पै नइँ माने, भब बौ जो लिख राखी बिधना।।
कढ़ीं म्यान सें तरबारें उर उतइं छिड़ संग्राम गओ।
साहबाज खाँ और कुतुब खाँ बीरन के सँग जुध्ध भओ।।११।।

सैनानाइक मार गिराये उन हरदौल बीरबर नें।
जिनकीं कबरें फूलबाग के सनमुख बनवा दइँ उननें।।
सोरा साल उमर के बुन्देला नें गजबइ कर डारौ।
दो-दो बीरन कों इक्काईं, परम बीर नें संघारौ।।१२।।

सब धरमन में सिरधा उनकी, बे न बिरोधी काऊ के।
पै अपमान बीर धरमन के सह न सकत ते काऊ के।।
हते कुसल जोधा सैनानाइक पै बल को मद न हतो।
श्रेस्ट राज संचालक-सैजोगी होकें न घमण्ड हतो।।१३।।

उनके पिरसासन में पिरजा सुखी हती सबई तरियाँ।
सरल हृदै हरदौल बीर कों जान गई सिगई दुनियाँ।।
उनकी सेना में भर्ती के लानें रोक-टोक नइँती।
सबई जात धरम के बीरन की ऊमें भरती भइती।।१४।।

हते मुसलमानउँ सैना में हतीं ऐंन औरउ जातें।
पै सैना में सबसें जादाँ भरती भइँ छत्रिय जातें।।
भौतइँ बढ़िया हतो संगठन बँटी बिभागन में सैना।
जैसें - पैदर, घुड़सबार, हाँती उर ऊँट, तोपखाना।।१५।।

रए चालिस हजार सैनिक, जो इस्थाई साँतिर सैंना।
होत हती संख्या में भौतइँ जुध्ध समै बढ़कर सैंना।।
जब बुन्देलखण्ड पै कौनउँ बैरी आ धाबा बोलै।
तब जागीरदार सैना में मिलैं अपँइँ सेना लै-लै।।१६।।

सब दिमान हरदौल बीर की आग्या कों तइयार रहें।
उनके झंडा के नेंचें मरबे कों जीवन स्वार कहें।।
अपने कारिन्दन के कामन पै राखत ते नजर कड़ी।
कर न पाँयँ अन्याय प्रजा पै हती बिबस्था भौत बड़ी।।१७।।

संगी न्यायी के, अन्न्यायी के बैरी मानो उनकों।
अनाचार-अत्याचारन के परम रिपू जानो हर कों।।
होय कर्मचारी कि नागरिक, अपराधी कि दुराचारी।
देत हते बे कड़ो डंड हरदौल देव धरमाचारी।।१८।।

होत हते अपराध भौत कम उचित बिबस्था के कारन।
पिरजा उर कारिन्दा सबमें हतौ भौतईं अनुसासन।।
नागरिकन कों हती छूट राजा सें मिलबे की पूरी।
चाँयँ कोउ, चाँयें जब आबै, तज नृप-पिरजा की दूरी।।१६।।

सुना सकत तौ बिथा-कथा अपनी आकें निरभै उनकों।
न्याय और सन्तोस मिलत तो हरदम उनसें दुखियन कों।।
फलस्वरूप हरदमईं जुड़े रत्ते बे अपनी पिरजा सें।
कहाँ राज्य में का हो रव सब जान लेत ते जनता सें।।२०।।

पिरजा के सुख-दुख कीं बातें और बिबस्था संचालन।
ग्यात रैत तो उनें रोज को हते न सासक साधारन।।
संबत सौरा सौ ब्यासी नृप जहाँगीर नें बुलवाओ।
करीं बीरता-हिम्मत की तारीफें स्वागत करवाओ।।२१।।

जहाँगीर समराट आगरा नें सिर चूमौ प्यार करो।
और दाहिनी पंक्ती में बैठारौ उर सत्कार करो।।
एक खास तरबार, जिरहबक्तर उर एक दई माला।
जीमें नीलम-मोती, लटकें लाल आदि ऐसी माला।।२२।।

लाल और पन्ना बालीं दो दईं अँगूठी बनवाकें।
'पाँच हजारी जात स्वार मनसब' दए नृप नें हरसाकें।।
"बीर बुँदेला" पद दिमान हरदौल देव कों दव उननें।
भौत प्रैंम-सम्मान दओ तो जहाँगीर आला नृप नें।।२३।।

इतनो सब भव पै दिमान जू परम लक्छ कों नइँ भूले।
बाजूबन्द अपँए, पद-दौलत के लालच में नइँ खोले।।
निज बुन्देलखण्ड उर उनके आस-पास पिरदेसन की।
धरम-समाज सुरच्छा में रइ तनी खडग हरदम उनकी।।२४।।

मुगल सल्तनत भी बिनास में लगी हती तन-मन-धन सें।
पै हरदौल बीर निपटत रए अपँए संगियन सँग उनसें।।
करो असंभव कों सम्भव हरदौल बीर बलधारी नें।
अती रुकी ती मुगलन की, जै-जै बोली जनबानी नें।।२५।।

पुरुस अलौकिक मानत तो बुन्देलखण्ड को जन-गन-मन।
इनइँ कारनन आजउँ पूजत है उनकों सादर जन-जन।।
करत देवता की जौं पूजा, तैसइँ हो रइ है इनकी।
'अच्छौ दिन बीतें', भोरइँ जा करत प्रार्थना सब उनकी।।२६।।

घटना है ई सोरा सौ चौरासी बिक्रम सम्बत की।
हते ओरछा के म्हाँराजा बीरसींग जू है तब की।।
कासमीर की यात्रा कर नृप जहाँगीर जू आये ते।
काबुल जाबे कों झेलम कों पार करन बे धाये ते।।२७।।

तबइँ महाबत खाँ सेनापति नें उनकों कर लव बन्दी।
नूरजहाँ बच निकरीं कैसउँ देखी जब नीयत गन्दी।।
भगीं-भगीं बे बीर बुँदेला भूमि ओरछा जा पौंचीं।
म्हाँराजा जू देव बीरसिंग की सरनागत आ पौंचीं।।२८।।

हाल सुना बोलीं कि देव जू! मदद करो हम संकट में।
बे बोले, अब करो न चिन्ता भै जिन राखौ अंतस में।।
सँग म्हाँरानी के हम सुत हरदौल कुँअर कों पौंचैहैं।
सैना उर बारूद संग जा, बन्धन सें हम छुड़वैंहैं।।२९।।

पिता बीरसिंग नें निज सुत हरदौलै दै आदेस दओ।
बीर बाँकुरो जोधा बौ सुनकें तुरतइँ तइयार भओ।।
बारा सहस सबार, पाँच सौ अहदी और साठ हाँती।
दो हजार बन्दूक बाज उर कैउ बीर सैनिक साथी।।३०।।

सत्तर-अस्सी तोपैं मुद्राँ बीस लाख दइँ खरचा कों।
नूरजहाँ सँग पौंचाओ तो जहाँगीर की रक्छा कों।।
जामा इक सुबरन जड़ाउ दव मूलबान अपने सुत कों।
जीपै हीरा और जबाहर सें गोदो गव फूलन कों।।३१।।

फूलन पै झुमका लटकेते भौत कीमती मौंतिन के।
दव खंजर-तरबार एक-इक जिनपै बूटा हीरन के।।
पहन जुध्ध-पोसाक बीर हरदौल कुँअर तइयार भये।
साफा सीसफूल सिर सोहै, मात-पिता के पास गये।।३२।।

कर प्रनाम आसीरबाद लै रामलला कों नमन करो।
कैद छुड़ाबे जहाँगीर की, अब जोधा नें गमन करो।।
सैंना सैत पौंच बैरी सँग एक अजूबा चाल चली।
मुगल महाबत खाँ के लानें त्यार करी सैंना नकली।।३३।।

सौदागर, कुँजरा, फकीर उननें बनाए कछु बीरन कों।
जैसे बे पैंनत उन्ना, तैसे पैंनाये ते उनकों।।
बोरन में बारूद भरी उर भैंसन पे लदवाय दई।
जैसें सौदागर बेंचत ते तैसेंई पौंचाय दई।।३४।।

कछू लपिड़वाये उन्ना उननें भैंसन के सींगन में।
रात भई तब तेल छिड़क कें आग लगा दइ ती उनमें।।
तीन भाग में बाँट घुमा दव, भ्रम पैदा भव मुगलन में।
भौत बड़ी सैना नें हमला कर दव जा सोची मन में।।३५।।

जैसइँ भैंसा लदे पास पौंचे मुगलन के सिबिरन में।
तैसइँ लगवा दइती आगी उन बारूदी गोलन में।।
कछू समज नइँ आई उनकों, ई कैसें का इकदम भव।
जई बीच हरदौल बीर नें लै सैना हमला कर दव।।३६।।

टूट परी जब फौज बुँदेलन की, उनमें भगदड़ मच गइ।
लगौ जितै जीकों मौंका, सैना सब मुगलन की भग गइ।।
का कयँ ऊ सरदार महावत खाँ तक नें लम्बी तानी।
भै के मारें जान बचा कें भगो छोड़ दाना-पानी।।३७।।

जई बीच कछु-कछु सैना नें करी चढ़ाई थानिन पै।
सबइ भाग गए जिनें महावत खाँ नें राखो तो उन पै।।
मुगलन को असबाब माल हरदौलबीर नें लूट लओ।
उन्निस साल आयु जोधा नें कठिन मोरचा जीत लओ।।३८।।

लै थोरी सैना ऊऐ हरदौल बीर नें मात दई।
हरा महावत खाँ कों अपनी बिजै धुजा फैराय दई।।
जहाँगीर कों कैद मुक्त करवा कें अति उपकार करो।
जहाँगीर नें बीर बाँकुरे को ग्यापित आभार करो।।३६।।

भौतइँ बढ़िया लाल, तौल में बजन आठ टाँके को रव।
जो कि आज लाखन रुपया कीमत को रव सो उनकों दव।।
सुबरन साज सजा कें उननें दइ तरबार एक बढ़िया।
सस्त्र जवाहर जड़े कीमती उनकों दए अनेक बढ़िया।।४०।।

खिलअत, जमधर सुघर जड़ाऊ उर नौं-नौं घोड़ा-हाँती।
चाँदी की इक झूल सैत दव एक-एक घोड़ा-हाँती।।
जहाँगीर नें परमबीर हरदौलै ई सब भेंट दई।
करी प्रसंसा बुन्देलन की उर पौरुस की दाद दई।।४१।।

सम्बत सोरा सौ चौरासी तक रव जहाँगीर सासन।
साहजहाँ भव बादसाय, नृप जहाँगीर के मरतन खन।।
जहाँगीर के बाद ओरछा बीरसींग बुन्देला नें।
साहजहाँ सें कर सुतंत्र लव, साहजहाँ जू भुन्नाने।।४२।।

सबइ भाँत बदलो लैबे की साहजहाँ नें मन ठानी।
बुन्देला उर हिन्दूअन पै करन लगो बौ मनमानी।।
साहजहाँ नें बाकी खाँ नामक सरदारै पौंचाओ।
भौत बड़ी सैना लै जो बुन्देलन सें लड़वे आओ।।४३।।

तब चम्पत, हरदौल और कछु और बुँदेला एक भये।
कर परास्त दव बाकी खाँ कों पूँच दाब बे भाग गये।।
अपँए बराबर बीर काउ कों नइँ मानत तो साहजहाँ।
पै बुन्देलन के सामूँ काऊ को मद रै जात कहाँ।।४४।।

चम्पत उर हरदौल बीर नें मिल ऊकौ मद चूर करो।
साही सैंना हरा जुध्ध में भगबे कों मजबूर करो।।
होत भई कम सेना बुन्देलन की, ऊकी हार भई।
सुन कें खून खौल गव ऊकौ, खुद लड़बे की ठान लई।।४५।।

साहजहाँ आ गओ ओरछा सब सैंना अपनी लैकें।
करी ओरछा पै चढ़ाइ ऊनें सारी सक्ती लैकें।।
सैंना नें सब जतन कर लये पै न बिजैश्री हाँत लगी।
मिली बिज़ै हरदौल बीरकों साहजहाँ मन ठेस लगी।।४६।।

चम्पतराय बीर नें पूरो-पूरो उनको संग दओ।
लै साठक हजार सैंना बौ दिल्ली बापस लौट गओ।।
साहजहाँ नें राज्य ओरछा लैबे की धुन नइँ छोड़ी।
कैउ बेर करवाये हमला मगर न बा धुन भइ पूरी।।४७।।

बुन्देला हरदौलदेव नें सब दाँवन कों काट दओ।
अब बुन्देलखण्ड पै बुन्देलन को राज सुतंत्र भओ।।
लगो रहै बौ उधेर बुन में राज हड़पबे के लानें।
कूटनीति, छल, धोका, फूटन की सोचै ऊके लानें।।४८।।

संबत सोरा सौ चौरासी बीरसींग की मिर्तु भई।
मिरतू पैलें बीरसिंग्घ द्वारा जो लिक्खी सनद गई।।
ऊ अनुसार बीर हरदौले घोसित गद्‌दी कर दइ गइ।
पै हरदौल देव नें गद्‌दी लैबे सें नाहीं कर दइ।।४६।।

बे बोले, जो परम्परा रइ ऊकौ पालन भयँ चइये।
राज बड़े भइया जुझारसिंग कोंईं बस दव जयँ चइये।।
सोइ भओ उनके जेठे सुत नें बा गद्‌दी पाय लई।
और अनुज हरदौल देव नें सेबा भर अपनाय लई।।५०।।

साहजहाँ नें जुझार सिंग कों नृपति ओरछा सुइकारौ।
और अपँए सड़यन्त्रन को मन ताना-बाना बुन डारौ।।
कछू बुँदेला राजन कों दइती ऊनें मनसबदारी।
जिनकों मानत रव गुलाम, बुन्देलन में फूटन डारी।।५१।।

श्री जुझारसिंग, देवीसिंग, जयसिंग, पहाड़सिंग और अमर।
जगतसींग, भगवन्त, किसुनसिंग आदी छत्री बीर प्रबर।।
साहजहाँ इनकों गुलाम निज मानत तो आग्याकारी।
जिनको बल पा औरउ जादाँ बनो मुगल अत्याचारी।।५२।।

प्रजा देस की मुगलन की करतूतन सें अति दुखयायी।
साहजहाँ के अति कठोर बौहारन सें अति घबरायी।।
मिर्तु डंड दव जाबै जो ना मुगल धरम कों अपनाबैं।
सुन्दर हिन्दू तिरियन कों जबरन पकराकैं लै जाबैं।।५३।।

देसी राजा जमींदार उर सबई मंसबदारन कों।
मदिरा-माँस संग स्वागत में सुन्दर बिटियाँ तिरियन कों।।
दैबौ हो गव तौ आबस्यक, मेंमानी में मुगलन कों।
मौं नइँ खोल पाउ्त तो कोऊ, थू-थू ऐसे जीवन कों।।५४।।

मथुरा-बिन्द्रावन-कासी उर अबध आदि तीरथ मन्दिर।
कइयक नस्ट कराए, मस्जिदें उतै बनाईं तीं सुन्दर।।
हिन्दू धरमग्रन्थ पढ़बौ-लिखबौ, साला पढ़बे जाबौ।
बन्द करा दव भजन-कीर्तन, पूजा करबौ करवाबौ।।५५।।

साधू-सन्त भजन-पूजन कर पाउत ते तौ दुक-दुक कें।
नए मन्दिर बनवा न सकत ते रत्ते हिन्दू दब-दब कें।।
नाच नचा रए ते अमानुसी मुसलमान हिन्दूअन कों।
हमदरदी तौ दूर सकल तक नइँ भाउत ती मुगलन कों।।५६।।

निबल और निरधन पिरजा को धरम न कौनउँ पल पाओ।
तिरियन संग बलातकार दिन दुफरें उन्नें करवाओ।।
देख दानवी लीला उनकी, आड़ी हिन्दू कोउ करै।
आपत्ती कौनउँ जताय तौ समजो बो बेमौत मरै।।५७।।

डाँकू बागी मान मौत बे देत हते दुरगति करकें।
सबइ बीर चुरियाँ पैरें बैठे जी रए ते मर-मर कें।।
देख दसा हरदौल बीर सह सके अती ना मुगलन की।
ठाड़े भए उनके बिरुध्ध रच्छा करबे कों निबलन की।।५८।।

महाक्रान्तिकारी सुतंत्रता सेनानी हरदौल कुँअर।
संबत सोरा सौ चौरासी में उन्नीस साल उम्मर।।
उननें हिन्दू महासभा को करो बड़ो इक आयोजन।
जीमें लोधी, यादव, कुरमी, अहिरवार, म्हेंतर, ब्राम्मन।।५९।।

बैस्य, लुहार, गड़रिया, दाँगी, बढ़इ, गौड़ सब जातन के।
हिन्दूअन नें भाग लओ होकें बिरुध्ध उन मुगलन के।।
चम्पतराय, सुजानराय उर भीमराव जोधा भारी।
सामिल भए ई महासभा में, बीर बुँदेला बलधारी।।६०।।

नदी बेतवा तीर ओरछा (चित्रकूट) नामक थल में।
लगभग एक लाख हिन्दू जन आये ऊ आजोजन में।।
दओ बीर हरदौल देव नें उन सबई कों उद्बोधन।
सबै बताओ महासभा के आजोजन को पिरयोजन।।६१।।

भौत दुखी मन दुहराईं तीं करतूतें उन मुगलन कीं।
अपनी कमजोरी-मजबूरी बता करीं बातें मन कीं।।
सई और सबकी आँखिन देखी अतियन की बात कही।
पढ़ी यवन अत्याचारन की हियें लिखी दुस्करम बही।।६२।।

भर अँसुवा बहनें बिटियँन की कछू दुरदसा कह डारी।
पिरभाबी बीरत्त भरे सब्दन में बिनती कर डारी।।
खून खौल गव बीरन को हर आँख क्रोध सें लाल भई।
फूँस उठी जनता बिसधर सी, लहर जंग की दौर गई।।६३।।

तन-मन-धन तइयार भये सब मुगलन सें टक्कर लैबे।
देस-धरम की रक्छा हित तइयार भये निज बलि दैबे।।
हती भौत मन्सा जनता की कोउ म्हाँपुरुस मिल जाबैं।
टक्कर लै मुगलन सें रक्छा देस-धरम की कर पाबैं।।६४।।

सो उनकों मिल गये आज है खुस हिन्दू जन साधारन।
मिले सुरच्छा-रच्छा के लानें मानो 'हर' नारायन।।
काम सूरता, साहस के उनके सबई कों ग्यात हते।
बे सुतंत्रता और धरम रक्छक-पोसक बिख्यात हते।।६५।।

सबई कों हरदौल देव बलधारी पै बिसवास हतो।
कभउँ न बात असत्त कहत ते उर न असत को साथ हतो।।
उनके इक उदबोधन पै सबई नें उठ प्रन ठान लओ।
उनके सँग जीबे-मरबे को भुजा उठा पिरमान दओ।।६६।।

छोटे-मोटे भुमियाँ उर जागीरदार, सामन्त सुजन।
आये सब झंडा के नेंचें हरसा कें उतसाहित मन।।
'मुगल बिरोधी अभियानी दल' को समाज नें गठन करो।
और प्रधान क्रान्तिकारी नेता मिल सबनें चयन करो।।६७।।

चुनो बीर हरदौल बुँदेला कों प्रधान ऊको नेता।
उनसें बढ़कें कोऊ नइँ तो जो बनतो दल को नेता।।
महाक्रान्तिकारी सुतंत्रता सेना प्रमुख मान उननें।
परमबीर हरदौल बुँदेला की जै-जै बोली सबनें।।६८।।

अब बुन्देलखण्ड के घर-घर में पौंची जा खुस खबरी।
साहजहाँ कों पता चलो तौ ऊऐ जा भौतइँ अखरी।।
साहजहाँ को दिल दहकै अंगारो सो, सुन तइयारी।
चढ़ो नजर पै राज ओरछा करी त्यार सैंना भारी।।६९।।

बाकी खाँ, अब्दुल्ला खाँ, दरिया, सरदार महावत खाँ।
दव आदेस चढ़ाई को, सँग हते औरऊ कइयक खाँ।।
सँग सैंना पौंचाओ सूबेदार और सामन्तन कों।
रए कुल एक लाख सैनिक, पौंचाव छाँट कें बीरन कों।।७०।।

घेरौ राज ओरछा सैंना नें चारउ लँग सें जाकें।
लै सातार नदी सें पूरो नदी बेतवा तक आकें।।
घेरौ गओ ओरछा चारउ लँग सें अति मद में आकें।
मानो ललकारो बुन्देलन कों उनके घर में आकें।।७१।।

द्वारें बैरी ललकारै उर छत्री घर में रह जावै।
जा तौ कभऊँ लगत न संभव चाँयँ ठौर दम मर जावै।।
तउपै बे हरदौल देव बुन्देला छत्री बीर महाँ।
अन्यायी बैरी सनमुख झुक जावैं सो हो सकत कहाँ।।७२।।

सूरजबंसी बीर बाँकुरे भए सबार निज घोड़ा पै।
अपने थोरे सैनानिन सँग टूट परे ते सैंना पै।।
सेनापति बाकी खाँ सें बे जुध्ध भूमि में आन भिड़े।
अंग रक्छकन को बध कर दव जो पैलें परबान चढ़े।।७३।।

जौं सिकार पा भौतइँ भूको सेर झपट्टा मारत है।
जौलों प्रान न लै लेबै तौनों कैसेउँ न छोड़त है।।
तैसेंईं तरबार बीर की रकत पियन को सन्नाबै।
खच्च-खच्च करबी सी कतरै जो भी सामूँ पर जाबै।।७४।।

बैरी चिल्लाऊ नइँ पाबै, ठौरदम्म दम कढ़ जाबै।
बुन्देला हरदौल बीर को रूप देखतन कँप जाबै।।
खडग हती या साकछात रनचंडी बा समरांगन में।
लहू गटागट पी रइ ती बौ घुसी-घुसी बैरी दल में।।७५।।

बीर बाँकुरो सैंना दल में बढ़-बढ़ उनपै बार करै।
लगै कि सिंग्घ सियारन में खेलै उनको संहार करै।।
बार मुगल सैंना के बीरन के सबई खाली जाबैं।
लगै जीत के पैलइँ तरबारें झुक-झुक उनकी जाबैं।।७६।।

मार मुगल सैंना सपूत नें कर लासन को ढेर दओ।
धार लहू की बही बेतवा तक को पानी लाल भओ।।
रूप प्रलयकारी देखो बैरी के छक्के छूट गये।
बुरौ हाल है 'बाकी' को हरदौल अस्व सें कूँद गये।।७७।।

बाकी खाँ के हाँती के पाँवन में बल्लभ ठाँस दई।
रस्सी काटी ती हाँती की, बाकी खाँ कें आँस गई।।
पटक दओ हाँती सें, बाकी खाँ धरती पै धम्म गिरौ।
प्रानन के लाले पर गए ते, उऐ लगौ कै बम्म गिरौ।।७८।।

अब्दुल्ला खाँ और महावत खाँ होकें घायल भागे।
तोपन की मारन में होकें तिर्र-बिर्र सब धर भागे।।
लड़े बहादुर खाँ, हिदायत खाँ उर फिरोज खाँ जंग महाँ।
धरासाइ भए समरभूमि में भगे प्रान लै जहाँ-तहाँ।।७९।।

बिजय भई हरदौल देव की परमबीर बिख्यात भये।
पिरजा नें जैकार करी 'हर' भब्ब मान कों प्राप्त भये।।
साहजहाँ मन जुध्ध हार सें ब्याप गई चिन्ता भारी।
कूटनीति उर नीति दोगली पै आ गव अत्याचारी।।८०।।

साहजहाँ नें सोची अब काँटे सें काँटो कढ़वाबें।
और बिरोध जाति को अब जातइ सें मिलकें करवाबें।।
जई नीति अपना कें बैरी कों गुलामियत दैंहें अब।
कोउ न आड़ी कर पैहै, हरदौल बीर नइँ रैंहें जब।।८१।।

अब पहाड़सिंग उर जुझार, भगवन्तराय कों बुलवाओ।
बुला उनें दरबार गुप्त आदेस दओ तुम सब जाओ।।
जीबित या फिर मरो हमें हरदौल चाइये लै आओ।
इन गुलाम बुन्देलन कों दइ अँपइँ राय जा मरवाओ।।८२।।

रच सड़यन्त्र जाय हरदौले कैसेऊँ बिस खबवा दो।
सबसें सरल जोजना जइ है अपँए काउ सें मरवा दो।।
जो इतनो ना हो पाओ तौ खैर अपइँ तुम जिन मानो।
का-का हम कर सकत, सोच लो इऐ हमाओ प्रन मानो।।८३।।

❋ दोहा ❋

धूर्तन नें 'हाँ' कह दई, होत गुलाम गुलाम।
भइया के सँग घात कर, भयें चाँउ्त सन्नाम।।४।।
जो भइयउ को मीत नइँ, असल नीच सम मान।
भइया कों मरवाय जो, पाँयँ चाँउ्त सम्मान।।५।।

❋ सोरठा ❋

सुरू भओ सड़यन्त्र, बने सहायक कैउ खल।
रत गुलाम परतंत्र, पागल कूकर जौं मरत।।

—•—

सर्ग : ग्यारा

जुझारसिंह की ओरछा बापसी

❋ दोहा ❋

साहजहाँ की जोजना, या बिधि निच्चै आय!
हौंनी आउ्त न जीव ढिंग, उतईं लेत बुलाय।।१।।
हैं जुझार सिँग देव जू नृपति ओरछा राज।
अनुज बीर हरदौल हैं, कारबाह म्हाँराज।।२।।
साहजहाँ दरबार में रहैं आगरा देव।
बौ गुलाम मानै इनें, जे ऊऐ म्हाँदेव।।३।।
पदबी चाँयें जो मिलै, होत गुलाम-गुलाम।
बौइ मुगल बौहार रव, सँग जुझारसिंग 'श्याम'।।४।।
करें चाँव बरबाद तौ, सब सुख-साधन देव।
करतब पालन सें बिमुख, 'श्याम' उऐ कर देव।।५।।

❋ छन्द ❋

आई अँदयारी रातें, बीती ती आज रात आधी।
सन्नाटो छाओ चारउ लँग, मानो बुझन चाँउ्त बाती।।
रातउ लगै आज अलस्यानी संग जगत बैठी अबलों।
तैसइँ बीर जुझार सिंग्घ कों नींद न आई ती तबलों।।१।।
नसा हतो भरपूर तौउ नइँ नींद पकर में आ रइती।
भौत करौंटा बदले पै बौ द्वारें भग-भग जा रइती।।
अब तौ ऊबे ते जुझारसिंग उठ मसन्द सें टिक बैठे।
सेबारत राधा नें देखौ सोचत काये उठ बैठे!!२।।

ल्याकें राधा नें मदिरा भर उनकों पेस गिलास करो।
बस राधा! कह महाराज नें तुरतईं दूर गिलास करो।।
भौत नसा हो गव है राधा! बस्स करो मदिरा रन दो।
उखड़ो-उखड़ो मन है, हो रए अंग सिथिल सो अब जिन दो।।३।।

मन खोउत जा रहो नियंत्रन, सँमरउआ को तन को है।
मन के अंकुस बिन मानो हर काम व्यर्थ जीवन को है।।
तइसें तौ जो मन चाँउत तन कों तैसो करनें आउत।
नींद न चाँहो नींद आउ्त, जब टेरौ तौ भग-भग जाउत।।४।।

तुमईं सुनाओ अब कछु राधा! जो बिल्कुलईं अलग होबै।
जो सुनाव ना होय काउऐ बस ऐसो प्रसंग होबै।।
कायेसें कै जादाँतर देखौ ऐसोइ होत राधा!
सुनें चाँउ्त हैं हम कछु अपनो, पै बैसो न होत राधा!!५।।

मन की गाँठें खुल न पाउतीं उर बातें हो जातीं हैं।
मौंका और परिस्थिति आ ऊमें ब़ाधा उपजातीं हैं।।
ईमें बिबस मनुज हैं, जैसें देख लेव तुम हमईं कों।
करें चाँउ्त जो, कर न पाउ्त सो, भै है खुद सें खुदई कों।।६।।

उठ ठाड़े भए कहत-कहत, बोले हालत अब भिन्न भई।
अबलौं हम तटस्त जी रए ते पै अब हालत बल्द गई।।
जुरो जोग जगमन खँगार आ गव है सेबा में जब सें।
औ हमाइ सेबा में राधा! तुमें सौंप गव है तब सें।।७।।

भाव-बिचार हमाये बदले, बचो बदलबे कों जीवन।
दसा बदलनें हमें देस की कहत-कहत बैठे राजन।।
बोलो राधा! चुप्प काए हौ कछु अपनींअउ कह डारो।
बोली राधा, महाराज! का कयँ भव जा रव भुंसारो।।८।।

भाव अपुन के सुनबे में सरकार! मजा भौतइँ आ रव।
सुखद होय आगम जइ सुभ-सुभ सोच-सोच मन हरसा रव।।
अब तौ जौइ प्रार्थना है, गइ बीत रात बिसराम करो।
भुंसारें सब बातें हुइँऐं, महाराज! आराम करो।।९।।

बढ़ कें राधा महाराज के तरवन कों सहलान लगी।
तब जुझारसिंग बोल उठे, बस बात एक बन बान लगी।।
सो बिसराम न भा रव अब तौ, जो कै रए सो बात सुनो।
सायजहाँ सें भेंट करी, जो भव ऊऐ दै ध्यान गुनो।।१०।।

सायजहाँ सें आग्या माँगी नगर ओरछा जाबिन की।
बातउ पूरी सुनी न उननें, तौरी चढ़ गइती उनकी।।
साफ नाईं कर दइ जाबे की दुनिया भर की कै डारी।
बे बातें बरछी जैसीं ठँस गईं ऊकौ दुख है भारी।।११।।

बादसाय चाँउत गुलाम बन रहैं इतै उम्मर सारी।
औ' हरदौल राज भोगै, बौ खेल खेल रव ई भारी।।
एक तीर सें दो सिकार सम्राट करें चाँउत राधा!
निबल ओरछा राज्य होय, नृप राजभोग बंचित राधा!!१२।।

राज करत हरदौल देव को जब बैभव-जस बढ़ जैहै।
उतै राज भोगन जैहैं हम, तौलों तौ सब लुट जैहै।।
"जो हर जोतै खेती बाकी" बौइ हाल राधा! हुइऐ।
"चुन गए खेत चरेरू" तौ फिर सोचो अपनो का हुइऐ!!१३।।

हम सँमार हैं राज और हरदौल राज बंचित हुइऐ।
जब अधिकार न रैहै तब तौ अखर उऐ भौतईं हुइऐ।।
भओ जुध्ध पै आमादा तौ कोऊ ऊकौ का कर है।
बुन्देला दल तब आपुस में लड़-लड़ उर कट-कट मर है।।१४।।

मुगल राज हुइऐ निस्कंटक, बौ हुइऐ जो बे चाँहत।
बे बुन्देलखण्ड बुन्देला बीरहीन देखें चाँहत।।
है जुझार डरपोंक न कायर जई सिध्ध होकें रै है।
अब जादाँ दिन सायजहाँ मूरख न बनाय हमें पैहै।।१५।।

कौनउँ कौंने सें देखौ हम साहजहाँ सें कम नइँयाँ।
अपँए बंस की पाँचइँ पीढ़ी, ऊ जैसे का हम नइँयाँ!!
अतुल सम्पदा है ऊपै तौ हमऊँ ऊसें कम नइँयाँ।
हालाँकै हम पै नइँ ब्यौरा पै हेटे नेंकउँ नइयाँ।।१६।।

इतने पैऊ साहजहाँ की पीनस की पहरेदारी।
बौ सोचै कर है जुझार तौ मती गई ऊकी मारी।।
मूरख है बौ कह जुझारसिंग मार ठहाका ऐंन हँसे।
उठे और पोसाक पैंन जोधा सम निज हतयार कसे।।१७।।

जइ बेराँ काऊ नें उनको खट-खट द्वारो खटकाओ।
बढ़ जुझारसिंग नें खोलो, देखो, जगमन सनमुख आओ।।
कर जुहार बोलो कि अन्नदाता! ई मौंका है बढ़िया।
तुरत आगरा छोड़ चलो, ई बेराँ सो रइ है दुनिया।।१८।।

बोलो का तुमाव मत राधा! तुरत ओरछा चलनें है।
बोली, जोखिम लओ जात जो पूरी इच्छा करनें है।।
महाराज जू देव! देर शुभ कामन में ना होत भली।
साहजहाँ सें का मतलब, लो तुरतइँ राधा संग चली।।१९।।

चलो चलें जगमन! सुनकें राधा नें जात्रा सगुन करो।
तुरत जुझारसिंग्घ नें दलबल के सँग छिप कें गमन करो।।
रात अँधेरी छोड़ आगरा सें भागे चोरन नाईं।
भाग रओ तो रथ पै उनको मन जहाज की गति नाईं।।२०।।

बा बेराँ उनके दिमाक में इक भारी तूफान हतो।
और भावनन को हिरदै में करों ज्वार उफान हतो।।
रथ में सँग बैठी राधा मन के तनाव कों भाँप गई।
करबे कों सामान्य उनें कछु मुस्क्या कें बौ पास गई।।२१।।

महाराज बौ सुनो, सुनाई जो ना काऊ कों हमनें।
उतै रई जो बात अधूरी, कइती कैबे श्रीमन नें।।
तूफानन सें हटो नेंक मन, सीत लहर में जा उरझो।
टिके नैंन जा राधा मुख पै, बोले बोलो जो समझो।।२२।।

जो सुनाउँनें खुल कें बोलो त्याग सकल भ्रम औ चिन्ता।
बोली राधा, बौइ कै रई, करैं छमा पालनकरता।।
महाराज के राज्य ओरछा में 'छुटवारा' गाँव बसो।
ऊमें लोग हमाइ जाति के सबइ भलेंईं आप हँसो।।२३।।

जाति हमाइ बेड़िया है, इक खास बात हम लोगन में।
भौत समरपन भाव होत आपुस में इस्त्री-पुरसन में।।
ऐसे होत एक रस आपुस में जीकी कउँ नइँ समता।
बे बोले, तुम साफ कहो, कैसी समता उर इकरसता।।२४।।

महाराज कों जैसें अर्पित राधा पूरे तन-मन सें।
ऐंन पतो है पति माधव कों पै न घ्रना ऊऐ हम सें।।
ऊके मन में ना बिकार ना तिरस्कार कटु भाव रहै।
उल्टो जब हम मिलें दोउ तौ भौतइँ हममें नेव रहै।।२५।।

ऐंन डूब बिस्तार सैत पति के सँग मिलकें बात करें।
अपँए आसरे, प्रैंमालिंगन में कौनउँ न दुराव करें।।
बौ भी ऐसइँ गदगद होकें होत समरपित जू! हमकों।
जैसें हम भरपूर समरपित हैं म्हाँराजा श्रीमन कों।।२६।।

इकटक सुमुख निहारें राधा को जुझारसिंग म्हाँराजा।
खिली कुमुदनी सी लग रइती बैठी अति समीप राधा।।
रसयाउरी भावनन में डूबी राधा है आनन्दित।
कैत-कैत उर हलत-डुलत हो गइ म्हाँराजा कों अरपित।।२७।।

मन भौंरा गव बैठ कुमुदनी पै मानो रस पान करै।
अपनो आपा भूलो राजा लगै कि हरि को ध्यान करै।।
रात भुरारी और पौंन सीरी-सीरी मदमस्त बहै।
मन आई सो कैत-करत रइ, राजन की को बात कहै।।२८।।

म्हाँराजा की छाती पै राधा को सिर सोभा पावै।
और ओरछा को नरेस ऊ दासी को सिर सहलावै।।
जइ हालत में कभै दोउ सो गए कोऊ ना जान सको।
रथ दौड़त रव अपनी गति में कउँ न रंचभर चाक रुको।।२९।।

बीती रात, नित्तकिरिया उर काम सुरू भए संसारी।
साहजहाँ दरबार आव जब, सन्नाटो छा गव भारी।।
दरबारी उपचारिकता भइ पूरी उर सब चुप्प भये।
सन्नाटे कों चीर मीर मुंसी जू आय तुरन्त गये।।३०।।

बोले बे, हजूर की जै हो, गजब एक सरकार भओ।
छोड़ आगरा कों जुझार सिंग आज रात कें भाग गओ।।
आग्या नइँ दइती हजूर नें, तोउ आगरा छोड़ गओ।
ऊनें दइ आग्या उदूल उर नगर ओरछा पौंच गओ।।३१।।

समाचार सुन साहजहाँ अपमान मान हुंकार उठो।
जैसें आहत साँप कोउ कर आँख लाल फुंकार उठो।।
बोलो पहरेदार कहाँ मर गए ते जिननें नइँ टोको।
कतरा-कतरा करते ऊके, ऊऐ काये नइँ रोको।।३२।।

दुरदिन आये अब जुझार के, जिन संदेह करै कोऊ।
अब बुन्देलखण्ड-बुन्देलन कों न बचा सक है कोऊ।।
मन-मन सोचत, मिलकें बें बुन्देला जो कउँ एक भये।
मुगलराज्य संकट में आहै मानो हिन्दू जीत गये।।३३।।

तुरत पुत्र औरंगजेब कों साहजहाँ नें बुलवाओ।
करी बात गुपचुप आपुस में, का करनें सब समजाओ।।
इक्थाई हल के लानें सुत कों दइती जिम्मेदारी।
दइ नरेस नें लगा दाँव पै दच्छिन की सूबेदारी।।३४।।

है किसोर औरंगजेब, तन ठाड़ो भव तो जा बोलो।
चिन्ता अब अब्बा हजूर! ना करो न अब जादाँ बोलो।।
अपुन देखियो, का-का जइ मइँनाँ के आखिर तक होबै।
रगड़ै नाक जुझार और अब्बा हजूर सन्मुख रोबै।।३५।।

इतै आगरा की सड़कन पै झाड़ू ऊसें लगवैंहैं।
आग्या पालन ना करबे के परनामन कों समजैंहैं।।
साहजहाँ नें सैबासी दइ, बेटा! आसा जइ तुमसें।
तुमइँ काढ़ पैहौ ई काँटो, जो चाँहो लै जव हमसें।।३६।।

तुरतइँ अब बुन्देलखण्ड को बेटा! सत्यानास करो।
जैसी कै रए तैसोई करबे के अकट प्रयास करो।।
कर सलाम औरंगजेब दरबार छोड़कें तुरतइँ गव।
औ बुन्देलखण्ड बरबादी की तइयारी में लग गव।।३७।।

❋ दोहा ❋

औरन की गति देख कें चेत जात जो लोग।
दुरगति सें बच जात बे, फँसत न सहज कुजोग।।६।।
दूरदरसताहीन हैं, लालच और कुसंग।
बना देत जे मनुज कों, चरितहीन बदरंग।।७।।

—•—

सर्ग : बारा

महारानी के चरित पै आसंका

❋ दोहा ❋

जो कुसंग में फँस गओ, समजो काम तमाम।
बिरलोई मानव बचत, बरबादी सें 'श्याम'।।१।।
सुनी सुनाई बात पै बिन परखैं बिसवास।
मानो खुदई गरल पी कर रव अपँव बिनास।।२।।
जहाँ परख नइँ सत्व की उर न सती को मान।
उतइँ बास दुरभाग्ग को, उतइँ बसत हैबान।।३।।

❋ छन्द ❋

बैरी खुलकें बैरी बन गव अब जुझार को साहजहाँ।
राज्य ओरछा के बिनास को भव चालू सड़यंत्र महाँ।।
बुन्देला जुझारसिंग अपने पौंच ओरछा नगर गये।
भव स्वागत म्हाँराजा अपने रंगमहल में ठहर गये।।१।।
संग सेबिका राधा ठहरी, पै हरदौल देव जू नें।
उचित न ई समजो तो उननें, दव आदेस देव जू नें।
राधा ठहरै जाय गढ़ी में जहाँ जथोचित सब साधन।
सो राधा हुन पौंच गई ती द्वेस भाव परिपूरित मन।।२।।
महाराज की सेबा में हाजिर भइ आ दासी राधा।
सीस नबाकें नमन करो उर हल्की मुस्क्यानी राधा।।
महाराज बोले, ऐसेई काम चलैहौ का राधा!
दूर-दूर हम-तुम........, बीचइ में बोली ती इतरा राधा।।३।।

महाराज ऐंसेंई चलनें, बोले बे, है का कारन!
'राज तुमारौ गाँव हमारौ', है ई कारन साधारन।।
सुनो कामिनी को कटाक्छ तौ तिलमिलाय म्हाँराज गये।
उठ ठाड़े भए तन कें, गुस्स्याये अपनी पै आय गये।।४।।

मूँछन पै गुर्रा पै गुर्रा दै खिसिया बोले राजा।
तौ का नावमात्र के हम अधिकारहीन कोरे राजा!!
नइँ-नइँ, ई बुन्देलखण्ड भर में सत्ता पूरी अपनी।
सबपै है अधिकार हमारौ बापिस लो अपनी कथनी।।५।।

अटके रहैं आगरा में हम, साहजहाँ जइ सोचत रव।
जइ उधेर-बुन में रव हरदम, बुरौ हरदमइँ चाँउत रव।।
सोचत हुऐ ओरछा सें पत्ता अपने आपइँ कट है।
रँग चोखो आ जैहै उर ना हर्र-फिटकरी कछु लग है।।६।।

पै जुझारसिंग कों कोऊ बुलबुल-बटेर तौ मानै ना।
डारौ दाना चुगत-चुगत फँस जाय कोउ अनुमानै ना।।
है जुझारसिंग बुन्देला उर सान बुँदेलन बाली है।
आन मान पै मर मिटबौई हमरी सान निराली है।।७।।

अट्टहास कर बोले, जौहर अब जुझार को देख लिओ।
टहलत भये कक्छ में बोले, छुई-मुई जिन बोल दिओ।।
एकाइक गंभीर भये बोले, राधा! गड़बड़ हो गइ।
हमें तुमाई सुननेंती, बा बात बीचई में खो गइ।।८।।

अपँइँ बात हम कान लगे, राधा! तुम तौ अपनी बोलो।
खेंची कुरसी बैठत भए बोले, गाँठी मन की खोलो।।
राधा नें अंगूरी भर मुस्क्या जुझार के हाँत दई।
बाला के हाँतन हाला पी महाराज मन सान्ति भई।।९।।

देत भये अन्तिम गिलास बापिस बोले, बोलो राधा!
कौनउँ बात न बचा राखिओ अन्तरपट खोलो राधा!!
रथ में जो रै गई अधूरी बौई पूरी करनें है।
अपनो किस्सा महाराज! अब हमें उतइँ सें कहनें है।।१०।।

जबइँ हमाए आदमी नें जानी कै राधा आय गई।
दौरो-दौरो आओ लैबे, कल ऊसैं मिल आय रई।।
हालचाल बूझे ते मिलकें आपुस में हम दोउन नें।
ता पाछैं जो द्रब्ब हतो हम पै ऊऐ सौंपो हम नें।।११।।

पति सें अलग रहत भए तीनक साल बिता डारे हमनें।
तौऊ बौ पति, हम पतनी हैं, कछु न गलत सोची पति नें।।
नसा भड़क गव सुन जुझार को बोले इकदम गुर्रा कें।
तब तौ तैं बइ सँग रै जाती, इतै करत अब का आकें।।१२।।

अरी बदचलन औरत! कहकें महाराज उठ ठाड़े भए।
ओरछेस द्वारें जाबे कों गुस्सा हो चल ठाड़े भए।।
तुरतइँ राधा नें द्वारे पै रोक लओ बढ़कें उनकों।
चंचल चितउन उर मादक मुस्कान ढील देखौ नृप कों।।१३।।

बोली इतने मेंइँ अपुन रूठे उ' बुराई मान गये।
बिनइँ सुनें मन की हमाइ जू! अपुन छोड़ मैदान गये।।
'कछू सुनाओ ऐसो जो ना सुनो होय राधा! हमनें।
बौ प्रसंग राधा! सुनाव जो ना सुनाव होबै तुमनें'।।१४।।

जौइ हतो आदेस अपुन को, बस बइको पालन चल रव।
और अनकही जो कहानिया ऊकौई ई क्रम चल रव।।
राधा को सुर बिनती सें हट, रूठा-राठी बालो भव।
बोली, बात न सुरुअउ हो पाई कि क्रोध हाबी हो गव।।१५।।

बोल और नैंनन सें मानो अंगूरी भर भेंट करी।
पी जुझारसिंग जू लौटे उर आकें फिर कुरसी पकरी।।
पाँव पकर कें उनके राधा श्रीचरनन में बैठ गई।
बड़ी सफाई-चालाँकी सें फिर बे बातें कैत भई।।१६।।

साँच-झूँट में चारइ आँगुर को अन्तर है म्हाँराजा।
आँखिन देखी साँची, कानन सुनी न सच है म्हाँराजा।।
है भौतइँ मिठास बोली में, राधा! बस तुम कार्ती जव।
सरम-भिरम तज मन की घुंडी खोलौ और बोलतीं जव।।१७।।

जात बेड़िया नर-नारी हम एक दूसरे के पूरक।
कल्ल मिली पति सें बातें भइँ सबइ तराँ कीं आबस्यक।।
अपने तन के सकल समरपन में कमाइ सम्पत हमनें।
मन न गिलानी, बौ प्रसन्न है, दै दइ सब दौलत हमनें।१८।।

एक अपुन हैं, खो बैठे आपा, पति सें सुन प्रैंम-मिलन।
हम औरन में सम्पत्ती मानत हैं इस्त्री को तन-मन।।
साउकार अपनी पूँजी कों लगा करत धन्दे जैसें।
ऊसें भई आय सें अपने परिबारै पालैं जैसें।।१६।।

ठीक बइ तराँ जात बेढ़िया तन-मन बेंचत तिरियन के।
बई आय सें भरत पेट हम अपने लरका-बच्चन के।।
लेतीं कसमें पावनता की जात बेड़ियन में तिरियाँ।
उर बौपार जौइ करतीं हैं कछु असत्त ईमें नइयाँ।।२०।।

देखो अपईं राधइकों छाँईं में जौलौं चरनन की।
इतनी है पावन जितनी तिरियउ ना हुइऐ महलन की।।
सबइ एक सीं नइँ होतीं, राधा सबकी कैतउ नइयाँ।
बात बड़िन की को कै देबै, कैबोऊ भाउत नइयाँ।।२१।।

रनबासन की तिरियन कों पतिब्रतापना उर पावनता।
राजा उर समाज सें है ई प्राप्त बिरासत में गुरुता।।
बे जादाँ संयम बरतें, सो उनकों आबस्यक नइयाँ।
जैसेंकै इक बात कहें? नइँ-नइँ, कैबे लाइक नइयाँ।।२२।।

फिर कैंहैं, कह कें उठ बैठी, लगी भरन बौ अंगूरी।
महाराज बोले, राधा! दइ छूट आज तोकौं पूरी।।
बात अधूरी जिन छोड़ो, जो मन में हो सब कै डारौ।
दै दव हमनें अभय तुमें तो काए बात कल पै टारौ।।२३।।

राधा की दइ सुरा पिई उर पान खाय एकाग्र भये।
पाँव पसार बैठ बोले, राधा! बोलो हम त्यार भये।।
जिद न करो सरकार! सुनैंहैं फिर कभऊँ मौंको पाकें।
भौत दिनन में आये हौ सो राजकाज देखो जाकें।।२४।।

अभै ओरछा की पिरजा राजा हरदौलैई मानत।
साँची जा है सबइ अभै आदेसउ उनकोई पालत।।
राधा! तौ का लोग हमें कुटवार ओरछा को मानत ?
छी-छी, ऐसी जिन कव मालिक! हम जानत का को मानत।।२५।।

मालिक मालिक होत, न पहरेदार कहाउत है मालिक।
कभउँ-कभउँ पैरेदारउ बनबे की सोचत है मालिक।।
रत बौ मौंका की तलास में इकदिन बन बैठत मालिक।
ईके लानें घातें-प्रतिघातें बौ कैउ करत मालिक!!२६।।

जैसें राधा चली आगरा सें ऊ दिना संग आई।
और अपुन सँग रंगमहल में ठहरीती मन हरसाई।।
पै दिमान हरदौल देव नें उऐ ठीक नइँ मानो तो।
उतै हमाओ रैबौ इज्जत के बिरुध्ध अनुमानो तो।।२७।।

मालिक की ई दासी राधा के लानें आदेस दओ।
'रहै गढ़ी में, सो रै रइ, पै मालिक पै संदेह भओ।।
लेकिन......., कैकें रुक गइ राधा बैरभाव ऊके मन में।
दुराभाव की गन्ध आइ, देखी राधा की बातन में।।२८।।

महाराज तन कें बैठे उर तुरत बैखरे बे बोले।
सुननें हैं न पहेलीं, बोलो 'लेकिन' के आँगें, बोले।।
साँची कत सरकार! प्रान मन हमरेऊ अकुलाय रहे।
साँची-साँची कैबे कों, पै मनई मन घबराय रहे।।२९।।

छोटे मौं हम बड़ी बात कैसें कयँ, मोय लगत संकट।
सीमा होत एक दासी की, पालें नइँ चाँउत झंझट।।
सुन जुझारसिंग भड़क गये बोले ऊसें कर ऊँचौ सुर।
राधा! साफ-साफ उर जल्दी बोलो, बोलो कीकौ डर!!३०।।

छमा करें सरकार! बात अपनी चारइ कानन में रय।
बन्द किबार करत भइ बोली बात अपँइँ अपनइँ में रय।।
नेंकउँ जो बिसवास होय तौ कव, नइँ तौ बस चुप रै जव।
जब दै चुके अभय तौ काये बेर-बेर जे बातें कव।।३१।।

जो माँखीं म्हाँराजा के जूतन पै करतीं हैं भिनभिन।
उनमें सेंइँ एक राधा है, ब्रथा और कछु सोचैं जिन।।
महाराज के मान आदि में जहाँ गिरावट समज परत।
या कौनउँ सड़यंत्र गन्ध आउत कउँ सें मन कसक उठत।।३२।।

सदाँ रैत तइयार हम़ाओ ई तन-मन मर मिटबे कों।
पै न होत तइयार बिरोधी बातें कहबे-सुनबे कों।।
पाकें गन्ध आगरा के सड़जन्त्रन की कइती हमनें।
छोड़ आगरा चलो, करीती महाराज बिनती हमनें।।३३।।

जो न छोड़ते कुसल नइँ हती, पै न ओरछउ कम लग रव।
इतउँ भौत सड़जन्त्र चल रहो, हरें-हरें सोता मिल रव।।
धरती जैसे धीर, अन्नदाता बिसाल अम्बर जैसे।
ओरछेस म्हाँराज भौत गम्भीर अपुन सागर जैसे।।३४।।

ध्यान न जात अपुन को छोटी-मोटी बातें-घटनन पै।
पिरतिस्ठा की बना-बिगर है जबकैं आधारित इनपै।।
गुपचुप बालीं राजघरन की बातें पिरजा ऐंन सुनत।
का, कैसें उर काए भओ, इन सब बातन कों भौत गुनत।।३५।।

चलत-चलत बेई बातें बनतीं कहानियाँ - कानातें।
और अँगारूँ चल कें बनतीं बे इतिहासन की बातें।।
बिगरी बात बंस भर डूबत, सान रुँदत तरवन नेंचें।
नइँ छोड़त इतिहास काउऐ, चाँयँ डोर ईसुर खेंचें।।३६।।

राधा! इतनी जोग्य - दूरदरसी हौ हम नइँ जानत ते।
सीदी-सादी एक गाँव की औरत भर हम मानत ते।।
साँची बूझौ सई सहायक उर मारगदरसक तुम हौ।
बड़ो भाग राधा! हमाव, प्रभु नें पौंचाओ सँग तुम हौ।।३७।।

संग अपुन के आइ आगरा सें पौंची रँग महलन जब।
उतै मिले हरदौल और म्हाँरानी बातें करतन तब।।
मधुर बारतालाप चल रओ तो हँस-हँस कें दोउन में।
स्वामी भगत मान रइती मैं पै घिरना हो गइ मन में।।३८।।

महारानियइँ नें उनकों परसो भोजन अपने हाँतन।
बात साफ भइ उनके मन को दबो पाप आओ आँगन।।
धुँआँ देख कें पतो चलत आगी काँ है का हालत में।
समज सकत अन्धउ बे बातें जो हैं उनकी आदत में।।३६।।

सौने-चाँदी के थारन भोजन परसो तौ रानी नें।
सौंने बालो थार दओ तो हरदौले म्हाँरानी नें।।
भोजन चाँदी के थारा में मालिक कों दव तो उननें।
माथो ठनको तो हमाव दुख की उसाँस लइती हमनें।।४०।।

बिबस सोचबे कों कर रव मन बारम्बार हमें मालिक!
जबकैं कछू न सोची हुइऐ तुमनें ई मद्दें मालिक!!
हौ उदार, भौतइँ महान पै भुला न पा रए हम ऊऐ।
हमें भौत अपमान लगो है ईको का आगम हूऐ।।४१।।

कहत-कहत में फफक पकर लए पाँव लमक खल राधा नें।
हते नसा में धुत जुझारसिंग, मानी जो कइ राधा नें।।
बात पकर लइ ऊकी, मन में गाँठ लगी उन बातन सें।
लग रए ते आधे पागल से बिलग भओ तो मन तन सें।।४२।।

चम्पाबती राजरानी को चरित तैर गव आँखन में।
पै ना खोट ढूँड़ पाये बे सोचत रए भौतइँ मन में।।
फिरऊँ अन्तिम निरनै करबे की हालत में बे नइँ रए।
ऊबे ते जुझार जू झटका सें बे कुरसी सें उठ गए।।४३।।

पाँव खेंच राधा सें, बे खोले किबार द्वारें कढ़ गए।
तेज चाल में ओरछेस जू देव किला तन कों बढ़ गए।।
राधा नें देखौ उर अपनी चालाँकी पै मुस्क्यानी।
तीर निसाने पै जा ठँस गव, सोच-सोच कें हरसानी।।४४।।

❋ दोहा ❋

जगमन की सौगात अब, दिखा रईती रंग।
रचे गये सड़जन्त्र में दै रइ कुटनी संग।।४।।

सक की नइँ कौनउँ दबा, लाख करो उपचार।
जइ बीमारी सें ग्रसित भए म्हाँराज जुझार।।५।।
मदिरा मूल बिनास की तन-मन-धन नस जात।
मान-पान उर ख्याति सब मदिरा पियत नसात।।६।।
मदिरा, कुल्टा कामिनी जीके भी रयँ संग।
ऊकौ जीवन होत है अति कुरूप भदरंग।।७।।

— ● —

सर्ग : तेरा

ओरछेस-सम्मान सभा

✹ दोहा ✹

हैं जुझारसिंग महल में म्हाँरानी के संग।
सोचत हैं ठाड़े कछू मन पै छाव कुरंग।।१।।
राजा होय कि रंक जब ऊ सँग जुड़त कुसंग।
सुभग बिचारन कों डँसत धूर्त कुसंग भुजंग।।२।।

✹ छन्द ✹

चम्पावती राजरानी बीड़ा लैकें सन्मुख आई।
पान धरो अधरन पै उनके मिले नैंन बे मुस्काई।।
चौंके से म्हाँराजा नें मुस्काकें बीड़ा दाब लओ।
बोले, चम्पा! चलो-चलो रथ लैबे द्वारें आय गओ।।१।।

म्हाँराजा जुझारसिंग पतनी चम्पा सँग बाहर आये।
बैठे रथ पै और सारथी कों आग्या दइ हरसाये।।
राजदम्पती सोभित रथ नें जैसेंई प्रस्तान करो।
धाँयँ-धाँयँ चल इक्किस तोपन नें नृप को सम्मान करो।।२।।

भौत दिनन में आए ओरछा नृप जुझारसिंग म्हाँराजा।
हतो देखबे जोग नगर उर हर-इक स्वागत दरबाजा।।
स्वागत द्वार राजपथ पै जग्गाँ-जग्गाँ जाँ सें जानें।
भौतइँ चौकन्ना बिभाग सब हते बिबस्था अनुमानें।।३।।

साफ सफाई सिगयँ, कितउँ नइँ पिरदूसन को नाम हतो।
सबनें अपने गेह सजाये, सबके मन उल्लास हतो।।
उमड़ी भीड़ महाराजा-म्हाँरानी के करबे दरसन।
कढ़ी सबारी तिरियाँ हेरें चढ़-चढ़ भवनन के छज्जन।।४।।

सभा बिबस्था और सुरच्छा के भारी पिरबन्ध हते।
नगर ओरछा में रक्छादल जगाँ-जगाँ प्रतिबध्ध हते।।
सभा थली रथ पौंचो जब, हरदौल देव लैबे आये।
लयें संग अँगरक्छक नृपदम्पति कों बे लैबे आये।।५।।

भब्ब मंच पै भब्ब सिंहासन के ऐंगर उनकों ल्याये।
प्रजा और सब सभा सान्त भइ देख उनें सब हरसाये।।
करकें नमन प्रजा कों भए आसीन सिंघासन म्हाँराजा।
भए प्रसन्न हरदौल देव, हरसित बैठे रानी-राजा।।६।।

जैकारे हरदौल देव नें अति प्रसन्न मन लगवाये।
गूँजौ जैकारा नभ में, उड़-उड़ पंछी देखन आये।।
बिरदाबलि, जसगाथा उर इस्तुती पढ़ी आ भाटन नें।
भेंटें दइँ गणमान्न नागरिक सासक उर सामन्तन नें।।७।।

भेंटें नजरें उर निछाउरन को क्रम रव घंटन जारी।
भरी खचाखच सभाथली की सोभा लग रइती न्यारी।।
ठाड़े हो, हरदौल देव बोले, ओ सबई पिरजाजन!
ओरछेस म्हाँराज हमें अब दैंहैं अपनो उद्‌बोधन।।८।।

महाराज सें हाँतजोर कें बिन्ती है दें उद्‌बोधन।
कहकें भये एक लँग ठाड़े, करकें उनकों सम्बोधन।।
एकाइक उद्‌बोधन की सुन, चौंके से फिर चेत गये।
संयत हो जुझारसिंग जू उद्‌बोधन कों तइयार भये।।९।।

बोले, 'सबइ आत्मबत प्रिय पिरजाजन, हैं हम धन्न महाँ।
नगर ओरछा धन्न, बिराजे साच्छात श्रीराम जहाँ।।
राजा इतै रामराजा हैं जिनकी किरपा हम सब पै।
रक्छा-सुख-दुख आदि सबइ को सिगव भार उन राघव पै।।१०।।

करत प्रनाम जुझारसिंग कर जोर उनइँ परमेसुर कों।
अब हम अपँई बात कहत सो सुनो, समरपित तुम सबकों।।
पिता बीरसिंग-जहाँगीर में भौत मधुर सम्बन्ध रहे।
एक दूसरे के सैजोगी बे जीवन परयन्त रहे।।११।।

जहाँगीर की मिर्तु बाद श्री बीरसिंग्घ म्हाँराजा नें।
कर लव राज्य सुतंत्र ओरछा, संग निभाओ पिरजा नें।।
मानव धरम ब बिस्व प्रैंम को ह्रास होत देखौ भौतइँ।
धरम जगत में कलह, कपट सें जहाँगीर ऊबौ भौतइँ।।१२।।

तब बैदिक 'बसुधा कुटुम्ब' कल्पना याद ऊऐ आई।
भासा बदल 'सुलहकुल' की थापना देस में करवाई।।
काऊ नें सैजोग न दव कै सफल कल्पना बन पाती।
राज ओरछा संग न देतौ, ऊकी माटी कुट जाती।।१३।।

म्हाँराजा बुन्देलखण्ड केसरी बीरसिंग भए अँगुआ।
और 'सुलहकुल' सफल बनाबे, राज ओरछा भव अँगुआ।।
ईकौ एक प्रमान, ओरछा में निरमित ज्हाँगीर महल।
जो सदियन लौं साक्छी रैहै, बिस्वप्रैंम को बन सम्बल।।१४।।

अकबर की कल्पना और ज्हाँगीरी रचना की बातें।
बीरसिंग्घ की मीनाकारी, सबके संग भई घातें।।
साहजहाँ संकुचित सम्प्रदाई बिचार बालो निकरो।
गलत बिचारन वाले कठमुल्लन के कारन बौ बिगरो।।१५।।

जी कारन अब दूद एकता को फट कें बिस जैसो भव।
साहजहाँ बैरी बुन्देला उर बुन्देलखण्ड को भव।।
खून न बहै अकारन उर रय सान्ति ऐंन सोची हमनें।
तइसें दिल्ली की मंसबदारी सुइकारी ती हमनें।।१६।।

करबे सफल 'सुलहकुल' हमनें लोगन में सदभाव भरे।
प्रैंम-एकता-सान्ति आदि के लानें कैउ प्रयास करे।।
पै दुख तो तब भओ हमें जब सायजहाँ उल्टो निकरो।
बौ एकाकी धरम आँधरो, अरी हिन्दुअन को निकरो।।१७।।

फैंक 'सुलहकुल' साहजहाँ निकरो 'इसलाम जहाँ' पालक।
उर 'बसुधा कुटुम्ब' को निकरो बौ बैरी भारी घातक।।
कइयक हिन्दू धरम पंडितन नें मिल ऊऐ समजाओ।
पै दौलत-सत्ता के मद में एकउ तरक न मन भाओ।।१८।।

हिन्दू मनसबदारन कों अब बौ न सहायक मानत तो।
बल्कें ताबेदार गुलामन को दरजा दयँ चाँहत तो।।
हिन्दू-हिन्दू धरम सबइ पै कहर ढा रहो तो अब तौ।
हिन्दू धरम ग्रन्थ, मन्दिर तक नस्ट कर रओ तो अब तौ।।१६।।

बुन्देलइ ते आड़ें नइँ तौ बौ जानें का कर देतौ।
बस नइँ चलो नईं तौ चंदा-सूरज-धरती मथ देतौ।।
सुघर सलौनी हिन्दू तिरियन कों जबरन उठवा लेबै।
और हिन्दुअन कों जबरन बौ मुसलमान बनवा देबै।।२०।।

देख-देख जौ हाल रो परो अन्तरतम, ओ पिरजाजन!
हमनें दिल्ली और आगरा छोड़े, ओ परिजन-पुरजन!!
क्रपा रामराजा की है उर रैहै बौ हमपै हरदम।
किरपा ना कर सकत काउपै और लैउ नइँ पाउत हम।।२१।।

केबल हम सैजोग कर सकत और लै सकत औरन को।
क्रपा रामराजा की रय, सैजोग-प्रेंम रय तुम सबको।।
अब तौ साहजहाँ की किरपा पै जीबैं धिक्कार हमें।
ऊके सामूँ अब नइँ नबनें मरबौ है सुइकार हमें।।२२।।

अब भलेंइँ इतिहास भावना कों हमाइ कल धिक्कारै।
हटी, रूढ़बादी, अदूरदरसी भलेंइँ बौ सुइकारै।।
पै आबाज आतमा की अनसुनी न कर पैंहैं भइया!
ई कारन हम सायजहाँ के बैरी बन रैहैं भइया!!२३।।

बौ हमरे ई सौभमान - दुस्साहास कों नइँ सह पैहै।
दौलत उर सत्ता मद अन्धौ बदलो तौ अबसइँ लैहै।।
सावधान हम सबइ रहैं ई नसा भौतई मादक है।
जबकै मद है सारहीन तौऊ नर ऊकौ गाहक है।।२४।।

सार रूप कयँ चाँउ्त अन्त में, बात न रइ अब साधारन।
अपुन सबइ भाबी संकट सें घिर गए हौ हमाए कारन।।
बिनय करत ईसुर सें सदबुध्धी देबैं बे मुगलन कों।
सायजहाँ छोड़ै दुराचरन अपनाबै सुभ कामन कों।।२५।।

इत्ती कहकें नृप जुझार सिंग जू करबध्ध नमन करकें।
बैठे ते सिंग्घासन पै बे खतम अपँव भासन करकें।।
सुनकें भासन पिरजा जादाँ कछू सोच नइँ पा रइती।
और सकपका कें रै गइती, निरनै लै नइँ पा रइती।।२६।।

आतमहीन भाव मन के हरदौल देव नें आँके जब।
राजदम्पती कों प्रनाम कर बे जन सनमुख आये तब।।
प्रभू रामराजा के जैकारा उननें आ लगवाये।
हतो गगनभेदी सुर ऐसो मेघ गर्जना सरमाये।।२७।।

पिरजा के मन उर दिमाक में नामरदी के जो कउआ।
काँव-काँव कर रएते उड़ गए सुन जैकारे को हउआ।।
पिरजा में फिर फुरती आई, हर तन में रोमांच भओ।
आये चेतनता-बिबेक सें सबकोई मन सान्त भओ।।२८।।

अब दिमान हरदौल देव बोले, भइया इक बात सुनो।
घटना एक सुनाउत हैं बौ सुनो ध्यान सें और गुनो।।
एक बेर सेरनी 'अजुध्या बन' कों निकरी ती घूमन।
संगै ल्याइ दिखाबे कों अपने अबोध बच्चै बौ बन।।२६।।

नदी बेतवा में नहायबे उतर गई गहरे पानी।
करन लगी जलक्रीड़ा, आ गव स्यार झुंड पीबे पानी।।
पै बे देख सेरनी कों सब इतै-उतै भग कें दुक गए।
मौंका पाकें निकर स्यार ऊ बच्चा सें आकें मिल गए।।३०।।

घेरौ आ अबोध बच्चा कों संग खिलाओ-फुसलाओ।
बे खिलाउ्त लै गए अपने घर, पतो न माँ कों चल पाओ।।
अब सियार भौतइँ प्रसन्न, मिल बनी जोजना उन सबकी।
इऐ सेर सें स्यार बना कें रैहैं, भइ बैठक उनकी।।३१।।

संसकार हम स्यार जात के डार सफल होंकें रैंहैं।
और सेरनी के बच्चा कों लौटन हम न घरै दैंहैं।।
धीरें-धीरें- सिंग्घ पूत आचरन कर उठो स्यारन के।
सँग खेलै किल्लोल करै, भव तौ स्यानो सँग रै उनके।।३२।।

अब बसंत आओ सब स्यारन नें मनाव उतसव मिलकें।
नचे, गीत गाये, चिल्लाये 'हुवा-हुवा' वे सब करकें।।
'हुवा-हुवा' सुर सुनो सिंग्घ जाये नें तौ माथो ठनको।
बौ असलीयत समज गओ, जब देखो तो रँग-ढँग उनको।।३३।।

अब दिमाक भन्नानो ऊकौ धीरें-धीरें गुर्रानो।
सोच-समझ औकात घुमाई पूँच और सीना तानो।।
भरी एक हुंकार दहाड़ो उर स्यारन पै टूट परो।
आसमान में उल्लाये कछु फेंके उर संहार करो।।३४।।

जंगल भर थर्रा गव भागे स्यार देख लईयाँ-पईयाँ।
स्यार बना ना पाए सेर कों रोये हा दइया-दइया।।
सेर दहाड़त भव अब तौ जा पौंचो तो अपने घर में।
चिपका लव छाती सें माँ नें पा सुत कों अपने घर में।।३५।।

ओरछेस म्हाँराजा पै भी लागू हो रइ ई घटना।
फँसे हते दिल्ली सासन में, टूटो मुगलन को सपना।।
सारदूल बुन्देला जू अब अपने असली घर आये।
सबइ सिंग्घ अब एक संग हैं, अब कोऊ जिन घबराये।।३६।।

कर प्रनाम पिरजा कों बैठेते हरदौल देव हँसकें।
बजीं तारियाँ उर जैकारा बुले बुँदेलन के कसकें।।
भए उदास लोगन के मन में भर दव तो उतसाय बिकट।
बुन्देला हरदौल बीर नें मानो सब हर लव संकट।।३७।।

भओ आम दरबार बिसरजन फूलबाग के प्रांगन में।
राजदम्पती, दरबारी, सम्भ्रान्त नागरिक जन सँग में।।
उठे रामराजा के दरसन कों सब मन्दिर तन आये।
मन्दिर के सन्मुख बिसाल मैंदान बीच जैसइँ आये।।३८।।

देखौ इक जमाव जनता को, ध्यान उतै गव उन सबको।
लयें नादिया एक तरुन जोगी पै ध्यान टिको नृप को।।
नंदी द्वारा समाधान संकन को कर रव तो जोगी।
महाराज-म्हाँरानी कों देखत खन हुंकारो जोगी।।३६।।

सुन हुंकार राजदल थम गव, देखत है ऊकौ करतब।
ऊँचे सुर जोगी बोलो, नन्दी अँगाइँ बढ़ आओ अब।।
म्हाँराजा-म्हाँरानी ढिंग जा, अपनी आसिस दो उनकों।
कौनउँ संका समाधान चाबें तो उत्तर दो उनकों।।४०।।

धीरें-धीरें चल नन्दी पौंचो जुझार चम्पा ऐंगर।
दम्पति नें सिर छू नन्दी को करो नमन जोरे ते कर।।
ईके बाद लौट कें नन्दी पौंचो जोगी के ऐंगर।
जोगी फिर हुंकारो बोलो नन्दी तन थप्पी देकर।।४१।।

काउ भाइ कों कौनउँ संका समाधान करनें होबै।
बूझ सकत नन्दी बाबा सें, मन जो-जो जीके होबै।।
कछू देर तौ रव सन्नाटौ, तब जुझार जू बढ़ आये।
नन्दी सें बोले, नर-नारी जो करबे दरसन आये।।४२।।

सरबश्रेस्ट पतिब्रता कौन इन तिरियन में ई बतलाओ।
हाँत फेर नन्दी पै जोगी बोलो, नंदी जी! जाओ।।
बूझी म्हाँराजा नें ऊकौ, उत्तर दो नन्दी बाबा!
निरबिकार उर बिना झिजक साँची कै दो नन्दी बाबा!!४३।।

मंथर गति सें चलो नादिया लगा दओ ऊनें चक्कर।
प्रस्न अनौखो सुन भौंचक्के सब सुनबे ठाड़े उत्तर।।
नन्दी नें बढ़ राजमहिसि चम्पा जू को आ हाँत छुओ।
औ' दैबे सम्मान ढिंगा रानी के तुरतइँ बैठ गओ।।४४।।

देख प्रजाजन म्हाँरानी के लगा उठे सब जैकारा!
म्हाँराजा मुस्क्याने, बोले उननें भी सँग जैकारा।।
भए प्रसन्न मौंतिन माला नन्दी के सींगन पहराई।
राजदम्पती को जैकारा गूँजौ पिरजा हरसाई।।४५।।

चलो राजदल मन्दिर पौंचो भगवन की आसीस लई।
लौट रयेते जई बीच चम्पत सें नृप की भेंट भई।।
चम्पतराय-जुझारसिंग्घ में भईं गुप्त बातें मिलकें।
चले दुर्ग के लानें तुरतइँ संका भइ मन में सबकें।।४६।।

❋ दोहा ❋

भईं गुप्त बातें कछू, चम्पत-नृप के बीच।
पतो न काऊऐ चलो, रईं दोइ के बीच।।३।।
नृप सें लै आग्या गये सबइ भूप सामन्त।
ख्यातनाम सब नागरिक गए निज गेह तुरन्त।।४।।

— ● —

सर्ग : चउदा

सड़यन्त्र रहस्स

❋ दोहा ❋

परमबीर हरदौल जू आये निज रनिवास।
भ्रातप्रैंम उर मिलन सें मन में भौत हुलास।।१।।
प्रिया हिमांचल कुँअरि सें मिले देव हरसाय।
पै उदास मुख, मलिन मन, मिली हिमांचलि आय।।२।।

❋ छन्द ❋

देख तुरत हरदौल देव बोले हेमा! का बात भई।
खिली कुमुदनी फूलबाग की का कारन कुमलाय गई।।
ई तुमाए हरदौल भ्रमर कों जौई एक फूल भाबै।
सोऊ मुरझानो दिखात ई भ्रमर बिचारौ कौं जाबै।।१।।
कमल पाँखुरी से कजरारे नैंन कटीलिन कों का भव!
इन गुलाब की कली सरीखे अधरन को रँग खो काँ गव!!
खिली पाँखुरी पै मुक्तामनि सी दन्ताबलि नइँ दिख रइ।
तुमउँ हँसो-मुस्काओ हेमा! आज सिगइ नगरी हँस रइ।।२।।
हल्की मुस्क्या बोली हेमा, भओ आज का-का देबा!
जो भौंरा इत्तौ प्रसन्न है, चाँऊ्त फूल सें का सेबा!!
भइया ओरछेस-म्हाँरानी जब बैठे आ सिंग्घासन।
जैकारा गूँजे, अब बे कउँ नइँ जैहें दव आस्वासन।।३।।

उनके कारन सक्ति हमाई भौत बढ़ी जानत सबई।
मुगल न कछू बिगारत जो रयँ एक सूत्र में बँध सबई।।
भइया कों जानें का सूजी, जा बूझी इक नन्दी सें।
सबसें जादाँ नारि पतिब्रता कौन आय, कइ जल्दी सें।।४।।

नन्दी घूमौ उर चम्पा भौजी कों ऊनें आन छुओ।
बजीं तारियाँ और गगन में जैकारा सुर गूँज गओ।।
हेमा! तबियत भइ प्रसन्न, सुन हेमा भी पिरसन्न भई।
लेकिन फिर सें सोच कछू बौ भइ उदास रै सन्न गई।।५।।

आँगू बढ़ हरदौल देव नें भर लव अपनी बाँहन में।
बोले, प्रिया! बात का है, बोलो तौ का सदमा मन में।।
मुख को तेज हो रहो फीको, ठीक नईं तबियत है का?
बोलो हेमा! जिन छिपाव कछु बोलो तो कारन है का??६।।

धरो हाँत माथे पै बोले, तुमाव तौ माथो तच रव।
तुमनें अबलों नइँ बताइ, का हाल अपँव तुमनें कर लव!!
हेमा नें निज पतीदेव को हाँत अपँए हाँतन पकरो।
छोड़ी गहरी साँस और आँखन के द्वार दुक्ख बिखरो।।७।।

अँसुआ पौंछ हिमांचल अपने पति को सुमुख निहार रही।
इकटक देख रई पै कौनउँ बात न ऊपै जाय कही।।
अति चिन्ता में डूब कुँअर हरदौल पलँग आसीन भये।
बोले हेमा! साफ कहो, किन कारन अंग मलीन भये??८।।

जिन छिपाव कछु उर बनावटी बात न तुम कौनउँ कइयो।
कसक होय जो कौनउँ मन में कैबे में जिन सँकुचइयो।।
तौ जो कहें चाँउ्त का साँचउँ नइयाँ पतो देव! तुमकों!
है का बात बताओ कैसें 'हाँ'-'ना' ज्वाब देयँ तुमकों!!६।।

जौन बिसय कों लै चिन्ता है, तनिकउँ ग्यात न होय हमें।
जौउ हो सकत, सबइ पतो हो, सो तुम देव सुनाय हमें।।
भइया आधी रात आगरा सें भागे सो का कारन?
आए ओरछा मुगलन के भै, बात न है जा साधारन।।१०।।

हँसे देव बोले, हेमा! ईमें बिसेस का बात भई।
महाराज नें खुदइँ सभा सनमुख अपनी जा बात कई।।
भइया नें ई कह सुनाइ, भइ सायजहाँ नृप सें अनबन।
तइसें बस्स आगरा छोड़ो, सावधान रयँ हम सब जन।।११।।

उन्नें इत्ती कइ उर कर लव है बिसवास देव तुमनें।
अबिस्वास को कौन बिन्दु है, कव जो सुनो होय तुमनें।।
सत्त बता रए ई सें जादाँ नइयाँ कछुअउ ग्यात हमें।
भए गम्भीर और चिन्ताकुल, बोले, कव जो ग्यात तुमें।।१२।।

पसर बैठ गए पलका पै बे और लोढ़ पै जा लटके।
बोले, का रहस्स है हेमा! प्रान प्रश्न में जा अटके।।
बन्द द्वार करकें हेमा नें साँकर तुरत लगाय दई।
कैबे अपनी गुप्त बात बौ आय पलँग पै बैठ गई।।१३।।

साँचउँ तुम कितने महान, ई कुटुम ओरछा काँ जानत!
'तुम पिरजा के प्रान', 'साँस की गति', पै बे सब काँ मानत!!
कास! महाराजा भी इन बातन को समजैं उर जानैं।
नइँ जानत तौ देव! तुमें जे बातें उनकों समजानैं।।१४।।

हेमा जू! मस्तिस्क तुमाओ ठीक न कछू मोय लग रव।
खटका मोय स्वास्थ को हो रव, हेमा! कौन रोग लग गव!!
स्वास्थ हमाव ठीक है; पै आगम न लगत मंगलकारी।
लै उसाँस चुप हो गइ हेमा, हर बोले, कव सुकुमारी।।१५।।

देव! राजपरिवार ओरछा रच रव है सड़यंत्र महाँ।
जो बिरुध्ध हरदौल देव के, भान अपुन कों किन्तु कहाँ!!
साहजहाँ उर महाराज में भव मत भेद राजनैतिक।
मान लई, पै ईके पाछें है कारन इक चारित्रिक।।१६।।

म्हाँरानी पै चरितहीनता को लांछन थोपो जा रव।
छी-छी हेमा! भौजी चम्पा चरितहीन ? जो हो का रव!!
ओछी बातन की कहानियाँ मनगढ़न्त जे को गढ़ रव?
और कौन के संगै ई सम्बन्ध जोर कें बौ चल रव??१७।।

परम लाड़ले लाला उनईं के हरदौल कुँअर संगै।
जोरो है सम्बन्ध खलन नें भौजी को देउर संगै।।
इकटक प्रीतम कों निहार हेमा नें गहरी साँस लई।
टप-टप अँसुआ गिरैं भूमि पै, हाय गजब की बात भई।।१८।।

सुनतइ निकरी चीख बीर पावन हरदौल देव मुख सें।
कँपी देव उर ठाड़े हो गए बार मूँड़ के बा भय सें।।
कछू देर मन रव असान्त उर कलह सिन्धु में डूब गओ।
दोउ जने बे भए अबाक उर अति दारुन बौ द्रस्स भओ।।१६।।

जुटा आत्मबल और नियंत्रन करकें बुध्धी उर मन पै।
कछु तन कें हरदौल बैठ गए डारी नजर हिमांचल पै।।
बोले, हेमा! तुमें ग्यात जे बातें भईं काँसें-कैसें।
हालाकैं अब कछू समज में आ रइ, का भव है कैसें!!२०।।

तुम तौ पैलें अपँईं बात कों पूरी कव उर समाजाओ।
फिर अगाँईं हम कछू बोल हैं, अपँईं बात सब कह जाओ।।
बोली हेमा, याद हुऐ सावन मेला बाली घटना।
बजन उठाबे में हारो तो है बइ जगमन की रचना।।२१।।

भाग ओरछा सें गव तो बौ अभउँ पतो नइयाँ काँ गव।
बनो बौइ बैरी उदिना सें बौइ बोय बिस बीजा रव।।
बौ खँगार बैरी तुमाव, है अन्तरंग सेबक नृप को।
बइ नें अपनी इक बिसेस कुटनी सेबा में दइ उनकों।।२२।।

कुटनी राधा नाम आजकल कर रइ सेवा भइया की।
बइ चुड़ैल तो कान भरत, का-का कयँ बा हरजइया की।।
ओई नें उकसाव, आगरा छोड़ रात कें भग आये।
चलत इसारन पै जगमन के, लगत कि अब दुरदिन आये।।२३।।

मदिरा पिबा-पिबा कें कुटनी धुत्त नसा में राखत है।
तबइँ बिरुध्ध तुमाये उनसें कुभर भूतनी भाखत है।।
राजन कें बस कान होत हैं, बुध्धी कों इस्थान कहाँ।
जो कुटनी कत, मानत हैं सइ, रैत नसा में ग्यान कहाँ।।२४।।

इस्त्री कों तौ पैत्रिक सम्पत कही जात है पुरसन की।
करो चरित पै पैदा संका, करो ऐंन अपने मन की।।
इऐ औसनस नीत कहत जीकौ प्रयोग जौ होय रओ।
अपुन और म्हाँराज बीच ईजतन फूट को होय रओ।।२५।।

अब सड़यंत्रकारियन के भी देव! उजागर नाव भये।
सुन चौंके हरदौल देव बोले, बताव बे नाव नये।।
हेमा बोली, हीरादेवी है माँ की सौतन बैरी।
हैं पहाड़सिंग उर प्रतीत दोऊ जैसो जगमन बैरी।।२६।।

पत्थर पै पत्थर पटकत जा तौ आदत है इन सबकी।
फूटै ऊपर या नीचे को, खुसी दोउअन में इनकी।।
कहो प्रिया! पै इन लोगन को पता चलो कीसें-कैसें?
आकुलता बढ़ रइ मन की, हेमा! बोलो, ई भव कैसें??२७।।

देव! हमाई सबसें जादाँ सुभचिन्तक बेला मानो।
राजमहल में रहत करत नृपदम्पति की सेवा जानो।।
जौ सब बौ कर रई अपुन की सदाँ सुरच्छा के काजें।
बइ नें इक-इक बात बताई सावधान करबे काजें।।२८।।

कर बिचार बोले, हेमा! लग रहो सार इन बातन में।
महाराज नें आज करो जो, राज लगो उनके मन में।।
भइया नें जा तौ बताइती काए आगरा सें आये।
पै जो बेला नें बताइ बौ असली राज न कै पाये।।२९।।

नन्दी बाली घटनउँ सें हेमा! ईकी पुस्टी मिल रइ।
तब तौ दइती टार हँसी में, अब सबई मंसा खुल गइ।।
नन्दी सें जो प्रस्न करोतो बौ उनकों उल्टो पर गव।
दुस्चरित्र बे सुनें चाँउ्त ते, सच्चरित्र उत्तर मिल गव।।३०।।

'सबसें जादाँ दुस्चरित्र को,' उनें प्रस्न ई करनें तो।
पै 'सच्चरित' सब्द कढ़ गव तो जो नइँ कतई कहनें तो।।
संका उर दुरगन्ध भावनन की उनकी साफइँ दिख रइ।
बा कुटनी की नजर और नीयतउ मंथरा सम लग रइ।।३१।।

फिरउँ हमें गहराई सें सब सोच बिबेचन करनें है।
तब कौनउँ निरनै लैनें है, कदम नओ तब धरनें है।।
बिना बिचारें काम जल्दबाजी में तौ बिगरत अक्सर।
भावुकता नइँ ठीक, सदा देबै बिबेक सम्मत उत्तर।।३२।।

लेकिन हर! अब सावधान रव चायें जब धोको संभव।
बुरो कौल है तुमें देव! मानो निज पतनी को भी कव।।
खाबौ-पीबौ उतै बन्द कर दो स्वामी है जा बिन्ती।
नइँ तौ का सें का हो जाबै, ईमें ना संका रत्ती।।३३।।

हाय-हाय कर रोई हेमा उर ऊकी हिलकी बँध गइ।
दुखकातर रोउत भइ हेमा पति की छाती सें टिक गइ।।
पति हरदौल देव नें फेरौ हाँत पीठ पै हेमा के।
जैसें-तैसें दई दिलासा, अँसुआ पौंछे हेमा के।।३४।।

बोले, हेमा! पान खबाओ, हरि की इच्छा सो हुइऐ।
अपनो सइ कतरब्ब करत हम, आगम भी नींको हुइऐ।।
उठ हेमा नें जल पिबाव, ल्या धरौ पान मचला सामूँ।
खबा उनें बीड़ा खुद खाओ, बैठी सट आमूँ-सामूँ।।३५।।

लओ देव नें हाँत प्रिया हेमा को अपने हाँतन में।
इकटक मुख निहार पतनी को बोले बे एकइ छिन में।।
हमें बूझनें बात एक हेमा! साँची-साँची कइओ।
निरभै हो अन्तरमन की सब नीसंकोच बात करिओ।३६।।

कछु बिचित्र सी मुस्क्या कें बोली जिन बूझौ ग्यात हमें।
'है हर को चरित्र कैसों' बस जई बूझनें बात तुमें।।
हँसी खिलखिला कें हेमा, हरदौल बात सुनकें रै गए।
मौं फीको भव और सकपकाने से हेमा सें कै रए।।३७।।

हाँ-हाँ हेमा! तुमनें तौ जा बात छीन लइ है मौं की।
जइ बूझैं चाँउत ते, तुम तौ जानकार हो मन लौं की।।
जानइँ गइँ तौ उत्तर भी दो, कइओ जिन लत्ता लिपड़ी।
कहौ बेहिचक साफ-साफ है परख नजर तुम पै तँगड़ी।।३८।।

बोली हेमा देव! धरा पै है पति–पतनी को जोड़ा।
पसु–पंछी उर सबइ प्रानियन में नर–मादी को जोड़ा।।
सबइ देस–पिरदेसन में हैं, जा तो सबरेई जानत।
है भारत में उर बिसेसकर हिन्दू नर–नारी मानत।।३६।।

सब मानत सम्बन्ध सरीरी आबस्यकता प्राकिरतिक।
पै हिन्दू नर–नारी को सम्बन्ध रैत जनमान्तर तक।।
लोग कहत आतमा अजनमा पै नइँ हम ईऐ मानत।
जीव अंस ईसुर को तो हम जनमउ ईसुर सें मानत।।४०।।

बई जनम के समय देव! सबई जोड़ा तइयार भये।
'हर' उर 'हेमा' की जोड़ी भी तबइँ बनी का भूल गये!!
जब तक आबागमन चक्र में फँसे और पैदा हुइऐं।
चाँयँ जौंन जौंनीं जनमें हम पति–पतनी जोड़ा हुइऐं।।४१।।

जोड़ी जइ रैहै अपनी जा रिसि–मुनियन नें सिध्ध करी।
है अकाट सच और देव! हिन्दूअन की है धरम धुरी।।
हर इक इस्त्री–पुरुस चरित हर जू को समजै, नइँ संभव।
चरित अपुन को संकन के घेरा में आबै नइँ संभव।।४२।।

देव चरित पै संका! मानो थूँक रऔ बौ सूरज पै।
थूँक लौट कें गिरहै आकें बइ, संकालू के मुख पै।।
जियै न हो बिसवास थूँक कें देखै अनुभव कर लेबै।
आँच साँच कों कहाँ कोउ कित्तेऊ कुकरम कर लेबै।।४३।।

साँची तौ जा है, हम दुनिया देखत अपँई आँखन सें।
और सबइ कों नापत हैं हम अपनेई पैमानन सें।।
चम्पावती राजरानी को चरित आँक रए जो भी जन।
काए न आँकत चरित सुयम को बे अन्यायी पापी जन।।४४।।

हम जैसे हैं हमें तैसियइ देत दिखाई दुनिया भर।
जैसें पान्डू रोगी कों पीरी दिखात ई दुनिया भर।
जेठ मास को तपत लाल सूरज सरसों को फूल लगै।
पीरौ होत न सूरज तोऊ ऊकौ पीरौ रूप लगै।।४५।।

काउ चरित पै संका कर मानो छिपायँ चाँउत अपनो।
असफल अभिनै कर रव मानो देख रओ अटपट सपनो।।
पै हर! फिर सौगन्ध तुमें, तुम सावधान हरदम रइओ।
अपइँ सुरच्छा के काजें तुम चौकन्ना हर पल रइओ।।४६।।

कैत-कैत हेमा नें हर की छाती पै सिर टेक दओ।
लगे पीठ सैलाउ्न देव लख प्रैंम हर्स अतिरेक भओ।।
पति के प्रति बिस्वास अटल, बन्धन अटूट आस्था मन में।
देख भये गदगद भर लव अरधाँगिनि कों निज बाँहन में।।४७।।

धन्न-धन्न भारत की नारी प्रैंम-सील-लज्जा मूरत।
नारि सक्ति सें पुरुस सुरच्छा, है तोऊ तिरिया आरत।।
नारी को सतीत्व है भारत की सच्ची सक्ती गरिमा।
जीके बल पौरुस बलसाली सुर गाबैं नारी महिमा।।४८।।

भरें बाँह में सोच रहे हरदौल देव, साँकर खटकी।
हेमा नें उठ द्वारो खोलो, ललन देख ढीलत मुस्की।।
धाय लयें हरदौल-हिमांचलि नन्दन कों भीतर आई।
पूत बिजय कों हेमा नें लव ओली में मन हरसाई।।४६।।

सजे-धजे लल्ला कों लै मुख चूमत हेमा प्रैंम मगन।
दैकें ललै बन्द कर द्वारो करो धाय नें तुरत गमन।।
कुँअर बिजय कों लैकें हेमा पतीदेव के ढिंग ल्याई।
नौंनी उर अलोल सुत छबि लख मन में सुख तरंग आई।।५०।।

तुरतइँ लव हरदौल देव नें उर सुत को मुख चूम लओ।
झुला उऐ बाँहन में सैसव को आनँद भरपूर लओ।।
नन्ने-नन्ने अरुन चलाबै हाँत-पाँव उनकी गोदी।
साल भरे को लल्ला खेलै अपँए पिता हर की गोदी।।५१।।

कमल पाँखुरी से अरुनाने करतल हर जू चूम रहे।
सुघर नैंन, तन सुघर, सलौनो प्रानी दोऊ घूर रहे।।
लम्बी सुघर नाक, ओंठन कों छू अँगुरी सें प्यार करें।
किलकै सिसु गोदी में, अम्मा-बापू भौत दुलार करें।।५२।।

कभऊँ अम्मा कभऊँ बापू बेर-बेर गोदी लेबैं।
कभऊँ गालन गाल मिलाबैं कभउँ नेव पुच्ची लेबैं।।
बाँहन को झूला झुलायँ, तौ कभउँ बक्छ सें चिपकाबैं।
हेमा उर हरदौल अपँए नन्हें सुत सिसु कों दुलराबैं।।५३।।

करें कल्पना, अपँव लाल भारी भरकम जोधा हुइऐ।
कोउ न सामूँ टिकै बीर, ई ऐसो बुन्देला हुइऐ।।
बोली हेमा, अपँए पिताश्री उर बब्बा जैसो हुइऐ।
चरितवान, न्यायी, पिरजापालक राजा तुम सो हुइऐ।।५४।।

लगे निहारन मौं नीचो कर, बिजय नाक पकरी हर की।
लगो दोउ हाँतन हँस खेंचन, देख कलाबाजी सुत की।।
हँसे खिलखिला कें दोऊ जन, हँस-हँस भईं औरउ बातें।
सिसु कारन भूले बे संसारी दुख, घातें - प्रतिघातें।।५५।।

❋ दोहा ❋

शिशु किलकारी हो जहाँ, बरसत मोद अपार।
जी घर-आँगन बालपन, उतइँ सुखद संसार।।३।।
साध्वी नारी जाँ बसै, सो थल तीरथ मान।
पूजनीय नारी सती, देबी-देव समान।।४।।
नारी के अपमान सें, सुख-बैभव नस जात।
पै कुल्टा उर करकसा, सहज सान्ति सुख खात।।५।।

—●—

सर्ग : पन्द्रा

नारी सत्व रक्छा

❋ दोहा ❋

जहाँगीर के बाद भव साहजहाँ सुल्तान।
जहाँगीर की दोसती जाय बसी समसान।।१।।
साहजहाँ नें बीरसिंग सें ठानो संग्राम।
तीन बेर हारौ मगर ऊनें लव न बिराम।।२।।
जित्ती गहरी दोसती होत उतेकइ बैर।
अती होत सबकी बुरी, कितउँ दिखात न खैर।।३।।

❋ छन्द ❋

बीरसिंग्घ की मिर्तु बाद बुन्देलखण्ड भर के सासक।
भए जुझारसिंग जू बुन्देला ओरछेस पिरजा पालक।।
क़छू समय बीतें जुझार उर साहजहाँ में खटक गई।
अब तौ साहजहाँ कों ईसें भौतइँ भारी अखर भई।।१।।

ठानी ठान जुध्ध करबे की औरँगजेबै बुलवाओ।
उऐ ढिंगा बैठार, उतै का कैसें करनें समजाओ।।
सैना सँग हतयार और बारूद आदि दै भिजवाओ।
उऐ बना कें सैंनानायक तुरत ओरछै पौंचाओ।।२।।

भव चौथो संग्राम भयंकर बढ़ कें सब संग्रामन सें।
ऐरच के मैंदान बेतवा तट पै भव बुन्देलन सें।।
परमबीर हरदौल और चम्पतजू नें संग्राम करो।
भओ घोरतम जुध्ध, आव जो इनके आँगूँ सोइ मरो।।३।।

हारो तो औरंगजेब भागो अपने मौं की खाई।
जाय आगरा साहजहाँ कों भई दुरगती बतलाई।।
सायजहाँ को मौं सूखो तो करी गुप्त बैठक ऊनें।
मन की पीरा कह सुनाइ, आगम आसंका कइ ऊनें।।४।।

मुगल राज्य जासूस प्रमुख नें अब उठाव बीरा जाको।
गहरो मित्र जुझारसिंग्घ को, नाव हिदायत खाँ बाको।।
बिस तरु है बुन्देखखण्ड, निरमूल जल्दियइ करनें है।
जीके लानें हमें ओरछा बुन्देलन सें लड़नें है।५।।

जुध्ध पाँचमो अस्त्र-सस्त्र हतयारन सें न लड़ो जैहै।
नीत औसनस, कूटनीत सें सबइ बिनास करो जैहै।।
तै करकें अभियान-जोजना खान ओरछा आय गओ।
लव जुझार नें भर बाँहन में, उऐ भौत सनमान दओ।।६।।

अन्तरंग रव मीत आज बौ बैरी बनकें आओ तो।
समज न पाये ते जुझार जू का सौगातें ल्याओ तो।।
सायजहाँ की भौतइँ निन्दा करी हिदायत खाँ खलनें।
फिर सें नए सम्बन्ध बनाबो तै कर लव उन दोउन नें।।७।।

ऊनें जउ बताइ समजौता को अधिकार हिदायत पै।
मीठी बानी बोल-बोल बैठो जुझारसिंग की मति पै।।
राज्य ओरछा और आगरा के उफनत आक्रोसन कों।
दै-दै सीरे छींटा कर लव सान्त हिदायत नें सबकों।।८।।

भौत सफाई सें सक्ती के टोर-फोर में बौ लग गव।
छाँट-छाँट अच्छे बीरन कों पिरलोभन दैबे लग गव।।
सरब प्रथम बुन्देलखण्ड के सुतन्त्रता के आराधक।
महावीर सेनानी चम्पतराय देसभक्ती साधक।।९।।

इनकों मुगलन को दरबारी मनसबदार बना दव गव।
और कोंच जागीरदार चम्पत जू कों बनवा दव गव।।
अब तौ चम्पत गये आगरा मुगल हबेली रहन लगे।
सक्ती कम भइ बुन्देलन की, हाँ में हाँ बे करन लगे।।१०।।

अभऊँ बुन्देली सक्ती मुगलन कों भारी पर रइती।
खेली चाल हिदायत नें फिर रात नींद नइँ आ रइती।।
भारत साह, पहाड़सिंग्घ नृप चंदेरी व तालबैहट।
उर नरसिंग्घ दास घामौनी, बुन्देला जोधा उद्भट।।११।।

चार हजारी मंसबदारी दिबवाई हिदातखाँ नें।
सबै पौंचवा दव दिल्ली, सक्ती कों बटवा दव बानें।।
साहजहाँ उर नृप जुझार के फिर कराए सम्बन्ध मधुर।
अच्छौ बन गव दोऊ लँग को, अब हिदायत जासूस जबर।।१२।।

भर-भर मौं सब करैं बड़ाई हिदायत खाँ की दोऊ लँग।
अब जुझार को बनो हिदायत प्रान नाइँ आबस्यक अँग।।
बजै ओरछा और आगरा में अब तौ बइ की तूती।
लख बुन्देलखण्ड की इत्ती सई बिवस्था मजबूती।।१३।।

लिखी हिदायत खाँ के लानें साहजहाँ नरपति पाती।
दई हिदायत के बेटा महमूदै बौ पाती घाती।।
बोलो सायजहाँ, चिट्ठी दिइयो तुम अपने अब्बा कों।
और काउऐ छुअन न दिइयो गुप्त हमाई चिठिया कों।।१४।।

गव महमूद ओरछा, चिठिया जा अब्बाय गहाय दई।
बोलो, पाती भौत गुप्त है, नृप नें खुद लिख मोय दई।।
बोलो, ओ अब्बा हजूर! हैं सहंसाह चिन्तित भारी।
काँटो इक बुन्देलन में जीकौ भै उनें भौत भारी।।१५।।

काँटो है बो कौन जियै काढ़ें चाँउँत हैं बे अब्बा!
चुप्प रहो, आराम करो, थक गए हूऔ बोले अब्बा।।
सबइ पतो चल जैहै बेटा! बखत आउन दो धीर धरो।
काँटो पक गव कढ़ें चाँउत अब कोठी जा आराम करो।।१६।।

काम सियासत के करबे में देर लगत महमूद लला।
हार-जीत को होत न मतलब, काम करत सब कूट कला।।
मतलब पूरो होत आखिरी में बेटा परनाम समय।
धीरज भौत जरूरी ईमें, आई रव बस नेक समय।।१७।।

पौंचा कें सुत कों कोठी पै, गव जुझार जू सें मिलबे।
कर भोजन-इसनान चलो महमूद ओरछा में फिरबे।।
कोठी सें बाहर आओ उर फूलबाग में आय गओ।
देख बाग की सुन्दरता महमूद मुगल ललच्याय गओ।।१८।।

घुसो बाग में चारउ लँग देखी हरियाली हरसानो।
दूबा फैली, हरे-हरे कालीन बिछे ऊमें मानो।।
घुसतइ खन स्वागत में मानो दरबाजे जा लँग बा लँग।
खिलीं गुलाबन की पाँतें, हैं भाँत-भाँत के मोहक रँग।।१६।।

बने घूमबे कों पथ भौतइँ सुघर-साफ-सुतरे भीतर।
अगल-बगल हैं कुंद आदि झाड़िन की पातें अति सुन्दर।।
कउँ कदली बन, कउँ कदम्ब बन, कउँ चन्दन बन मँहकत है।
कहूँ नारियल तौ खजूर कउँ, कहूँ चीड़ तरु चहकत है।।२०।।

क्रित्रिम प्रपात, झील, सागर, पुल और बाल क्रीड़ा इस्थल।
भौत बिबस्थित सजे-धजे हैं अलग-अलग सब बढ़िया थल।।
बनीं औसधीं बनस्पतिन कीं एक लगाँ क्यारीं नौनीं।
हर क्यारी में नाम पलेटें, अलग-अलग जिनकीं स्रैनीं।।२१।।

ऊँची-ऊँची झाड़ीं बढ़िया हरीं-भरीं बेलन छाईं।
जिनपै रंग बिरंगे फूलन की ररकें अति मन भाईं।।
जगाँ-जगाँ फूली बेलन के द्वारिन की न्यारी सोभा।
लग रइ स्वागत में माला लयँ ठाड़ीं परियन सी आभा।।२२।।

कइयक बेलें लोटें तरुअन के बक्छन पै इतराबैं।
मानो नव दम्पति कों करबे आलिंगन बे उकसाबैं।।
फूल कदम्ब, मौंगरा, बेला उर चम्पा के मँहकें जाँ।
भाँत-भाँत के फूलन कीं क्यारी चारउ लँग लहकें जाँ।।२३।।

जगाँ-जगाँ हैं जहाँ बैठका और साधना के इस्थल।
परम सान्त प्यारो-प्यारो है फूलबाग को हरइक थल।।
निरमल सीतल पौंन सुगन्धित सबके सँग खेलै आकें।
हियै जगाबैं हूक कोइलें और नचें मोरें आकें।।२४।।

पंछी कलरव करें बिटप डारन पै बे सुछंद फुदकें।
छुबा–छुबउअल खेल गिल्हैंरीं खेलें नर–मादी मिलकें।।
ऐसे फूलबाग की सोभा निरख रहो महमूद मियाँ।
भूल गओ अपनो आपा, घूमै ऊमें पागल तरियाँ।।२५।।

चलत–चलत बौ इक गुलाब फूली क्यारी ढिंग पौंच गओ।
ठिटकौ, एक सुन्दरी देखी, सुन्दरता में खोय गओ।।
बोलो देख कि या अल्ला! का ख्वाब देख रए हम कौंनउँ!
मूरत कित्ती सुघर गढ़ रहे हौ ऊपर बाले! आजउँ!!२६।।

चौंकी बेला और देख बोली दुनिया साँचउँ सपनो।
है असार संसार, झूँट है, दो परचै श्रीमन! अपनो।।
को तुम और कहाँ सें आये, काए बाग में तुम आये!
आग्या बिन नइँ पुरुस घुस सकत, बूझ कौन सें घुस आये।।२७।।

स्यात् जानती हो, नबाब साहब हिदाय्त खाँ के सुत हम।
है महमूद नाव उर आजइँ आए आगरा सें चल हम।।
बाग देख भए बाग–बाग पै इकदम बिजली सी चमकी।
बौ मजाकिया लहजा में बोलो दिल धड़को सुन धमकी।।२८।।

साँचउँ तुमसें सुघर और औरत नइँ देखी है हमनें।
हौ काबिल तारीफ अपुन, बाँकी चितबन कों का कहनें।।
तुमऊँ तौ कछु बोलो गोरी! तुम तौ सकते में आ गईं।
हमें देख हौ परेसान सीं, सो का आफत है आ गईं।।२९।।

ना हैरान न परेसान हम, पै इक बात आइ मन में।
ईसुर नें इंसान और हैबान दोउ रच दए सँग में।।
देखे ते इंसान अभैलौं पै हैबान न देखो तो।
ईसुर की भइ क्रपा देख लव, सुनो हतो, नइँ देखो तो।।३०।।

सुन गुस्सा सें लाल भओ मौं, बाँधे ते मूँठा कसकें।
हम हैबान? होस में बोलो, चुप्प भओ इत्ती कहकें।।
तौ का तुमें फरिस्ता कयँ हम, हँसी खिलखिला कर बेला।
फूल चुन रईती, समेट कें चली बीथि बाहर बेला।।३१।।

आओ है महमूद ओरछा में तफरी करबे कछु दिन।
समजत दिल्ली को गुलाम है राज्य ओरछा को, लेकिन।।
इक साधारन इस्त्री के मौं साफ-साफ हैबान सुनी।
सिट्टी-पिट्टी गुम भइ ऊकी और क्रोध में भौंय तनी।।३२।।

कँपै क्रोध में थर-थर बोलौ चिल्ला कें रुक जा लड़की।
भौतइँ बातें करनें तोसें, कीके बल तें आ कड़की!!
तेरी जा औकात, कहै बेहिचक इतै हैबान हमें।
होस ठिकानें कर दैहैं हम, बेहूदो दव ज्वाब हमें।।३३।।

बेला बोली, जो हमनें कइ बुरो लगो है भौत तुमें।
करो फैसला तुमई ईकौ, अपँए कहे पै खेद हमें।।
हो अजीज बेला सें बूझत, 'सो कैसें?' तुम साफ कहो।
आजइँ आये हौ सो जाओ जू कोठी में आज रहो।।३४।।

कोठी में इक सुन्दर सीसा तुरतइँ पौंचाओ जैहै।
सूरत अपँइँ देखिओ बामें तबइँ फैसला हो जैहै।।
अपुन हकीकत में का हैं, ईकौ उत्तर खुदई घोकें।
अट्टहास कर मुख्ख द्वार के पार चली निरभै होकें।।३५।।

'ओ लड़की नापाक!' कहत-चीखत बेला तर दौर परो।
नैंकइँ दौरो तेज झपटबे बौ महमूद धड़ाम गिरो।।
बिंध गव पंजा पाजामा में, गिरो सँमर ना पाओ तो।
कर्रौ चोट खाइती, गिरतन खन चीखो-चिल्लाओ तो।।३६।।

भगे-भगे आये सुन माली, उऐ उठा लै गए बाहर।
कछू सेबकन नें पैंचानो कर दव कोठी के भीतर।।
खबर हिदायत खाँ कों पौंची बे कोठी दौरत आये।
चेतनता आ गइती तौलों जब ऊके बालिद आये।।३७।।

हाँत मूँड़ पै फेरौ बोले, बेटा! जौ का भव कैसें ?
बोलो, घूमन फूलबाग गए, कछू खास नइँ भव बैसें।।
उतै साँप मिलगव तो कारो, अब्बा! ऊनें पछया लव।
उऐ देख हम भगे, गिरे पै बौ डरकें जानें काँ गव।।३८।।

फिर बेटा पै हाँत फेर बोलो, सबको अल्ला मालिक।
हैं जंगल बुन्देलखण्ड में साँप-साँपिनी जाँ घातक।।
सावधान रइओ बेटा! हर जगाँ इतै खतरइ खतरा।
इतै संस्कृति और धरम सें मानो कछु जादइँ खतरा।।३६।।

थके हुऔ आराम करो, महमूद पलँग पै लोट गओ।
सेबक द्वारें गये कक्छ के, आँख मींच बौ सोय गओ।।
तब पाकें एकान्त हिदायत खाँ ने नृप-संदेस पढ़ो।
सायजहाँ नें लिखो जो कछू मान उऐ आदेस पढ़ो।।४०।।

बीर हिदायत खाँ! साँचउँ तुमसें प्रसन्न हैं भौतइँ हम।
काम चतुरता सें सब कर रए नगर ओरछा में रह तुम।।
बीच हिन्द में राज ओरछा ठाड़ो अपँव बक्छ तानें।
सौ सालें भइँ मुगल बाल बाँकों न कर सके सच मानें।।४१।।

बुरो असर उत्तर-दक्खिन के छेत्रन पै पर रव ईकौ।
फौजन के जरियै न मिटानें है अब बल पौरुस ईकौ।।
काये सें कै सौ सालन सें फौजें लै ऊसें लड़ रए।
रहो नतीजा सिफर, मुगल अब लड़कें तौ न जीत सक रए।।४२।।

पै बुन्देलखण्ड की सत्यानासी अबसइँ करनें है।
सौंपो गव ई काम तुमें, उतई रह पूरौ करनें है।।
बौ हालात करो पैदा जो गाँव-महल धूँ-धँ धुँधकें।
रहै न कोउ काउको ऐसो हाल करो, घर-घर घुसकें।।४३।।

खुली छूट है तुमें चाँयँ जो करो और चाँयें जैसें।
हमें ओरछा की बरबादी चइये बन जाये तैसें।।
तुमसें बढ़कें कोउ इतै आला दिमाक हम पै नइयाँ।
तइसें नगर ओरछा जादाँ दिनन तुमें रुकनें नइयाँ।।४४।।

काम भौत जल्दी निपटाकें लौट हिदायत खाँ आओ।
खुदा कामयाबी देबै, खुस खबरी दैबे आ जाओ।।
लिख कें पाती 'साहजहाँ' हस्ताक्छर कर दए दे नृप नें।
कैउ बेर पढ़ धरो जेब में नृप को पत्र हिदायत नें।।४५।।

झटका सें निकरो बाहर उर घोड़ा पै असवार भओ।
चुपके सें बौ सिध्धन के टीला की ओर सिधार गओ।।
टीले ढिंगाँ पौंच नीचेंईं घोड़ा अपनो बाँध दओ।
ऊपर जा साधू बाबा कों कर प्रनाम बो बैठ गओ।।४६।।

धीरें-धीरें भीड़ छटी, रह गये अकेले जब बाबा।
करो रुआँसो बोल हिदायत नें कइ, का हो अब बाबा!!
तुम तौ बन में बैठे, अब का हमऊँ बाबा बन जाबैं।
सायजहाँ की पाती आई बोलो जू का भग जाबैं!!४७।।

भइ जुझार सें सुलह उनें ईपै नइँयाँ धीरज मन में।
हैं भौतइँ बेचैन उतै बे, आग लगी मानो तन में।।
बाबा नें कइ नबाब साहब! धीर धरें बैठे तुमईं।
हम तौ सायजहँउँ सें जादाँ ब्याकुल हैं जानैं हमईं।।४८।।

जब तक हैं हरदौल राख धूनी की हम छानत रैंहैं।
आयँ सैकरन सायजहाँ पै रौम न टेढ़ो कर पैंहैं।।
बोलो खान कि जई बात को मोय खुलासा करनें है।
कित्तो हो गव काम झट कहो, सब जल्दियइ निपटनें है।।४९।।

बाबा नें कइ, साहब! राधा नें तौ बढ़िया चोट करी।
बीज बओ संका को, जम रव, बौ जादूगरनी निकरी।।
पै हरदौल देव के कारन बौ संका दब कैं रै गइ।
हमें हबा दैनें है ऊमें जो अगनी ठन्डी हो रइ।।५०।।

'चरितहीन हरदौल देव हैं', बेर-बेर सब लोग कहो।
रानी को संदिग्ध चरित है, जगाँ-जगाँ कव एक रहो।।
जौइ करो पिरयोग और फल देखो चौबिस घंटा में।
फल न मिलै 'जगमन' जिन कइओ, अबसइँ आहे अंटा में।।५१।।

बैठो उकरूँ तुरत अकड़ कें, बाबा कों आ रोस गओ।
अपनो नाम बताउत भव बौ मौनी बाबा बोल गओ।।
जो बैठे ते सबइ हँस परे तुरत हिदायत खाँ बोलो।
ई कैसो पक्को मौंनी जो लगत एक झटका बोलो।।५२।।

कोउ गैर होतो तौ अभईं पोल तुमाई खुल जाती।
तुम चौबिस घंटा की कै रए एकउ रात न कट पाती।।
तुमें ओरछा सासन कब सें ढूँड़ रओ तुम बँध जाते।
हन्टर परते और कैद में डरे-डरे तुम सड़ जाते।।५३।।

एक बेर बे हँसे और संकलप करो मिलकें उननें।
भोरइ सें बस 'चरितहीन हरदौल' सिगयँ चल-फिर कहनें।।
सब सड़यंत्री बैरी इकमत हो भौतइँ पिरसन्न भये।
भोरइ की कल्पना करत मन सबइ अपँए घर लौट गये।।५४।।

इत चौरागढ़-दुर्ग देवगढ़ जीत आए भइया दोऊ।
आज बिजय उल्लास महल में रए मनाय भइया दोऊ।।
पौंचे जब हरदौल महल में, नृप जुझारसिंग नें बढ़कें।
बाँहन में भर लव हरदौलै, बाले अति प्रसन्न हँस कें।।५५।।

जौलों है लछमन हमाव संगै तौलों चिन्ता नइयाँ।
दुनिया की कौनउँ सक्ती सें भै या उरझन्टा नइयाँ।।
जैकारो हरदौल बीर को जुझार जू नें करवाओ।
प्रैंम गाढ़ौ दोउ भइयन को नैंनन द्वार छलक आओ।।५६।।

भइया के चरनन पै माथो अनुज देव नें टेक दओ।
झुक जुझार नें अपँए अनुज कों छाती सें चिपकाय लओ।।
ईके बाद बैठ भोजन दोऊ भइयन नें संग करो।
सबइ जनन नें सँग सुस्वाद भोजन मिलकें सानंद करो।५७।।

चलो गीत-संगीत कारक्रम तामें आधी रात गई।
राजमहल में बिजै पर्ब पै खुसियन की बरसात भई।।
अपने-अपने सैन कक्छ में सयन हेतु सब लोग गये।
पै हरदौल बिवस्था कल की देखन बाहर पौंच गये।।५८।।

नगर ओरछा में कल जलसा जुध्ध जीत को मननें है।
ऊकी तइयारी देखन गए, कहाँ और का करनें है!!
भोरइ की प्यारी सीतल बेला तन-मन आनन्द भरै।
खिलकें कलीं फूल भइँ उपबन में बिहार आ पौंन करै।।५९।।

पा सुगन्ध आ गये भ्रमर मकरन्द पान करबे उपबन।
चूमैं सुमनन के कपोल बरबस, होकें मदान्ध तन-मन।।
हती जरूरत आज भौत फूलन की उतसव के काजें।
सो माली परिबार आ गये फूलन कों लैबे काजें।।६०।।

अपँए पिता की सैजोगी बन फूल टोर रइती बेला।
टोरत-टोरत गइ अँगाइँ पै एकायक चीखी बेला।।
कर तीखो सुर बूझत बेला, झाड़ी के पिछाउँ को है ?
हम तुमाए आसिक मँजनू हैं, तुमें चाउँनें जो सो है।।६१।।

जब सें देखौ तुमें हमाई तौ अब नींद हराम भई।
इन्तजार में रात निकर गइ मगर घड़ी सुभ आय गई।।
तुमें बाग में घुसतन देखौ, रई खुसी की सीमा ना।
हाजिर है तुमाए कदमन पै दिल हमाव 'ना' कहना ना।।६२।।

सुन बातें महमूद मियाँ की अति गंभीर भई बेला।।
बोली कछु करबे के पैलें सोचें चइये रे छैला!!
दइ बिचार करबे की सक्ती मानव कों परमेसुर नें।
सुनै आतमा की आबाजैं, कान दये दो ईसुर नें।।६३।।

दई समजबे कों बुध्धी, आबाज आतमा की सुनते।
अच्छौ होतो जो दिमाक सें सोच बात कौनउँ करते।।
सुनते जो आबाजें, उत्तर तुमें पक्छ में मिल जातो।
तब अगाँइँ बढ़ते कछु करबे, तौ कौनउँ फल मिल पातो।।६४।।

बुध्धि-बिबेक-आतमा की आबाजन सें न तुमें मतलब।
करो नियंत्रन निज पसुता पै करो मनुस्सन के करतब।।
आए जितै सें उतइँ लौट जव जो तुम हित चाँओ अपनो।
बुन्देलन की भूमि इतै जिन देखो कुकरम को सपनो।।६५।।

तिरिया हरन, नीत मुगलन की और धरम को परिबरतन।
नइँ चल है बुन्देलखण्ड में, नइँ मानै, मानो दुरदिन।।
बोलो तब महमूद कि मन में ठान लई सो ठान लई।
कान खोल कें सुनो, तोय बस निज महबूबा मान लई।।६६।।

बीबी तोय बना कें रैहैं हर हालत में हम अपनी।
और ढिंगा पौंचो बेला के बोलो, कै दो 'हाँ' सजनी।।
बेला बोली, अच्छौ होबै अभउँ नियंत्रन जो कर लो।
मानव हौ, अच्छौ रय तौबा दानवता सें जो कर लो।।६७।।

बोलो, बे कायर-कपूत जो संकलपन सें कतराबैं।
अल्लउ में नइँ ताकत जो संकलप हमाव बदल पाबैं।।
कइ सो कइ हम हैं नबाब सुत, महबूबा! जिन इतराओ।
अपनी जोड़ी बढ़िया रै है, इन बाँहन में आ जाओ।।६८।।

बाँहन में समैटबे कों महमूद बढ़ो आँगूँ जैसइँ।
भगी भौत तेजी सें बेला, टकराई भागी तैसइँ।।
आ रए ते हरदौल, साद लव तो बेला कों गिरतन सें।
चौंकी, चीखी, बोली, भइया! लाज बचालो दुसमन सें।।६९।।

'छोड़ो ई बीबी हमाइ', महमूद देव सें जा बोलो।
बोले देव कि नसा रात को नइँ उतरौ है का, बोलो??
या फिर मारी गइ अक्कल, अच्छो रय तुम प्रस्तान करो।
कुकरम की माफी माँगो, बेला के पाँवन आन परो।।७०।।

अट्टहास कर कहन लगो, एजी! को तुम रोकन बाले।
हटो इतै सें इस्क-आसिकी में आड़े आउन बाले।।
तुम न भगे तौ सबसें पैलें साफ तुमइँ कों कर दैहैं।
काढ़ म्यान सें खडग दिखा बोलो कि कलम सिर कर दैहैं।।७१।।

मियाँ जोस पै काबू राखो, ज्वानी मिली न जुलमन कों।
जिन फैलाओ इतै गन्दगी, लो सुधार आचरनन कों।।
भलमनसाहत सीखौ उर चुपचाप भाग जव हिन्सें तुम।
जब तुमाव ठंडो दिमाक हूए तब बातें कर हैं हम।।७२।।

सदाचार की बातन पै ऊनें तनकउँ न बिचार करो।
भौत तेज हरदौल बीर पै अपइँ खडग सें बार करो।।
बार बचो, हरदौल हट गये, बेला इकदम चीख परी।
माली सुन हो गये इखट्टे, बीर देव नें बात करी।।७३।।

मियाँ! आखिरी मौंका दै रए अभऊँ तुम भग जव हिन्सें।
ठाड़े बेला के बापू तुम माँफी माँगो झुक उन्सें।।
अब महमूद मींस कें दत्ती बोलो, कायर जिन समझो।
बीर हिदायत के हम बेटा कै दइ हमसें जिन उरझो।।७४।।

फिर अपनी तरवार चलाई बीर देव जू के ऊपर।
बदल पैंतरा कुँअर देव नें बाँहन में लव ऊऐ भर।।
लइ छुड़ाय तरवार और महमूद मियाँ पै बार करो।
सीस कटो धड़ सें, धड़ाम बौ धरती पै जा दूर गिरो।।७५।।

फड़फड़ात धड़ डरो धरा पै दुराचरन को फल पाओ।
गये महल हरदौल देव, बेला सें कहकें, घर जाओ।।
बेला अपने घरै गई नारी रक्छा गुन गाउत भइ।
धन्न-धन्न भइया! तुमाए कारन हमाइ इज्जत बच गइ।।७६।।

धन्न बुँदेला बीर देव हरदौल सत्व रक्छाकारी।
धन्न पिता-माता तुमाए, जै बोल उठी पिरजा सारी।।
पल झपकत जा खबर फैल गइ नगर ओरछा घर-घर में।
सुन जुझार संकट में पर गए, बनी बिगर गइ पल भर में।।७७।।

सुनी हिदायत खाँ नें अपने बेटा की करतूत उतै।
ऊकौ फल भइ मौत, जान दौरो आओ बौ लास जितै।।
दै डिड़कार लास सें लिपड़ो, हाय-हाय जौ हो का गव।
मौंत खेंच कें ल्याइ ओरछा, हाय-हाय कैसें का भव!!७८।।

बेटा की करनी नें बापू कों जिन्दइ में मार दओ।
सारो जस मिल गओ धूर में, हाय-हाय बौ काम भओ।।
पटकै मूड़ हिदायत खाँ बिन मुण्ड रुण्ड पै रो-रोकें।
भव बेहोस लास पै रोउत-रोउत बौ अधीर होकें।।७९।।

तुरत दौर आये जुझार सिंग जितै हिदायत खाँ बिलखै।
मौं पै पानी छिरको, आओ होस, आँख फारें निरखै।।
अँसुआ पौंछे और मित्र कों अपँई छाती चिपकाओ।
धीर बँधाओ जुझारसिंग नें, उऐ भौतई समझाओ।।८०।।

हौनी के अगाइँ अनहौनी कों झेलत है मजबूरी।
ऊपर बाले के अगाँउँ नइँ चलत काउ की बरजोरी।।
अनहौनी नइँ होत कभउँ, हौनी कों कोउ न टार सकत।
काल कहो या हौनी, ईसुर या ईऐ कह सकत बखत।।८१।।

मीत हिदायत खाँ! सुत की अन्तिम किरिया को कार करो।
इऐ ओरछा में दफनाबे को आग्रह सुइकार करो।।
रैत खानदानी दिल्ली में, उतै जरूरी लै जाबौ।
ईपै कही न कछू काउ नें, ठीक न समजो कछु काबौ।।८२।।

दओ हिदायत खाँ नें असवासन जल्दीअइ आबे कों।
रथ में धर सुत लास कूँच भव है बौ दिल्ली जाबे कों।।
जो औरन कों गड्ढ़ा खोदत खुदऊँ जाय गिरत ऊमें।
चेतत बुरौ और को, ऊकौ होत बुरौ ना भ्रम ईमें।।८३।।

❋ दोहा ❋

नियत समै पै नगर में मनो बिजै उल्लास।
पिरजा में उतसाय रव, खल दल रओ उदास।।४।।
नारि सुरक्छा रत जहाँ और होत सनमान।
ऊ प्रदेस, घर, देस को रुक न सकत उत्थान।।५।।
सदाचरन–सतकरम बिन मनुज न पाउत मान।
धरमाचारी नृप बिना देस न बनत महान।।६।।

—•—

सर्ग : सोरा

परीक्छा

✱ दोहा ✱

नाव परीक्छा को सुनत सूखत सबके प्रान।
जो न परीक्छा सें भगत सो मतिधीर–सुजान।।१।।
बिना परीक्छा मनुज को जीवन रत निस्सार।
देत परीक्छा मनुज कों अभिनव ओज निखार।।२।।
जीवन में हर पल–घरी अपँइँ परीक्छा मान।
चतुर–बिबेकी जन सदाँ, राखत ईकौ ध्यान।।३।।
चूकौ बन्दर डार को, तैसइँ पुरुस जुबान।
पाउत न अपँए समाज में लौट बौइ सन्मान।।४।।
बैठे अपने कक्छ में ओरछेस जू आज।
दासी आई नमन कर बोली जै म्हाँराज।।५।।

✱ छन्द ✱

म्हाँराजा बोले, राधा! तैं इतने दिन काँ गायब रइ?
जो न इतै आ पाई बोलो बात भई का कौनउँ नइ!!
जब गए ते सरकार देवगढ़ बिजै करन बस इनइँ दिनन।
हमनें चित्रकूट की जात्रा कर लइ हो आओ तौ मन।।१।।
बात अँगाइँ न बढ़ पाई प्रतिहारी आकें करत नमन।
बोली, रानी हीरादेवी को संदेसा आइ कहन।।
पौंचाओ सरकार बुलउआ उतै बाट हेरैं सबरे।
–हाँ–हाँ आ गइ याद, निमंत्रन है बैठे हूऐं सबरे।।२।।

गइ प्रतिहारी, राधा बोली, संग हमउँ कों चलनें है।
चलो चलें राधा! कह बोले, देर न नेंकउँ करनें है।।
द्वारें ठाड़े रथ पै बैठे उर हीरा घर पौंच गये।
अगवानी करबे पहाड़सिंग औ' प्रतीत जू आय गये।।३।।

भीतर लै गए पाँव पखारे सादर भोजन करवाओ।
भोजन कर सबरे बैठक में आए पान बीरा खाओ।।
बातें भईं पहाड़सिंग बोले, कइयक बाबन कों देखो।
पै आनँद स्वामी जो आये, उनसो ना अब लों देखो।।४।।

साक्छात परमेसुर मानो, ना सोउत ना खात-पियत।
बे तौ हरदम रत समाधि में, दरस करें सब पाप कटत।।
काँ ठहरे, कब मिलत, कभै हम करें जाय उनके दरसन?
-ठैरे हैं बेतवा किनारें, करैं दरस होबै जब मन।।५।।

म्हाँराजा बोले कि काए ना चलें अभईं, सबकों फुरसत।
-जैसी मरजी महाराज! कह कें पहाड़ कनखियन हँसत।।
तुरतइँ आनँद स्वामी के दरसन कों सबई निकर परे।
सिध्धन के टीला जा पौंचे सिरधा और उछाव भरे।।६।।

ओरछेस के पौंचत खन हट गई भीड़ जो हती उतै।
गए जुझारसिंग कुटिया में स्वामी की आसन हती जितै।।
कर प्रनाम आसन जा बैठे, देखो आनँद स्वामी नें।
दई अभय मुद्रा में आसिस, नकली अन्तरजामी नें।।७।।

मूँठा बन्द हाँत दोऊ स्वामी नें उठा दये ऊपर।
खोल दये मूँठा म्हाँराजा के हाँतन पै नीचें कर।।
ताजे चार गुलाब फूल जू ओरछेस कों भेंट करे।
लगा लये माथे सें नृप नें जौं बाबा नें हाँत धरे।।८।।

चमतकार लख भए प्रसन्न सिरधा-बिसवास जगो मन में।
सूँघत खन मन भओ तरंगित अजब गन्ध ब्यापी तन में।।
एक अनौखी मस्ती सी नृप के दिमाक पै छाय गई।
सड़यंत्री बाबा नें मानो भौत सफलता पाय लई।।६।।

स्वामी जू नें करो इसारो गये सबइ कुटिया बाहर।
महाराज भर बैठे रै गए स्वामी सँग कुटिया भीतर।।
आनँद स्वामी गए समाधि में दोउ बन्द करकें आँखें।
ओरछेस कर जोरें बैठे सिरधा सें बाबै देखें।।१०।।

काफी देर बाद स्वामी नें जब समाधि खोली अपनी।
बोले राजन कीर्तिवान रैहौ, 'पै'....... कह डारी झपनी।।
सास्टांग हो गए जुझारसिंग और करी उनसें बिनती।
'पै' कैकें चुप काए भये तुममें अपार भक्ती-सक्ती।।११।।

तीन काल के ग्याता हौ तुम, बात छिपाओ कौनउँ जिन।
होत समर्थ सन्त सब तरियाँ साफ कै सकत को तुम बिन।।
हल्के मुस्क्या कें बोले, दुख है, अपनेई की का कयँ!
अपँव खून अपनोई बैरी, सावधान रयँ जू! जाँ रयँ।।१२।।

जइ में है कल्यान अपुन को, नइँ तौ धोका खा जैहौ।
घर के बैरी सें राजन्! तुम कर कैसें रक्छा पैहौ!!
मन भबिस्य के भै सें कँप गव बोले अति आरत होकें।
स्वामी! रक्छा करो बचा लो, निज किरपा सम्बल दैकें।।१३।।

इतनी बात बताई तौ कछु और खुलासा स्वामि! करो।
किरपा हुइऐ सेबक पै, आगम के संकट स्वामि! हरो।।
अपनी सीमा सें हट कें, तप नष्ट कर रये हम अपनो।
पै काये, हम खुद नइँ जानत सोचत हैं हित सब अपनो।।१४।।

है भौतइँ इच्छा तुमाइ तौ सुनो ध्यान दै हम जो कत।
अभिनै करत मूँद कें आँखें मौं ऊपर करकें बोलत।।
भइया है हरदौल तुमाओ बौइ सत्रु मीठौ राजन।
चरितहीन है, ओरछेस जू! देखो भीतर की आँखन।।१५।।

कर संकेत उँगरिया को बोलो, बौ अभै महल में है।
छी-छी, बात न कैबे बाली, देखो जा बौ घर में है।।
मौं बनाय उर हाव-भाव सँग कह बिसवास दिबाय दओ।
कपटी स्वामी नें बैरादारी को बीज जमाय दओ।।१६।।

फिर सें नाटक सो अभिनै कर साँसें खेंचत चुप्प भओ।
प्रानायामी मुद्रा में बैठो समाधि में घुप्प भओ।।
बुरौ हाल भव अब जुझारसिंग को सुन बाबा की बातें।
इठन लगो पूरो तन नृप को, ना समजे ऊकी घातें।।१७।।

कैसी पीरा है तन में बे उऐ समज नइँ पा रएते।
नास भओ सबरे बिबेक को मानो बे अँधरा गएते।।
चरितहीनता कों लैकें मानो बे संग्याहीन भये।
ना बिबेक, ना चिन्तन सक्ती, दुनियादारी भूल गये।।१८।।

अलप समाधी बाद छली बाबा नें ऊपर हाँत करो।
ताजी मेबा की मिठाइ को दौना आ गव हाँत, भरो।।
भौतइँ बढ़िया मँहक मिठाई की दूरइ सें आ रइती।
भेंट करो दौना जुझार कों, पै मिठाइ काँ भा रइती!!१६।।

हो कल्यान तुमाओ राजन्! दै दौना चुप बैठ गये।
देखत-देखत नृप कों स्वामी फिर समाधि में खोय गये।।
कर प्रनाम फिर सें, जुझार जू घर के लानें कूँच भये।
हाँपत से गए रंगमहल में कक्छ द्वार पै ठिटक गये।।२०।।

जाँ हरदौल और चम्पा खिलखिला दोउ जन हँस रएते।
छिपे उतै म्हाँराज सुन रहे, बे का बातें कर रएते!!
हँसी सान्त भइ, तब देवर जू भौजी सें बतया रए ते।
दुनिया में है प्रेंम सत्त, सास्वत उर अमर बता रएते।।२१।।

प्रेंम साधना है उपासना, प्रेंम न कछु माँगत भौजी!
त्याग और सब कछू समरपन, प्रेंम सदा चाँहत भौजी!!
नृप जुझारसिंग झटका सें बा समय कक्छ में घुस आये।
उठ कें स्वागत करो दोउअन नें जैसेंई नृप आये।।२२।।

करकें फिर सें नमन देव हरदौल चले बाहर आये।
गरो सूख रव तौ जुझार को, बे न सोच कछुअउ पाये।।
तन्तू सब बिबेक के उनके चूर-चूर हो गए मानो।
सब बिबेचना उर बिचार के बन्द द्वार हो गए मानो।।२३।।

जातन खन जुझार जू भीतर बैठ पलँग पै धम्म गये।
पानी-पानी बोले मानो हार आज बे जुध्ध गये।।
तुरतइँ पानी दव चम्पा नें, पिओ भूप नें घट-घट कर।
लम्बी खेंची साँस और चुप भए चम्पा-चम्पा कहकर।।२४।।

बोलीं चम्पावती, देवजू! बोलो तौ का बात भई।
अपुन भौत बेचैन और चिन्तित हौ, हो का बात गई।।
मन, मलीन, तबियत खराब सी, बोलो म्हाँराजा का भव?
आँखें फार देख रए हौ, बोलो का कहूँ हादसा भव??२५।।

इकदम बोले ते जुझारसिंग जो बूझैं साँची कइओ।
ना असत्त ना घुमा फिराकें चम्पा हमसें बतयइओ।।
बोलो का सम्बन्ध तुमाओ है हरदौल संग चम्पा।
मुख मलीन लख गई ढिंगा उर बैठी पती संग चम्पा।।२६।।

चम्पा नें पति के माथे पै हाँत धरो उर मुस्क्याई।
बोली, कछु नइयाँ, पै ऐसी बात काए काँ सें आई।।
प्रतिहिंसा की गन्ध प्रस्न में आ रइ सो है का कारन!
तमक जुझारसिंग्घ बैठे, है बात न चम्पा साधारन।।२७।।

जित्तौ बूझैं उत्तर दो, जादाँ न जरूरत कहबे की।
बनो न जादाँ उर न बनाओ, है गुंजास न सुनबे की।।
सीदी-सीदी जा बताव सम्बन्ध तुमाओ का ऊसें।
चम्पा को माथो ठनको, इकदम तनाव आ गव ईसें।।२८।।

देख खुलो लांछन चरित्र पै कसमसाय बोली रानी।
कोउ और कातो, हम काते अधम नीचता-मनमानी।।
पै सुनकें मौं सें तुमाए, भइ अन्तस में पीरा भारी।
फिरउँ प्रस्न को उत्तर सुन लो असलीयत है जा सारी।।२९।।

है हरदौल और चम्पा को प्रान और तन को नातो।
हम काया बौ प्रान हमारौ, है जोई साँचो नातो।।
फिर हम को हैं, उत्तर दो ? बोले जुझारसिंग भन्नाकें।
सुनो देव! बोली चम्पा, उत्तर सब्दन में समजाकें।।३०।।

अलग अपुन सें करी कल्पना ना कौनउँ अबलों अपनी।
उर न कल्पना करी जा सकत - परम सत्त मानो कथनी।।
अपुन कौन हौ और कौन हम, जा तौ बता न पैहें हम।
इत्तौ ग्यात कि जो हम सो तुम, जो तुम हौ सोई हैं हम।।३१।।

खेंच साँस लम्बी जुझार बोले, न अनरगल बात करो।
चम्पा उर हरदौल, अनैतिक सम्बन्धन की बात करो।।
उतै आगरा इतै ओरछा तक कहानिया जा चल रइ।
सत्त-सत्त बोलो चम्पा दुनिया ऐसो कैसें कह रइ।।३२।।

धर कानन पै हाँत 'देव' कहकें सुन चम्पा चिल्लाई।
बोले तब जुझार जू, आनँद स्वामी सें पुस्टी पाई।।
साँची कों कैसें नकार दें, हर जिभ्या पै बात जई।
बस्स तुमाये दुस्चरित्र की चरचा घर-घर पौंच गई।।३३।।

हो आबेसित चम्पा तड़पी और चीख बोली उनसें।
सरम न आई, ग्लानि नइँ भई, सुन रए जो इतने दिन सें।।
अबलो तौ ई दुसचरिता कों कुत्तन सें चिथवा देते।
राजा उर पिरजा दोउन के मन की सब करवा लेते।।३४।।

चरितहीन जब मान चुके सब तौ फिर है देरी कैसी!
दो कठोरतम डंड जातना, पिरजा की मरजी जैसी।।
अपने आधे सड़े-गले तन सें नातो तुरतइँ टोरो।
अब न बेदना और सहो, घट भरो पाप को झट फोरो।।३५।।

चम्पा! जो तुम सच्चरित्र हौ उर हरदौल न दोसी है।
तुमें परीक्छा दैनें परहै, बोलो का मन सोची है।।
बोलीं, अपँए चरित पै कछु कयँ तौ बौ सब निस्सार हुऐ।
पै हरदौल साधुता पै कछु सुनबौ नइँ सुइकार हुऐ।।३६।।

एक बेर नइँ, एक जनम नइँ, जनम सैकरन तक राजन!
दैबे कों तइयार परीक्छा, देव साधुता पै जइ खन।।
आगी में पिरबेस करानें, तौ तुरन्त पिरबन्ध करो।
या फिर खौलत तेल करहिया में कूँदें आदेस करो।।३७।।

चम्पा कल भोरईं परीक्छा फूलबाग में हौनें है।
अब बस एकउ बोल और चम्पा नइँ तुमसें कानें है।।
कहकें तुरत जुझार तेज गति कमरा बाहर कूंच भये।
चम्पा चीख धड़ाम गिरी बेहोस भई जौं भूप गये।।३८।।

पतो चलो सड़यंत्रीयन कों सबई भौत प्रसन्न भये।
सायजहाँ के काम आ सके, मानें खुद कों धन्न भये।।
बे सब टीला बाले आनँद स्वामी जू के पास गये।
बोले हँस, स्वामी! बताव आगम हमाव, हम आय गये।।३९।।

–बच्चा! तेरे मन की सोची बात कल्ल पूरी हुइऐ।
सुन कें हँसे खिलखिला कें सब अब तौ अनहौनी हुइऐ।।
असल रूप में दोउ आ गये जगमन और हिदायत खाँ।
साधू भेस त्याग कें दोऊ चले गये जानें अब काँ!!४०।।

बेला ई सब देख तुरन्तइँ फूलबाग दौरी आई।
संध्या कर लौटे हरदौलै मिली महल में घबराई।।
हाँपत भइ बेला बोली, भइया! का कौनउँ बात सुनी!
बे बोले, का भव बेला, हमनें न कछू नइ बात सुनी।।४१।।

भीतर सें बेचैन कैत ओरछा राज उजरें चाँउत।
आग लग चुकी है भइया! अब लपटन में डूबें चाँउत।।
राजपुरुस हो अपुन और साधुता स्वाँग में उरझ रये।
और ओरछा के आगम कों बरबे सें ना बरज रये।।४२।।

भओ कछू आभास हमेंऊँ कछु बिसेस हो साफ कहो।
फिर सोचत, देखे व सुने में अन्तर इतनो काए रहो।।
बोली बौ जगमन खँगार है, साधु सिध्ध टीला बालो।
'आनँद स्वामी' बनो हिदायत खाँ बैरी उदना बालो।।४३।।

स्वाँग बना दिल्ली जाबे को इतइँ ओरछा में दुक रव।
महाराज के मन पै ऊनें साधू बन कब्जा कर लव।।
रानी चम्पा उर तुमाव सम्बन्ध अनैतिक कइ ऊनें।
'तब बिसवास करो खुद देखो महल जाय', भर दइ ऊनें।।४४।।

म्हाँराजा तइसें म्हाँरानी पास इकायक पौंच गये।
अब तौ साधु बाक्क कों राजन ब्रह्मबाक्क सम सोच रये।।
अपुन चले आये उत सें भइ कहा सुनी म्हाँरानी सें।
भौत ताड़ना दई उनें, भइ खुली बात म्हाँरानी सें।।४५।।

कल्ल उनें अपने सतीत्त की कठिन परीक्छा दैनें है।
म्हाँरानी बेहोस डरीं हैं, ना जानें का हौनें है।।
है करतूत सबइ जा भइया! राधा कुटनी की मिलकें।
सत्यानास करें चाँउत जबकैं हर बात आइ खुलकें।।४६।।

सुन कें सन्न रै गये ठाड़े, बोल न कढ़ रव तौ मुख सें।
ढिंगा प्रिया हेमा है ऊनें सहलाओ कंधा कर सें।।
बोली, हर! भोला हर बन ठाड़े, करने परहै कछु तौ।
लम्बी साँस खेंच हर बोले, हेमा! सो बताव अब तौ।।४७।।

कछू समज नइँ आ रइ हेमा! करें तो करें का अब हम।
साल सबासौ सें मुगलन सें लड़ रए हारे कभउँ न हम।।
राज ओरछा कों मिटायबे कों मुगलन नें जुध्ध करो।
भारी सैंना उर जोधन कों बुन्देलन नें पस्त करो।।४८।।

आज रचे सड़यंत्र और ई मंत्रजुध्ध में हम हारे।
ईमैं कारन महाराज हैं, बन्द हो रहे सब द्वारे।।
महाराज के भीरू मन कों संका साँपिन नें डँस लव।
ऊसें अपने बचबे को हेमा! ना कौनउँ ढँग लग रव।।४६।।

ईसें बचबे को उपाय केबल बिनास, परिवार कलह।
सतीश्रेस्ठ पै चरितहीनता को कलंक अत्यन्त असह।।
हा भौजी! कारन हमाए, कारौ तुमाव मौं भव जा रव।
रचे गये सड़यंत्रन कारन सत्त असत्तै कव जा रव।।५०।।

असह बेदना, 'हा भौजी कह' आँखन के बाहर आई।
हेमा सें टिक रोय परे, कह हा माता सम भौजाई।।
हिलकी भर बोले ओ भगवन! ऐसो का अपराध भओ।
ताकी मिल रइ सजा हमें, ई कौन पाप को डन्ड दओ।।५१।।

छमा करो भगवान रामराजा परमेसुर छमा करो।
अँसुअन भींजौ मौं ढाँकत भए बोले, ईसुर छमा करो।।
ई दुख तौ ऐसो है जो ना सहो जात ना जात कहो।
थमीं जात है गति साँसन की, बाँध धीर को टूट रहो।।५२।।

हियो बिदारक दुक्ख देख हेमा नैंनन अँसुवा ढरकें।
कंधा सहलाकें हर के, बोली हेमा साहस करकें।।
'जस-अपजस बिधि हाँत' तोउ पिरजतन जरूरी है अपनो।
जित्ती होय सामरथ अपनो धरम निभानें है उतनो।।५३।।

गइ बेला हरदौल और हेमा डूबे दुख सागर में।
जगत रात बीती, का करते, जा न सके अन्तापुर में।।
भोर भई तब नित्तक्रिया सें निपट तुरत तइयार भये।
सुमिर रामराजा ईसुर कों राजमहल की ओर गये।।५४।।

हेमा उर हरदौल चले जा रएते दुर्ग तरफ लमके।
धरमपाल उर बाला हाँपत भए आ गए सनमुख उनके।।
धरम उदास आय लिपड़ो हरदौल देव जू के तन सें।
लोट गओ बाला पाँवन पै अँसुआ ढरकें नैंनन सें।।५५।।

बोलो धरम, दिमान साब! लच्छिन बिनास के जान परत।
तइसें भइ बिपरीत बुध्धि, म्हाँराजा की अनुमान लगत।।
बे तिरिया चरित्र के चक्कर में फँस घर फूँकें डारत।
बुन्देलन की सबइ सान कों मटिया मैंट करें डारत।।५६।।

उनकी बुध्धी रइ न पुरुस की, हम का कुँअर साब कै दें।
राजपुरुस की तौ बिलकुल नइँ रै गइ, का प्रमान दै दें।।
धरमपाल! तुम धीर धरो, जो हौनी है होकें रैहै।
अनहौनी ना होत कभउँ, असली न कोउ झुटला पैहै।।५७।।

चलो दुर्ग की ओर चलें, देखें उतकी का हालत है!
दुर्ग द्वार जा पौंचे सबई, भीतर घुसबौ बरजित है।।
बंद द्वार घुसबौ बरजित, हरदौल द्वार पै बैठ गये।
सबइ बिरोधी लोग परीक्छा के प्रचार लौलीन भये।।५८।।

जगमन, हीरा उर पहाड़, पिरतीतराय सब फैल गये।
खबर परीक्छा की दैबे बे मानो घर-घर पौंच गये।।
आग ओरछा भर में लग गइ मानो खबर पौंचतन खन।
चारउँ लँग सैंना को पहरो लगो उतै आनन-फानन।।५६।।

सैंनिक पहरा देख लगत भयँ चाँउ्त ओरछा पै हमला।
प्राचीरन-परकोटन पै है सावधान सैंनिक अमला।।
सुभचिन्तक हरदौल देव के लगभग दो हजार आये।
मर मिटबे हरदौल कहे पै, सजकें दुर्ग द्वार आये।।६०।।

पट्ठा एक-एक सें बढ़कें आये बोले देव कहो।
कियै मार कें ढेर करें, तुम अपँव रंच आदेस कहो।।
हँस कें स्वागत करो देव नें, उनें सान्ति संदेस दओ।
समझा-बुझा बीर युबकन कों तुरतइँ बापस भेज दओ।।६१।।

सबइ रामराजा के मन्दिर द्वारें जाकें भए ठाड़े।
खुलो महल को द्वारो बैठे ते द्वारें बे भए ठाड़े।।
जाँयँ दुर्ग के भीतर या नइँ, सोच रहे ते बे मन में।
जई बीच दलबल समेत आये जुझार जू प्रांगन में।।६२।।

बे हरदौलै देखत चौंके, किन्तु देव नें नमन करो।
तबइँ उपेक्छा भाव भूप नें, ऐसो उनसें प्रस्न करो।।
बोलो, अब का है बिचार ? हरदौल देव बोले, भइया!
अच्छौ तौ होतो बिचार करते निरनय पैलें भइया!!६३।।

पै अब आग लगाकें बैठे कुँआ खोदबे कों भइया!
तरस अपुन की बुध्धी पै आउत, का बूझत हौ भइया!!
सोभा देत न राजपुरुस कों बिना बिचारें कछु कहबौ।
और परीक्छा राजघरानिन कों ना उचित लगत करबौ।।६४।।

चम्पा उर हरदौल परीक्छा देबैं और अपुन लेबैं।
बुन्देलन में भओ न ऐसो, खुद इतिहास निरख लेबैं।।
ई सब ढँग उर परम्परा नट और बेड़ियन बाली है।
कीके बहकाबे में आये बिधी कायरन बाली है।।६५।।

एक इसारे में चम्पा-हरदौल तोप दम हो जाते।
पतउ न चलतो हम दोउन को, ओरछेस जू जो काते।।
इत्ते पैउ ओरछा में पत्ता न खिरकतो, पै दुख है।
ऐसो ओछो उर खोटो कर रये काम पै लानत है।।६६।।

जौई कारन है मुगलन के मंत्रजुध्ध में हार गये।
और ओरछा राजवंश के बैरी खुद बन आप गये।।
राजबंस निरमूल हुऐ अब, ऐसी मन में भ्यास रई।
अब बुन्देला राज सुरक्छा की नईं कौनउँ आस रई।।६७।।

जीत देवगढ़ कों लौटे, तब तौ बाँहन में भर लव तो।
बड़ी-बड़ी बातें करकें तब दरसा अपनोपन दव तो।।
बौ सब भूले, एक बेर झूँटेंईं बूझ लेते हमसें।
स्यात सत्त को भेद कछू मिलतो तुमाएयइ अपनिन सें।।६८।।

महाराज आबेस भाव बोले, उपदेस न देव हमें।
मन्दिर में चलकें अपनी हरदौल परीक्छा देव हमें।।
गंगाजली रामराजा के सन्मुख उठा लेव चलकें।
तेजी सें बढ़ गए जुझारसिंग छोटे भइया सें कहकें।।६९।।

हरदौलउ चल भए पिछाईं सें पौंचे चल मन्दिर द्वारें।
जहाँ ओरछा भर की जनता ठाड़ी मानो मन मारें।।
खलदल नें पिरचार परीक्छा को सबरेंई कर दव तो।
नगर ओरछा भर में पैलेसेंई जहर बिखर गव तो।।७०।।

अब तौ मात्र जुझार और हरदौल गये मंदिर भीतर।
रानी चम्पा पैलइ सें बैठीं तीं दुख कातर भीतर।।
सास्टांग हरदौल देव नें भगवन कों पिरनाम करो।
उतै धरी पावन गंगाजलि को निज सीस उठाय धरो।।७१।।

अब बोले हरदौल रामराजा सें ओ अन्तरजामी!
तुम समर्थ सब जानत उर सब जगाँ बिराजत हौ स्वामी!!
अपनो पाप-पुन्न कयँ तुमसें हुऐ हमाओ पागलपन।
छिपौ अपुन सें का हमाव, फिरऊँ कछु हम कै रए भगवन!!७२।।

दीन अकिंचन है तुमाव हरदौल सामनें धनुधारी।
जो सपनेंउँ ध्यान में आई होय हमाये परनारी।।
या जो सपनो याद न हो बामें आई हो परनारी।
तौ ऊके साक्छी तुम भगवन! है प्रमान की लाचारी।।७३।।

डन्ड बुरे सें बुरो होय जो देव नाथ! सुइकार हमें।
जनम सैकरन किलपत बीतें, डंड देव सरकार हमें।।
कीरा और मकूरा जीवन जनम-जनम लों हम पाबैं।
औरउ इनसें हो कठोर बे डन्ड हमें प्रभु! दए जाबैं।।७४।।

प्रभू! राजमाता हमाइ माँ पै दुरभागग हमाओ है।
माता के चरित्र के प्रति बेटा कों दोस लगाओ है।।
माँ के प्रति अपनो निस्ठा सम्बन्ध प्रमान देयँ कैसे।
प्रभू! राजमाता हमाइ माँ हैं बस माँ, का कयँ कैसें।।७५।।

कछु अगाँइँ ना कै पाये हरदौल धड़ाम गिरे भू पर।
चम्पा के मुख बोल न फूटौ, धर गंगाजलि सिर ऊपर।।
ठाड़ी भई रामजी सनमुख, नैंनन अँसुअन धार बही।
निरख रामराजा कों का कयँ, मन की मन में बात रही।।७६।।

आइ मूरछा प्रभु के सनमुख चम्पा इकदम ढेर भई।
तभइँ सँमारो बेला नें, अब एक परीक्छा होय गई।।
भई प्रजा के बीच परीक्छा और लगो परसाद बटन।
गये राजपरिबारी जन अब मन्दिर में करबे भोजन।।७७।।

धरे थार भोजन के आँगू पै न कोउ भोजन पाबै।
तब चम्पा हरदौल पास जा बैठी मन अति दुखयाबै।।
पथरानी आँखें, भर्राये सुर में थरथरात बानी।
'लाला! भोजन तौ केबल करनें तुमेंइँ' कइ म्हाँरानी।।७८।।

गंगाजली परीक्छा तौ नाटक रव इतै बुलाबिन को।
असली तो अब सुरू हो रई, ओखो भर है भोजन को।।
अब हमाइ हो रई परीच्छा महाराज नें लव निरनै।
सच्चरित्र हम, निस्कलंक तुम, ईके लानें दव अभिनै।।७६।।

उनकों तब बिसवास हुऐ, हरदौलै जब अपने हँातन।
परसो जाबै जो थारा में, चम्पा करवाबै भोजन।।
बस इत्ती सी बात? भला ईमें बिसेस का बात भई!
अपुन कराओ अपने हँातन, मोय खुसी की बात भई।।८०।।

बैठे हम कराव भोजन, ओ अच्छी प्यारी भौजाई!
सिबा तुमाये और कोउ नइँ, ईमें का दुबिधा माई!!
कैउ जनम के पाप होत छय सती नारि के दरसन सें।
बड़े भाग्ग हम भोजन कर हैं सती! तुमाये हँातन सें।।८१।।

बैठे देव सुखासन सें बोले भौजी! कराव भोजन।
जीसें आत्मा परम त्रप्ति पाबै उर सफल होय जीवन।।
लाला! तुम तौ भोरे हौ, का है ई भोजन का जानो।
इत्तौ कै बे रोय परीं, अँसुअन की भइ बरसा मानो।।८२।।

'लाला-लाला!' कहत बँधी हिल्की, अगाँइँ ना बोल सकी।
देख दसा उर प्रेंम, करी पूरी भौजी की बात रुकी।।
ओ हमाइ अच्छी भौजी! हम जानत हैं, सब जानत हैं।
हमें पतो, भोजन में बिस है, कैसें का भव जानत हैं।।८३।।

जा बिस में बस इत्ती सक्ती टोर सकत है केबल तन।
किन्तु तेज पिरकास आतमा कों दैहै ई बिस भोजन।।
मुस्काकें लव थार खेंच भोजन को भौजी के कर सें।
भोजन करबे बैठ गये, कढ़ गई चीख चम्पा मुख सें।।८४।।

बोलीं, लाला! ईमें बिस है, थार हमें दो थार हमें।
खाय न लिइओ, लैन लगीं, बोलीं लाला! दो थार हमें।।
तब हरदौल हो गये ठाड़े, थार लयें निज हँातन में।
चम्पा बेर-बेर चीखीं-रोई मन्दिर के आँगन में।।८५।।

टूटौ पुल धीरज को भीतर घुसी प्रजा सुन करुन रुदन।
द्रस्स सबइ नें देखो जाकें मन्दिर में अपनी अँखियन।।
तबइँ किबार रामराजा मन्दिर के धम सें बन्द भये।
अपने आप बन्द भए, मानो प्रभु घटना सें क्रुध्ध भये।।८६।।

मुस्क्याउत भए बिस भोजन हरदौल करें ठाड़ें-ठाड़ें।
तब बाला नें थार छुड़ा लव उर आ गव उनके आड़ें।।
तब तक तौ बिस खाइ चुके ते बिस लड्डुआ या खीर सबइ।
चीतकार कर उठी प्रजा, बाला की मति पागल सी भइ।।८७।।

खेंच थार मंदिर सें भागो कछु लोगन नें पछयाओ।
बाहर बाला खान लगो तब 'सोमतिया मँहतर' आओ।।
जूँठन पै अधिकार हमाओ, ऊनें थार छुड़ाय लओ।
जानबूझ कें खान लगो बिस, असल भाव में आय गओ।।८८।।

मंद हँसत हरदौल देव चम्पा भौजी ढिंग आय गये।
बोले भौजी! भइया तौ बिस ख्वाय हमें सुख पाय गये।।
बस अब तुम अमरित पिबाय दे, चम्पा नें दव ल्या पानी।
अपने आँचर सें मौं पौंछो, पान ल्याइ चम्पा रानी।।८।।

ओ लाला! खा लेव पान बैरी की पतनी के हाँतन।
खाव पान हरदौल देव नें साध्वी भौजी के हाँतन।।
ताके बाद देव नें भौजी के चरनन में सीस धरो।
जैसें-तैसें चम्पा नें उनकों उठाव, इसनेह करो।।८६।।

माथो चूमो बोली, लाला! सदा ओरछा में रइओ।
बिजै तुमाई भइ देवर हरदौल अमर होकें रइओ।।
इत्ती कह कें गिर गइ चम्पा, अब जल्दी हरदौल चले।
करकें नमन रामराजा कों, पिरजा सें बे आन मिले।।६०।।

आये मन्दिर बाहर पिरजा-चीतकार करकें रोई।
भओ जहर को असर लगो अब मौत ओरछा पै छाई।।
दव संकेत देव नें अपनी सिसकीं रोकीं पिरजा नें।
जड़बत ठाड़े रै गए, देखो जब हरदौलै जनता नें।।६१।।

आतमबल सब जुटा देत हरदौल प्रजा कों उदबोधन।
आतमबत प्यारे पिरजाजन! सबइ ओरछा जीवनधन!!
हौनी के कारन भइया! अनहौनी हमनें सुइकारी।
हतो पतो पैलइ सें, अपनेई पालैं बैरादारी।।६२।।

सड़यंत्री ई मंत्रजुध्ध को पैलइ सें सब हतो पता।
भइया के बिबेक पै रव बिसवास जौइ बन गई खता।।
भए परास्त जा मंत्रजुध्ध में भौत बुरी जा हार भई।
अगर चाहते तौ ना होती, जो जा बेझाँ मार भई।।६३।।

सक्ती बल हम अपँइँ समस्या तुरतइँ सब हल कर लेते।
पै प्राता इसमरन जोग माँ कों ना लोग जियन देते।।
दुनिया की नजरन में रार्ती सदाँ कलंकित म्हाँरानी।
हाँत काउके पकर सकत, पै पकरी जात न मुख बानी।।६४।।

अपँइँ संसक्रति है चरित्र की, जीकी रक्छा आबस्यक।
चरित कलंक राजमाता को धुबबौ रव परमाबस्यक।।
चरित कलंक राजमाता को धुबै प्रान आहुति दैकें।
तौ नइँ एक कैउ हरदौलन की बलि दै रैहैं धोकें।।६५।।

जौलौं जीवन अपँइँ संसक्रति और सभ्यता की रक्छा।
करहैं हम भइया! फिर आँगें तुम सबकी जैसी इच्छा।।
ईके लानें लड़े और स्वाँसा तौलौं लड़तइ रैहैं।
तबई भारत की संस्क्रति कों सास्वत राख अपुन पैहैं।।६६।।

नौजवान साथीजन! सबसें जौई अन्तिम अभ्यरथन।
जथाजोग ईऐ सँमारिओ, संस्कृति है जन जीवन धन।।
जितै संस्कृति और सभ्यता कों अपमान मिलै भइया!
उतै सान्ति–सुख–बैभव को तौ मानो नाव मिटै भइया!!६७।।

बिना संस्कृति और सभ्यता सदाचरन संभव नइँयाँ।
सच्चरित्र के बिना मनुज जीवन को कछु मतलब नइँयाँ।।
हमनें जो बिसपान करो ऊऐ न मानिओ भावुकता।
पूरे होस, बिबेक सैत बिस खाव न कइओ कायरता।।६८।।

पनपै ना परिबार कलह उर सिगयँ एकता बनी रहै।
अपँव संगठन बिथर न जाबै, आपुस में ना ठनी रहै।।
जाँ नारी को होत मान, सब करत देवता बास वहाँ।
राष्ट्रमंत्र है जौइ हमाओ, उऐ छोड़ हम जायँ कहाँ।।६९।।

नारी पिरतिस्ठा को सास्वत सूत्र जौइ दव गव जग कों।
प्रानउँ दैकें रक्छा करनें ईकी भइया! हम सबकों।।
असर जहर को भओ और हरदौल और ना बोल सके।
जीभ चिपक गइती तरुआ सें, तन अपनो ना साद सके।।१००।।

बे धड़ाम गिर गये धरनि पै और छटपटाये पल भर।
भये चेतना सून्न, उड़ गओ प्रान प्रखेरू तन तज कर।।
मच गव हा-हाकार ओरछा की पिरजा, रो-बिलख परी।
हाय-हाय! बुन्देलखण्ड पै आई कैसी बिसम घरी।।१०१।।

चीतकार, करुनाक्रन्दन कौंने-कौंने में ब्याप गओ।
सुनकें हा-हाकार करेजौ बेतबती को काँप गओ।।
पिरजा निज सुत बध की नाईं बिलख-बिलख भौतँइ रोई।
पटकै बिटप, दिबाल, कगारन पै सिर निज सुध-बुध खोई।।१०२।।

कोउ कहै मुगलनसें जादाँ क्रूर सत्रु भइया निकरो।
कोऊ कहै धूर्त अबिबेकी, बुध्धिहीन राजा निकरो।।
साफ-साफ भइतीं सब बातें, तोऊ जिद पै अड़े रहे।
नकली-बाबा बैरागिन के सब्द जाल में फँसे रहे।।१०३।।

बैरी को सड़यंत्र सफल भव हार भई बुन्देलन की।
गई आतमा अब न जरूरत कतई ई नस्वर तन की।।
कइयक खा पछाड़ दुखकातर हर के चरनन आय गिरे।
साड़े नौ सौ आतमीय जन स्वेच्छा सें बिस खाय मरे।।१०४।।

अनगिन पसु बा समय मरे जहरीलो कर-करकें भोजन।
रोय करुन रस परो देख कें दसा उतै की अति दारुन।।
खा पछाड़ गिर गई हिमांचल कुँअरि पती के मृत तन पै।
अभै न छूट पाइती मेंहदी रची ब्याव की हाँतन पै।।१०५।।

रो-रो है बिहाल, नवधा कों का कह कोऊ समजाबै।
छाती-पीटै, तिरियाँ सादें, बौ हो-हो अचेत जाबै।।
तीनउँ साल न भये ब्याव कों उर सुहाग उजरौ ऊकौ।
कैसें को समजाबै, दुख नइँ कहबे में आबै ऊकौ।।१०६।।

मिरतूअन पै हा-हाकारन सें अम्बर है जात फटो।
देख निर्त बिकराल मिर्तु को हियो कैत में जात फटो।।
धिक्कारत सबई जुझार कों, भर-भर मौं सापैं दै रए।
मरजादा भय तज सबई जन, कहीं-अनकहीं सब कै रए।।१०७।।

तान्डव निर्त मिर्तु को सूरज देव उतै ना देख सके।
और दुखी मन बे पच्छिम में जल्दी-जल्दी जाय लुके।।
बिक्रम सम्बत सौरा सौ अट्ठासी को रबिवार दिबस।
क्वाँर मास को सुकुल पक्छ को है अपरान्न काल तिथि दस।।१०८।।

डूब ओरछा गओ अँधेरी रात भयंकर भइ कारी।
ढेर लगो लासन को भौतइँ भइ डरावनी भयकारी।।
चीतकार, करुना बिलाप उर हाय-हाय में रात कटी।
अनुमानउँ सें परे दुक्ख कहतन में छाती जाय फटी।।१०९।।

सब हरदौल बिरोधी तुरतइँ नगर ओरछा छोड़ गये।
पूरेई बुन्देलखण्ड कों दुख भट्टी में झौंक गये।।
तेइस सालइ की उम्मर में राक्छसन नें खाय लओ।
राज्य पराजय, अपँइँ मौत कों, नृप नें घरइँ बुलाय लओ।।११०।।

रानी चम्पावती आयु उन्सट की तोउ न सोच सके।
फूट हिये की गइँ जुझार कीं, बैरी कों ना टोक सके।।
अपँए कक्छ सें चल जुझार चम्पा के कमरा ओर गये।
देख उतै सन्नाटौ बे अकबका तुरंतइ लौट गये।।१११।।

गिरबे कों भए तौ दिबाल कों पकर उतइँ ठाड़े हो गए।
ब्याकुल देखें इतै-उतै भौतइँ असान्त मन में हो रए।।
तबइँ बन्द पिंजरा सें उतईं एक सारिका लख बोली।
भौत खरीं-खोटीं जुझारसिंग नृपै सुनाउत भइ बोली।।११२।।

रे राजा! तैं भौतइँ पापी, बड़ो दुस्ट हत्यारो है।
सबसें जादाँ तौ मूरख है, कैकें अति धिक्कारो है।।
हम पंछी महलन में राखे जात न सोभा के लानें।
उर न होत दरबारीयन से चापलूसियत के लानें।।११३।।

हम पंछी तो गुप्त सबइ देखत उर सुनत इतइँ रैकें।
ऊँच-नीच हौनी-अनहौनी, अपने मालिक सें कैकें-
करत सचेत इसारन में पै करत अदेखी मूरखजन।
ई बुध्धी-बिबेक ईसुर नें दए बिसेस नर में राजन!!११४।।

दुख तौ ई है, रे मूरख! सड़यंत्र जाल ना परख सको।
फँस गव ऊमैं, कैसो राजा, भलो-बुरो नइँ समज सको।।
ई 'धरती के देव' अनुज हरदौलैई तैनें भख लव।
बन कें तक्छक नाग, देव सम भइयैई तैंनें डँस लव।।११५।।

काँ उन्सठ कीं रानी तेइस साल उमर हरदौल कुँअर।
तौउ कलंक आसनाई को, बुध्धी मुगलन नें लइ हर।।
थू-थू! रे तेरी करनी पै का-का कयँ सब्दउ नइँयाँ।
पसु-पंछीयउ अपँव बुरौ-अच्छौ जानत, संसय नइँयाँ।।११६।।

हम साक्छी हैं ईके उर सौगन्ध खाय कै रइँ तुमसें।
चम्पा गंगा सी पावन है, कछू छिपौ है नइँ हमसें।।
साक्छात हरसुत गनेस हरदौल देव हैं नइँ संका।
छी-छी रे! उनके चरित्र पै ऐसो लांछन उर संका!!११७।।

मरे न बे हरदौल देव, अब मृत तुम अपने कों मानो।
अब अस्तित्वहीन बुन्देला और ओरछा कों जानो।।
हम पंछी अभऊँ जीबित हैं, भौत-भौत धिक्कार हमें।
हरदौलइ सँग काए न मर गए, लगत प्रान निस्सार हमें।।११८।।

करुन कौंक उर सिसकारी छोड़ी व सारिका सान्त भई।
मानो साप सारिका नें दइ जो साकार तुरन्त भई।।
सुन जुझार को माथो ठनको, अन्तरमन बिबेक जागो।
चीतकार कर उतइँ गिर परे, भए बेहोस, होस जागो।।११९।।

देख उनें बेहोस सेबकन नें उठाय कें पार दओ।
जब न चेतना लौटीं तौ उनको तुरंत उपचार भओ।।
आउत-आउत होस उनें बौ रात भयानक बीत गई।
भोरइ भइ जुझार उठ बैठे, हियै बेदना भौत भई।।१२०।।

चीख परे 'भइया-भइया हरदौल' कहत दौरे आये।
फूलबाग में आये हर के सव सें लिपड़े चिल्लाये।।
बिलख-बिलख बोले, भइया! हम पापी हैं, हत्यारे हैं।
हमें छमा कर दो, अपराधी हम हर तराँ तुमारे हैं।।१२१।।

बाँह दाहिनी कटी हमाई तुम बिन हम निस्तेज भये।
गैर पुरुस तो गैर हाय! अपनेई खंजर भौंक गये।।
सबइ भाँत हम हारे भइया! भओ आज सरबस स्वाहा।
मानी होती बात तुमाई तौ न आज होती हा-हा।।१२२।।

भइया सें बढ़कें काऊ कों मान लओ, जा भूल भई।
नकली साधूअन नें सान्ती-सुख की होरी फूँक दई।।
तुम सब बीर-धीर-बलसाली-त्यागी-दुरलभ है मानव।
छमा करो भइया! पापी कों, बनो मनुज सें जो दानव।।१२३।।

होत न कछु पछताये सें चुन लव जब खेत चिरइयन नें।
अब बे कोउ न इतै दिखा रए, जाल बिनो तौ जिन-जिननें।।
बारेलाला नें सवजात्रा को सबई पिरबन्ध करो।
रोउत-रोउत करो सबइ कछु अपने उर सिलखन्ड धरो।।१२४।।

नदी बेतवा तीर ओरछा, निकट मुहल्ला जुगयानो।
चिता बनाई गइ चन्दन की, जैसइँ पिरजा नें जानो।।
लाखन की संख्या में जनता, जो सुन पाओ दौर परो।
अन्तिम दरसन कों उनके सव कों प्रांगन में ल्याय धरो।।१२५।।

राजा-म्हाँराजा-सामन्तन नें सिर टेक प्रनाम करो।
फूल-फूलमाला, अँसुअन सें महावीर सनमान करो।।
सवजात्रा हरदौल देव की पौंच चिता के पास गई।
अन्तिम संसकार की किरिया सास्त्र बिधी अनुसार भई।।१२६।।

एक साल के पुत्र बिजयसिंग सें सब किरिया करवाई।
काउ स्वजन नें लव गोदी में, अब मुखाग्नि बेरा आई।।
साड़े नौ सौ चिता और बारेलाला नें बनवाई।
बिधिवत कर्मकाण्ड पूरो कर अन्तिम किरियाँ करवाईं।।१२७।।

अग्नी संस्कार होबे कों हतो बइ समय की घटना।
दौरी-दौरी आइ हिमांचल कुँअरि तुरत बोली, रुकना।।
आ हरदौल देव की पतनी नें पुरैत कों रोक दओ।
हँात जोर कें ढिंगा चिता के ठाड़ी भइ आचरज भओ।।१२८।।

बोली बौ, ओ देव धरा के उर निज हेमा के स्वामी!
अभै परीक्छा एक और नस्वर तन कों दैनें स्वामी!!
जो हमाइँ जीजी चम्पा जू गंगा सी पावन होबैं।
और बीर हरदौल देव साक्छात देव गनपति होबैं।।१२६।।

तौ अपनी ई अरधांगिनि के हँातन सें बीड़ा खाबैं।
मुख पै करो पान बोली, खाबैं स्वामी! बीड़ा खाबैं।।
मृत हरदौल देव नें मुख खोलो उर बीड़ा खाय लओ।
देख अलौकिक घटना सबकों अचरज, तन रोमांच भओ।।१३०।।

रानी चम्पावती सत्व उर चरित सुध्ध भव पिरमानित।
सफल परीक्छा में भए दोऊ घटना घटी अप्रत्यासित।।
धन्न-धन्न कह उठी प्रजा बोली हरदौल देव जै-जै।
जैकारन सें गगन गूँज गव, सबई बोले जै-जै-जै।।१३१।।

अगनीदान चैंनुआ से सुत के हँातन करवाओ गव।
अगनी संस्कार एकइ सँग सामूहिक उन सबको भव।।
धूँ-धूँ जरत चितन की ज्वाला, लगै ओरछा सिगव बरै।
चटकें सव, बौ द्रस्स भयानक, को जो बरनन सहज करै।।१३२।।

परिजन और प्रजाजन सबई देख चितन कों बिलख रये।
आतमीय जन, मित्र, स्वजन हरदौल संग जर राख भये।।
बिधि-बिधान सुइकार, बेतवा में सबनें इसनान करो।
और सबइ नें नगर ओरछा के लानें प्रस्तान करो।।१३३।।

चलत-चलत जइ बीच इकाइक इक आबाज सुनी सबनें।
जन समूह भव चौकन्ना, ठिटकौ उर बात सुनी सबनें।।
'को कै रव हरदौल मर गये, अजर-अमर हैं हम प्रियजन!
कल्प अन्त तक नगर ओरछा में रैंहें है सत्त बचन।।१३४।।

जैसे पैलें संग हते, बउ सें जादाँ अब सँग रैंहैं।
सेबा और सुरक्छा बैसी अब सबकों हरदम देंहैं"।।
हँसे खिलखिला कें दिमान हरदौल सुनी ती जो सबनें।
हाँत जोर सब नत मस्तक भए जैकारा बोलो सबनें।।१३५।।

सुनकें बानी द्रड़ता आई, बढ़ गव साहस आतमबल।
सोक सिन्धु में डूबत मन कों मिल गव ठोस सत्त सम्बल।।
'जै हरदौल' और 'जै जै हरदौल' मंत्र सब जपन लगे।
करत प्रार्थना चले मनइँ मन रक्छा बिन्ती करन लगे।।१३६।।

प्रार्थना

दोहा

सच्चे मन सें प्रार्थना करत देव! हम लोग।
जीवन के मैटो सबइ, हे हरदौल! कुजोग।।६।।
बिगरी मोइ बनाइओ, ओ लाला हरदौल!
कृपा करो, रक्छा करो दरस देव अनमोल।।७।।
ओ धरती के देवता, श्री गनेस औतार।
लज्जा राखौ देव जू! बिगरी लेव सँमार।।८।।
नर तन धर आये अपुन साकछात गनराज।
धन्न बुँदेला भूमि भइ, जै हरदौल मराज।।६।।
जै-जै-जै हरदौल जू! जै बुन्देला देव!
सरन तुमाये नाथ! हम, दया-कृपा वर देव।।१०।।
सदाचार, करतब, धरम, पालैं हम सब लोग।
देव! देव मति-गति हमें, रहैं सदा नीरोग।।११।।

सर्ग : सत्रा

भतइया हरदौल देव

✺ दोहा ✺

बुन्देला हरदौल की मिर्तू के उपरान्त।
छाइ उदासी–बेदना, हर मन रहै असान्त।।१।।
सन्नाटौ छाओ रहै, जैसें मरघट घाट।
लगै देव की मौत सँग, मरो ओरछा ठाट।।२।।
बीर–धीर हरदौल सँग, गव पौरुस बल–तेज।
नगर ओरछा जनन को जीवन भव निस्तेज।।३।।

✺ छन्द ✺

नगर ओरछा की पिरजा में बिकट उदासी छाई ती।
बिन हरदौल सबइ के मन में भौत निरासा आई ती।।
जीवन कुरस भओ लोगन को, लोग उतै सें भगन लगे।
जीकों जाँ मिल गओ ठिकानो, छोड़ ओरछा रहन लगे।।१।।

कछू दिनन में नगर ओरछा हो कतई बीरान गओ।
मानो सब बुन्देलखण्ड पिरजा नें नृप कों दन्ड दओ।।
सबसें बड़ौ डन्ड है बस मन सें उतार दे काऊ कों।
सोइ प्रजा नें करो भला बे का बताउते काऊ कों।।२।।

त्यागो जाति–समाज आदि नें तिरस्कार हर भाँत भओ।
मानो सबनें मिल जुझार कों भौत बड़ो आघात दओ।।
नृप जुझार एकान्त किला में डरे भौत बेचैन रहैं।
चिन्ता साँपिन नें डँस लव तो, कहो आज हैं कल न रहैं।।३।।

तिल-तिल घुर रए ते जुझारसिंग उनकों चिन्ता रोग लगो।
कोऊ ना दिखात तो अपनो, गरल राज उपभोग लगो।।
नगर बेरछा कुंजकुँअरि ब्याही गइ जो कि राज्य दतिया।
कुंजा उर रन्जीतसिंग्घ की रतनकुँअरि प्यारी बिटिया।।४।।

मानसिंग्घ, खड़ऊबा (सिंवढ़ा) सँग रतना को ब्याव भओ।
भात बिटीना की माँ भइया सें माँगत, सो इतउँ भओ।।
परम्परा बुन्देलखण्ड की, भात माँगबे गइ बहना।
पौंच ओरछा सोचै कुंजा काँ जाबैं, कउँ को मन ना।।५।।

भइया नृपत जुझारसिंग्घ कों करो जाति बंचित सबनें।
छोड़ दओ है सब समाज नें उर बिरादरी भइयन नें।।
प्रिय भइया हरदौल देव की पत्नी के घर बौ जाती।
जाती तौ तब जबकि हिमांचल कुँअरि ओरछा में होती।।६।।

हेमा अपने इकलौते सुत बिजय देव कों सँग लैकें।
बड़ागाँव जागीर अपँइँ कों गई ओरछा कों तजकें।।
अब कुंजा पर गई सोच में, मिलैं इतै तौ अब कीसें!
तब अनजानन घाइँ बेतवा में नहाय लव जल्दी सें।।७।।

करे रामराजा के दरसन और निमंत्रन दव उनकों।
पीरे चाँउर भेंट करे कुंजा नें सादर भगवन कों।।
गइ हरदौल समाधी पै, उठ कें उतसें भारी मन सें।
पौंच भौत रोई बिलखी जैसें साक्छात मिली उनसें।।८।।

हा भइया! कह हिलकी भर-भर भौतइँ रोई आज बहन।
जब तनाव-दुख कछु सम भव तौ लगी बीर सें बात कहन।।
बीर ओरछा का तुमकों बुन्देलखण्ड की कन्याँ भर।
भइया कातीं और मानतीं, जा तौ जानत दुनिया भर।।९।।

सिगए ओरछा की बिटियन की बिदा करत रए तुम भइया।
अब को है जो दौरो आहै उनकी चीखें सुन भइया!!
कीकौ हियो कि जो नारी करुना क्रन्दन सुन काँप उठै।
नारि सत्व रक्छा के लानें बैरी सनमुख आन डँटै।।१०।।

कीकी बीर! बलइँयाँ लैहैं, नगर ओरछा की तिरियाँ!
किये टेर हैं 'लाला-लाला' कहकें सिगईं भौजइयाँ!!
तुमनें पावनता बेदी पै भइया! कर बलिदान दओ।
अमर भये अपने चरित्र सें दुनियाँ कों संग्यान दओ।।११।।

ब्याव लाड़ली भान्जी को है सो अबसइँ भइया अइओ।
आँधी-पानी-आगी-ओरे सबई सें रक्छा करिओ।।
हौनी-अनहौनी सँमारिओ, अभय दिओ बीरन सबकों।
पीरे चाँउर और निमंत्रन सादर हम दै रए तुमकों।।१२।।

फिर सें भइया को प्रनाम कर भारी मन लौटी दतिया।
गई न मिलबे तक जुझार सें, जो नृप-सौतेलो भइया।।
आज उतै गनगौर पूजबे जुरीं ओरछा की तिरियाँ।
संगै कइयक भईं इखट्टीं पूजन में हुन की कन्याँ।।१३।।

पूजन कर गनगौर सिराबे गईं बेतवा सरिता पै।
मूर्ति सिरा कें सब आगम की कर रइँ चिन्ता नदिया पै।।
भए सहीद हरदौल संग, कन्याँ जादाँ उनकी उनमें।
स्यानीं ब्याव जोग हैं सबई, हैं उदास वे सब मन में।।१४।।

जौबन कान्तीहीन मलिन मुख भरी बेदना अन्तस में।
की सें कयँ, को सुनत, पुँछउआ को, जो अँसुआ आँखन में।।
एक सियानी बिटिया कों कछु सूझी चुहल और बोली।
चलो-चलो बुन्देलखण्ड भर के भइया ढिंग हमजोली!!१५।।

अपुनउँ सब हरदौल देव भइया समाधि पै आज चलो।
पीरे चाँउर दिइयें उनकों, चलो-चलो री दौर चलो।।
दै पीरे चाँउर कैंहैं, बापू तौ सँग बलिदान भये।
पीरे हाँत करै को अब जे कौन आसरें छोड़ गये।।१६।।

नइँ सुन हैं बे तौ हमऊँ उनकीअइ रस्ता चल दैहैं।
ईसें लाभ हुऐ जौ कै अम्मन के दुखड़ा मिट जैहैं।।
सबइ हँसीं तौ, पै अन्तस की पीरा चहरन पै झलकी।
हास-ब्यंग करतीं जा रइँ रस्तइ में है समाधि उनकी।।१७।।

गइँ समाधि पै और भई गम्भीर हाँत जोरे उननें।
बौ दिन करकें याद रो परीं, अँसुआ बरसाये सबनें।।
मनईं मन बे करें प्रार्थना लाज राखिओ ओ भइया!
नाव हुऐ बदनाम तुमाओ, इतै कोउ अपनो नइँयाँ।।१८।।

इक बिटिया नें पीरे चाँउर-फूल चढ़ा दए ते हँस कें।
सबइ लौट आईं तीं घर कों अपँइँ बात उनसें कह कें।।
होय बिनोद भलेंईं पै परिबार बेदना जाहिर है।
ई पीरा सें मुक्ति दिबउआ घर में कोउ न हाजिर है।।१९।।

जीके घर में बिना बाप हो स्यानी ब्याव जोग बिटिया।
ऊ मताइ के दिल सें बूझौ, चैन न दिन न रात निंदिया।।
ना धन घर में उर न कमउआ कैसें बेड़ा पार लगै।
माँ-बिटियाँ बे चतुर कि जिनके जीवन में ना दाग लगे।।२०।।

ऐसे दुख की थाय लै सकत बे जो लोग भुक्तभोगी।
समर भयंकर ई जीवन को, का समजैं बिरक्त-जोगी।।
ई दुख को अनुमान करो हरदौल देव अवतारी नें।
समजी कन्यन की कराह उन मिर्तु प्राप्त बलधारी नें।।२१।।

दुखी भये हरदौल तुरंतइँ धरमपाल के पास गये।
धरमपाल जाँ सो रव तौ, 'हर' ओइ कक्छ में पौंच गये।।
फेरौ हाँत धरम के माथैं बौ तत्कालइँ जाग गओ।
बड़ी आतमिक सान्ति मिली उतसाय बदन में आय गओ।।२२।।

आँखें खोलीं, चौंक परो उर बोलो, दिमान साहब! तुम?
देख उनें अकबका उठो उर जोर लेत है हाँत धरम।।
बोलो धरम, दिमान साब! का आग्या है हमाए लानें।
बोले ते हरदौल देव, सुनलो जो है तुमाए लानें।।२३।।

धरम! हमाये भौतिक तन की पूर्ति तुमेईं करनें है।
नगर ओरछा की क्वाँरीं कन्यन की गिनती करनें है।।
जो-जो होबें ब्याव जोग उन क्वाँरी कन्यन घर जाओ।
उनके घर इक-इक हजार चाँदी की मुद्रा दै आओ।।२४।।

कै अइओ इन मुद्रन सें अपनी बिटियन के ब्याव करो।
और जरूरत होय कछू तौ सोउ बिबस्था जाय करो।।
ब्याब भनैजी को है ऊकी सबइ बिबस्था करनें है।
पौंचाओ सामान भात को कौनउँ कसर न रखनें है।।२५।।

नौंते की चिठिया समाधि पै धरी उऐ जा बाँच लिओ।
लिखी तिथी के पैलेंईं चीकट ब भात पौंचाय दिओ।।
तुमें खजानो पतो हमाओ, चाबी ऊकी तुम पै है।
खतम खजानो नइँ हुइऐ ई जिम्मेदारी हम पै है।।२६।।

कोऊ दखल न कर है ईमें, कतइ न तुम चिन्ता करिओ।
धरम! कोस अधिकारी हौ तुम, कभउँ काउसें ना डरिओ।।
अन्तरधान भये दै आग्या, रओ बुलाउत धरम उनें।
सन्नाटौ छा गओ रात को, नमन मनइँ मन करत उनें।।२७।।

बीती रात बनाउ्त जोजना, धरमपाल कों नींद कहाँ!
प्रातक्रिया सें निबट गओ हरदौल देव को कोस जहाँ।।
भरी बैलगाढ़ी मुद्रन सें कन्यन के पौंचो घर-घर।
जो आग्या हरदौल देव की, करो सोइ जाकें हर घर।।२८।।

अट्ठा भर ई चलो काम सो आव आत्मबल बिटियन में।
मनईं मन बे छमा माँगती, धन्न-धन्न कै रइँ मन में।।
किलक उठीं बिटियाँ उर पालक जन सब जै-जैकार करें।
जाँ समाधि हरदौल देव की सबई जाकें माथ धरें।।२९।।

ईके बाद भात सामग्री कों गाढ़िन में लदवाओ।
चीकट सँग दहेज के सब सामानै दतिया पौंचाओ।।
दैबे कों दहेज में हाँती, अश्व, ऊँट, गउयें बढ़िया।
सँग-सँग हँकवाये ते जो सब गये ओरछा सें दतिया।।३०।।

धरमपाल खुद गये संग में, कमी न कौनउँ राखी ती।
प्रतिनिधि बन हरदौल देव के सबइ चीज पौंचाई ती।।
अब बुन्देलखन्ड भर में जा घटना को हो सोर गओ।
पुनरजनम सो सुइकारो, उनकों देबा सुइकार लओ।।३१।।

अब हरदौल समाधी भी बन गई ओरछा में तीरथ।
जीके दरसन करकें मानव होत आजऊँ किरतारथ।।
एक रामराजा मन्दिर, दूजी हरदौल समाधि बनी।
जीवित तीरथ हैं, जा देखो, मानो जिन जू! बात सुनी।।३२।।

अक्छै बर तिरतीया के दिन इक हजार बर-कन्यन के।
भये इखट्टे ब्याव, न पैलें भए ते कभऊँ ई ढँग के।।
रइ किरपा हरदौल देव की, कहूँ न नैकउँ बिघिन परो।
सब जोड़न नें देव समाधी पै जा सादर नमन करो।।३३।।

हांती, घोड़ा, गउऐं, रथ उर गाड़ी दतिया में सबई।
चल रन्जीतसींग भैंनोई के द्वारें पौंचे सबई।।
धरमपाल नें दव उतार सामान हबेली के सामूँ।
सबइ जानबे कों उतसुक भए धरम गये उनके सामूँ।।३४।।

पूज्य देव हरदौल देव को जा सुनाव आदेस उनें।
भात और चीकट सामग्री पौंचाई श्रीमान् सुनें।।
घटना सबइ सुनाई तौ सबई के तन रोमांच भओ।
लोकदेव हरदौल देव को जैकारा नभ छाय गओ।।३५।।

उतै ओरछा और ओरछा पति के अब आये दुरदिन।
जीनें देखौ तीनें स्रापें दईं जुझारसिंग कों निसदिन।।
पागल से हो गए जुझारसिंग, भइया हर को बध करकें।
ना हरदौल न रव बिबेक, का करें ओरछाजन रहकें।।३६।।

सिगव ओरछा को सासन अब हाँत हिदायत ख़ाँ के है।
ऊकेई आदेस पलत, हर काम हाँत में बाके है।।
सुन हरदौल देव की करनी, चमत्कार उनके सुनकें।
कुढ़ौ हिदायत ख़ाँ मृत प्रानी की तारीफें सुन-सुनकें।।३७।।

धरमपाल कों तुरंत बुलाओ, धरम चले गए ते दतिया।
मन मसोस रै गओ खान, मन को मैलो बो छल बलिया।।
प्रतिहिंसा की आगी अभऊँ धँधक रई ऊके मन में।
जहर उगल रव तौ सबके प्रति जबइँ हिदायत बातन में।।३८।।

तबइँ भयंकर खुजरी भइ एकायकई ऊके तन पै।
कोठी सें चीखत-चिल्लाउत और खुजाउत भव तन पै।।
बाहर आय रामराजा मन्दिर अग्गा में लोट गओ।
'या अल्लाह रहमकर' कह चिल्लाउत भव बो लोट रओ।।३६।।

लोट-पोट होबै, लुड़कै भइ भीड़ इखट्टी देख रही।
बनो हिदायत आज तमासो, दसा न ऊकी जाय कही।।
सबइ खिलखिला कें हँस रएते कछु सुभचिन्तक पास गये।
जैसइँ पकरौ हिदात खाँ कों तैसइँ बेउ सिकार भये।।४०।।

खुजरी की बइ पीरा भइ उनकेंउँ बने बौ भी चकरी।
अब तौ कोऊ ढिंगाँ न जाबै, सबई की हिम्मत बिगरी।।
बे बन्दर को खेल बन गये, लगैं खजैला कुत्तन से।
हँसत दिखउआ दूनर हो-हो जा रए धनुस-कमानन से।।४१।।

खान जमूड़ा बनो मदारी को, तौं हरकत कर रव तौ।
खुजरी के मारें चीखै-दौड़ै-ऊलै उर गिर रव तौ।।
बैद्य, हकीम, झरउआ, ओझा सबइ ओरछा के आये।
भै के मारें गए न ढिंगाँ तक, दूर न पीरा कर पाये।।४२।।

सबइ दिखउआ हँसत रये ते देख कलाबाजी ऊकी।
भौत देर भइ लस्त हो गओ, घिग्गी बँध गइती ऊकी।।
पतो लगौ तौ बारेलाला ऊ प्रांगन में पौंच गओ।
करी जानकारी हालत लख, तुरत खान के पास गओ।।४३।।

बोलो ओ नबाब साहब! रक्छा चाहो जो जीवन की।
तौ हरदौल समाधी पै जा भिक्छा माँगो प्रानन की।।
अब बुराइ जिन करिओ, कर लो प्रास्चित अपने पापन को।
तौइ बच सकत नइँ तौ मानो जीवन कछुअइ घंटन को।।४४।।

जीकौं प्रानन के लाले बौ जात-धरम कों का बूझै।
सुनतइ खेम चल परो लोटत-उठत-गिरत, कछु ना सूझै।।
पौंच समाधी पै गिरकें, 'ओ आका!' कहकें चिल्लानो।
'रहम करो हरदौल देव' फैलाय हाँत बौ गिगयानो।।४५।।

'माफ करो गुस्ताखी देबा!' कहकें सामूँ लोट गओ।
मिटी हिदायत खाँ की खुजरी अब तौ उठ कें बैठ गओ।।
माथो फिर रगड़ो समाधि पै, बौ इत्तौ भैभीत भओ।
छोड़ो रथ, नंगे घोड़ा पै बैठ आगरा दौर गओ।।४६।।

अब तौ जै-जैकार करी हरदौल देव जू की सबनें।
चूर घमण्डी को मद कर दव, तन बिहीन देबा हर नें।।
बइ दिन हतो ब्याव को मण्डप कुंजा की प्रिय बिटिया को।
जीमें चीकट और भात को काम हतो सब भइया को।।४७।।

उदना भव परिकास अलौकिक कुंजा बहना के घर में।
उतईं नईं अद्भुत प्रकास भव तो दतिया के घर-घर में।।
दतिया में हरदौल देव की बातें हो रईंती घर-घर।
भई भात की बेरा, मण्डप नेंचें आ गव तौ घर भर।।४८।।

सबई रिस्तेदार स्वजन आ बैठे ते मंडप घर में।
आई कुंजा बहन देव की, जो भौतईं उदास मन में।।
परमपरा बुन्देलखन्ड में है सब हर्स मनाउत हैं।
भइया मड़ये तरें बहन कों आय भात पैनाउत हैं।।४९।।

भात पैनबे कुंजा मड़वा नेंचें आई, दुखयाई।
आँखें ऊर्की भर आईं, सोचत का हूऐ बिन भाई।।
पै हरदौल कहाँ, भइया सें भात माँग कें आई ती।
पीरे चाँउर उर चिठिया नौंते की बौ दै आई ती।।५०।।

करत याद कुंजा भइया की, नईं आये तौ रोय परी।
बोली, भइया! बहन तुमाई टेरत काये देर करी।।
आओ भइया! आओ, आकें चीकट खुदई दै जाओ।
धन-दौलत नईं कछू चाँउनें, भइया! तुम तौ आ जाओ।।५१।।

बिलख-बिलख रोबै कुंजा सबई ऊऐ समजाय रहे।
पै न चुपायें चुप रइती बोली, बे काए न आय रहे।।
चीकट और भात को जब सामान इतै पौंचाय सकत।
धरमपाल सें कहकें बिटियन के बे ब्याव कराय सकत।।५२।।

मरकें बीर चिता पै भौजी–हौंतन बीरा खाय सकत।
बैरी मुगल हिदायत खाँ कों भइया सबक सिखाय सकत।।
अन्तिम संसकार सें लौटे दुखियन कों समजाय सकत।
तौ कुंजा के अँसुआ पौंछन काए न भइया आय सकत!!५३।।

भात रसम तौ भइया के हौंतनई पूरी हौंनें है।
नइँतौ समजौ भात बिना कुंजा कों सूनी रहनें है।।
हत्यारो भइया को, ऊ भइया सें भात माँगती का!
पा भइया हरदौल देव सो द्वार काउ के जाती का!!५४।।

हा भइया आ जाओ, अब तौ भात आयकें पैंनाओ।
तुम धरती के देव पूज्य, आ सबकों दरसन दे जाओ।।
अपनी जिद पै है कुंजा, बिलखत रइ आधी रात गई।
अब तौ दतिया नगर महल पै किरपा की बरसात भई।।५५।।

धरो हतो सामान उतइँ, लै कुंजा कों अपने हौंतन।
चीकट दइ हरदौल देव नें, आ निभाव नातो पावन।।
भेंटे भइया–बहन दोउ अब आइ भानजी की बारी।
दओ भात भरपूर उऐ भइ अति आनंदित सुकुमारी।।५६।।

हो भाबुक हरदौल देव कुंजा भगनी सें बूझत हैं।
बोलो बहन और का चइये, माँगो सो दयँ चाँउत हैं।।
बूझत कुंजा जो माँगैं सो दै हो? भइया! देव बचन।
हाँ कुंजा! इच्छा तुमाइ पूरी कर हैं हम देत बचन।।५७।।

कौनउँ कन्या की सादी को मिलै निमंत्रन बीर! तुमें।
ऊमें अबसइँ सामिल हुइओ बचन देव मतिधीर हमें।।
कुंजा बोली, हो अमीर चाँयें गरीब सबकें जइओ।
निबल–सबल को भेद न करकें, जा सामिल सबकें हुइओ।।५८।।

पैंलें भेद न करो कभउँ सो अभउँ दया सबपै करिओ।
ऊँच–नीच उर जात–पाँत सें परे रये अभऊँ रइओ।।
आँधी–पानी, ओरे, आगी और अन्हौनी बरकइओ।
निबटै सब निरबिघिन कार्ज जाकें सबकी रक्छा करिओ।।५९।।

लपट गई भइया सें कुंजा आँखन में अँसुआ भरकें।
तब हरदौल देव नें अपनी भगनी कों सन्मुख करकें।।
मुस्क्या कें जा करी प्रतिग्या जीकौ भी नौंतो आहै।
सामिल हुइऐं ऊ सादी में, कौनउँ नइँ दुखड़ो आहै।।६०।।

ऊकी पूरी कुसल-छेम को भार अपँए ऊपर लै रए।
चिन्ता करो न बहन लाड़ली! तुमसें सत्त बैन कै रए।।
इतनी कह हरदौल देव मण्डप सें अन्तरधान भये।
बइ बेरा सें बे 'ब्यावन के देव' नाम बिख्यात भये।।६१।।

ब्याव समय बुन्देलखन्ड में प्रथम होत गनपत पूजन।
उनई सँग हरदौल देव को करत लोग पूजन-अरचन।।
निबलन-बिकलन के सम्बल देवा लाला हरदौल बने।
अभऊँ हैं उर हरदम रैहैं, बे नर सें भगवान बने।।६२।।

जैकारा बोलो सबई नें, जै हरदौल देव की जै।
ओ बिबाह के सिध्ध देव, बुन्देला औतारी की जै।।
प्रीतम सिंग जागीरदार बेरछा निबासी दूजे दिन।
अपँए कुँअर प्रिय मानसींग की लै बरात आये सुभदिन।।६३।।

आ रइती बरात, सबई को भव तो रस्ता भर स्वागत।
पै नइँ कोउ दिखात हतो को है स्वागत सत्कार निरत।।
आ पौंची दतिया बरात, अगवानी भइ सत्कार भओ।
सामिल हैं हरदौल ब्याव में, हो सबकों बिसवास गओ।।६४।।

ब्यावन में बुन्देलखन्ड की इक पाँतै कौंरात कहत।
कउँ-कउँ कत पंगत बढ़ार की जोर-सोर सें लोग करत।।
होत भौत लम्बी नौंताई, बिंजन भौत बिसेस बनत।
रिस्तेदार और बौहारिन की बिसाल आ भीड़ जुरत।।६५।।

सबसें जादाँ खास होत कौंरात पाँत सब पाँतन में।
सोइ हो रई ती दतिया में, सोर हतो जन-परिजन में।।
सामिल सब बुन्देलखण्ड के जाने-माने लोग भये।
औ' दतिया के नगर निबासी, नौंते गए सब आय गये।।६६।।

भइ कौंरात सुरू परसीं गइँ पंगत में चीजें सबई।
ताके बाद सुध्ध घी परसो जा रव तो देखें सबई।।
गड्डुआ घी सें भरो परस रव तो घी सबकी पातर में।
पै परसउआ नइँ दिखात तो, खुसफुस भइ ती आपुस में।।६७।।

गड्डुआ जैसइँ दूल्हा राजा मानसिंग्घ सनमुख आओ।
उननें गड्डुआ पकर लओ बोले, नइँ लैनें रुक जाओ।।
परसउआ हौ अपुन कौन, पैलें दो अपने सुभ दरसन।
घी तौ हम लैंहैं तबईं, उर तबईं करहैं कौर ग्रहन।।६८।।

जौइ हमाओ नेग हुऐ जो आज अपुन कों दैनें है।
ईके सिबा न कछुअउ चइऐ, सोच लेव का करनें है।।
रुको रहो कछु देर अधर में, पै घी नइँ लव तो बर नें।
दैबे जाय थार तक गड्डुआ, पै कर जोरे ते बर नें।।६९।।

फैलो तो पिरकास अलौकिक देबा हर जू प्रगट भये।
दूल्हा कों का, सबइ जनन कों सिध्ध पुरुस नें दरस दये।।
भनिज दमादै मामा जू नें नेग रूप कछु गाँव दये।
बरुआ, भागौनी ब अमरपुर, भट, बाजाना फाय दये।।७०।।

उनकी जो जागीर, दये ते गाँव उनइँ में सें हर नें।
घी परसो अपने हाँतन, आसीस दई बर कों उननें।।
करकें बाताबरन सुगन्धित देवा अन्तरधान भये।
सबमें प्रैंमानन्द और भक्ती को कर संचार गये।।७१।।

आ 'हरदौल भतइया' नें कुंजा भगनी कों मान दओ।
भई क्रपा सब ब्याव काज निरबिघिन उतै सम्पन्न भओ।।
बने चौंतरा, भारत भर में थपे देव हरदौल सिगयँ।
बने बगल में 'सोमतिया मँहतर' के छोटे थान सबयँ।।७२।।

'सोमतिया मँहतर' अनन्न सेबक-प्रैंमी रव तो उनको।
उनको जूँठो जहर खा मरो, संग दओ पूरो हर को।।
बर्ण-जाति सें परे हते हरदौल देव मानव सच्चे।
संग चौंतरा सोमतिया के हैं ईके सूचक सच्चे।।७३।।

हरदौलै पैलें नौंतो बुन्देलखण्ड में देत सबइ।
होत ब्याव निरबिघिन पूर्ण ईमें भ्रम-संसय है न कतइ।।
कुंजा कों जो दओ बचन उर पिरतिज्ञा बा समय करी।
सिध्ध देव हरदौल निभाउत हैं ऊऐ हर एक घरी।।७४।।

बे आजउँ बिबाह सुभ कारज की इच्छा पूरन कर रए।
और करत रैहैं उन सबकी जो सेवा-पूजन कर रए।।
उनें प्रतिग्या याद दिबाओ और आर्त बिनती कर दो।
फिर तौ बे दौरे आउत हैं सिरधा भाव बात कह दो।।७५।।

❋ दोहा ❋

नर सें नारायन बनत, मानव कर सुभ काम।
स्रेस्ठ चरित को आचरन, सहज मुक्ति को धाम।।४।।
मुक्ति-सान्ति नइँ देत है घात और प्रतिघात।
जो अपनिन को नइँ भओ, सोई जात-कुजात।।५।।
दुराचरन पै करत है थू-थू दुनिया 'श्याम'।
सदाचरन सें पाउ्त नर, मान और हरिधाम।।६।।

—●—

सर्ग : अठारा

करनी - भरनी

❋ दोहा ❋

दूरदरसताहीनता को परनाम बिनास।
का पछतायें होत जब, बिछी लास पै लास।।१।।
कर हत्या हरदौल की सिर धुन-धुन पछतात।
अब जुझारसिंग कों कितउँ कोउ न अपँव दिखात।।२।।
संग प्रजा नें छोड़ दव, पतनी लव सन्यास।
स्वजन समिट कें दूर भए, भव सब सत्यानास।।३।।

❋ छन्द ❋

बुरे काम को बुरो होत फल सो इनेंउँ बौ मिलनें तो।
जो जुझार को बचो-खुचो, बौ सब धंदर में झुकनें तो।।
अपनो कोउ न रव, जुझारसिंग नें अपनी सैंना जोरी।
गये गौड़बाना सैंना लै करकें रण की तइयारी।।१।।

छोड़ ओरछा गये गौड़बाना कों लड़ हतयाय लओ।
और राजधानी चौरागढ़ पै अधिकार जमाय लओ।।
मंत्री और संगियन के सँग राजा प्रैंमसाह जू कों।
धोको दै मारो, मिलाय लव राज ओरछा में ऊकों।।२।।

प्रैंमसाह के बेटा नें जा साहजहाँ सें बात करी।
साहजहाँ नें चाल चली ती जबइँ न्याय की माँग करी।।
साहजहाँ की आग्या बिन चौरा रजधानी हतया ली।
ई सब सुन कें और ओरछा की देखी गद्‌दी खाली।।३।।

साहजहाँ नें आग्या दइ चौरागढ़ दो बापिस तुरतइँ।
जो हमाए अधिकारी उनकों सौंपो झट जुझार अवसइँ।।
इननें आग्या नइँ मानी तौ साहजहाँ खिसयाय गओ।
उयै बहानो चइयत तो सो ऊनें मौंका पाय लओ।।४।।

साहजहाँ नें पूरी सैना सक्ती कों तइयार करो।
औ' समस्त बुन्देलखण्ड पै हमला इकदम आय करो।।
हते गौड़बानैं जुझार सो घेरौ खानजहाँ नें जा।
बिबस जुझार भाग निकरे, जंगल में बे दुक गए ते जा।।५।।

संग बिक्रमाजीत पुत्र, सोये दोऊ छिप निरजन में।
गौंड़ जाति बालिन नें उनके काटे मूँड़ सोउतन में।।
कटे दोउ सिर साहजहाँ के सन्मुख पेस कराये गए।
दोऊ सीस ओरछा नगरी में तुरंत पौंचाये गए।।६।।

आतंकित करबे पिरजा कों कटे भये उन सीसन कों।
चौराहे पै लटकाओ गव, नगर बीच में दरसन कों।।
चम्पतराय बीर नें जाकें मुगलन सें संग्राम करो।
और बिजय कर सीस ल्याए अपनो करतब निरबाह करो।।७।।

ल्याकें सिर जुझार को चम्पा म्हाँरानी कों सौंप दओ।
उर जुझार सुत बिक्रम को सिर पुत्रबधू कों जाय दओ।।
रानी चम्पा नें जुझार के सिर कों ओली में धर लव।
कमल कुमारी नें सिर पति बिक्रमाजीत सिंग को धर लव।।८।।

कचना घाट अँगाइँ कमल उर चम्पा सती जाय भइँती।
अलग-अलग मढ़ियाँ दोउन की उतईं बनवा दइ गइँ तीं।।
साहजहाँ नें तुरत खजानो और राज्य हतयाय लओ।
पुत्र दूसरे उदयभान कों साहजहाँ नें मार दओ।।९।।

दुर्जनसाय पुत्र बिक्रम को उर जुझार को लुहरो सुत।
दुर्गादास नाम जीकौ इन सबकी करवाई दुर्गत।।
धमकी दई मौत की, जबरन मुसलमान बनवा दव गव।
नाम बदल इस्लाम कुली खाँ उर अकुली खाँ धर दव गव।।१०।।

जो न बने ते मुस्लिम उनकों तोप दम्म करवा दव गव।
ना रए सें हरदौल देव के, मानो सरबनास हुय गव।।
आज सबा सौ साल बाद बरबाद ओरछा राज भओ।
बुन्देलन की फूट आपुसी सें सब सत्यानास भओ।।११।।

मुगलन को बुन्देलखण्ड पै राज्य भओ झंडा फहरौ।
भई दुरगती, बुरी तराँ धोके बाजन कों गव कुचरौ।।
धोकेबाजन कों धोका अन्यायी कों अन्याय मिलत।
होत सत्त की बिजय और न्यायी पुरुसन कों न्याय मिलत।।१२।।

बेटा संग जुझार सिंग्घ जू कतर-कतर मारे गए ते।
अपँए संग बुन्देलखण्ड भर कों गुलामियत दै गए ते।।
भइया के हत्यारे के बध पै न काउऐ दुक्ख भओ।
बिन हरदौल राज्य तौ मानो बीरन सेंई सून्य भओ।।१३।।

कोसैं सबइ जुझारै उर हरदौल देव के जस गाबैं।
आये संकट के लानें जाकें समाधि पै गिगयाबैं।।
महापुरुस बे बने देवता, मर कें भी सुख बाँट रहे।
सब नर-नारी सिध्ध पुरुस की आजउँ कर जैकार रहे।।१४।।

एक देवता बनो, दूसरे नें दानव संज्ञा पाई।
अबिबेकी अइयासी नृप नें ई कुदर्छना करवाई।।
सत्य, धरम उर न्याय अमर हैं आजउँ निज सरबस दैकें।
बौइ अमर जो मरे देस उर धरम हेतु निजबलि दैकें।।१५।।

लोग ओरछा जात रामराजा के जाकें दरस करत।
सिध्ध देव हरदौल समाधी पै जा सादर नमन करत।।
दोउ देव साक्छात बिराजे जो सबको कल्यान करत।
सिध्ध पुरुस हरदौल देव जू सबके पूरन काम करत।।१६।।

श्री गनेस अंसी, धरती के देव, दीन के हितकारी।
धूप-दीप-अक्छत अरपित कर पूजत हैं सब नर-नारी।।
करत मनोरथ पूरे सबके ईमें ना संसै करिओ।
सेबा कर अजमा कें देखो, तब कौनउँ बातें कहिओ।।१७।।

चन्दन-फूल-पान को बीरा सादर अर्पित जाय करै।
श्री हरदौल आरती, बिनती करकें जै-जैकार करै।।
पिरतिग्यन की याद दिबाउत भये करै सादर बिन्ती।
करत मनोबाँन्छा पूरी हरदौल देव जैसी भक्ती।।१८।।

हरदौल देव की आरती

आरति श्री हरदौल कुँवर की।
श्री गनेस अंसी प्रभुवर की।।

गौर बरन अति आकरसक तन,
निसकलंक निरमल चरित्र-मन,
मद-छल छद्म रहित अन्तरमन,
तेजोमय मुख कान्ति सुघर की।। आ0।।१।।
जोधा भेस, पाग सिर सुन्दर,
सोहैं मनि-मौतिन कीं झल्लर,
कमर सिरोही धारें भयहर,
अस्व सबारी बीर प्रवर की।। आ0।।२।।
दिसा निदेसक तुम युबकन के,
हौ रक्छक निबलन बिकलन के,
अनुसासन प्रिय, उदार मन के,
दुरलभ गुन सम्पन्न निडर की।। आ0।।३।।
बहनन के तुम भइया प्यारे,
भोजाइन के लाला न्यारे,
नारी सत्व धरम रखवारे,
जै-जै हेमा के प्रिय बर की।। आ0।।४।।
कुंजा घर बन गये भतइया,
अनब्याहिन के ब्याव करइया,
सरप डँसे के प्रान बचइया,
सिध्ध पुरुस अवतारी हर की।। आ0।।५।।
मानवता के परम उपासक,
सत्य न्यायप्रिय, जनहित साधक,
परम बीर बलधारी सात्विक,
देस-धरम रक्छक श्री हर की।। आ0।।६।।

बिनती

ओ धरती के देव हर! लाज राखिओ मोइ।
बिगरी आन सँमारिओ, सरन नाथ! हम तोइ।।१।।

पिरतिज्ञा हरदौल जू! तुमें दिबा रए याद।
सबई कारज सारिओ, सुन हमाइ फरयाद।।२।।

तुम ब्यावन के देवता, सिध्ध पुरुस हरदौल।
बिनती है, हम पै करो, कृपा अपइँ अनमोल।।३।।

नारी सत्व बिनास को हो रव नंगो नाच।
आव देव! अब खलन कों अपुन नचाओ नाच।।४।।

है न बुँदेली भूमि भर किरपा छेत्र तुमाव।
जाँ-जाँ हम मानव बसत, सब तुमाए घर-गाँव।।५।।

युवा जनन में बीरता-ओज-सत्व भर देव।
सदाचार सतपथ गमन को बिबेक धन देव।।६।।

भइयइ की हत्या करैं, हनैं खुदइ कें तीर।
ओ देबा! नइँ चाँउँनें, बे अबिबेकी बीर।।७।।

प्रैंम - एकता - बीरता - ग्यान और बिग्यान।
सदाचरन हो सबइ में, देबा! दो बरदान।।८।।

सत्य-न्याय पथ जो चलें उनके बल बन जाव।
ओ देबा हर! सुपथ पै हरदम हमें चलाव।।९।।

पढ़ें-लिखें, जो भी सुनें जस हरदौल! तुमाव।
जिन उदास करिओ उनें, लेंयँ तुमाओ नाव।।१०।।

जानें अनज़ानें कभउँ भूल-चूक बन जाय।
तोउ अग्यानी मान कें हुइओ देव सहाय।।११।।

भूल-चूक तौ मनुज को जनम सिध्ध अधिकार।
फिरऊँ हमें बचाइओ, देव अपँए अनुसार।।१२।।

सबके काम बनाए हों, तौ हमरेउ बनाव।
ओ देबा! सत-सत नमन बिनती सार्थ बनाव।।१३।।

भइया हों हरदौल से, सील-चरित-गुन धाम।
भौजीं चम्पा होंय सब, साध्वी जगमें 'श्याम'।।१४।।

जै-जै-जै हरदौल जू! देव पुरुस बलधाम।
भूल-चूक करिओ छमा, बिनय करत कबि 'श्याम'।।१५।।

—•—

✵ श्री हरदौल देव चालीसा ✵

।। (श्री हरदौल देवाय नमः) ।।

नमन देव हरदौल जू, हे धरती के देव!
सरनागत बतसल प्रभू! हमें कृपा बर देव।।१।।
सिध्ध देव हरदौल जू! बुन्देला सिरमौर।
तुम दुखियन के दुख हरत, दो चरनन में ठौर।।२।।

श्री गनेस अंसी अवतारी। जै हरदौल देव उपकारी।।
मात गुमान कुँअरि के जाये। पिता बीरसिंग गोद खिलाये।।
साउन सुकला पूरनमासी। दिन मंगल जनमे सुखरासी।।
धन्य ओरछा भूमि हमारी। जाँ जनमे-खेले बलधारी।।
रुप सील गुन पौरुसधारी। गौर बरन मुख छबि अति प्यारी।।
सुघर गसीलो बदन छरारो। तेज अलौकिक तन पै न्यारो।।
बीरोचित जामा तन धारी। मुकुट सीस सुभ अस्व सबारी।।
कटि तरबार अजेय सुहाबै। जो दुस्टन कों सबक सिखाबै।।
निबलन-बिकलन के रखवारे। देस-धरम रक्छक अति न्यारे।।
तुम बहनन के भइया प्यारे। हो उनके सच्चे रखवारे।।
नारि सत्व रक्छक तुम देवा। सुइकारो दीनन की सेवा।।
कृपा रामराजा की भारी। हौ तुम जिनके परम पुजारी।।
प्रथम पूज्य गननायक अंसी। जै क्षत्रिय कुल सूरज बंसी।।
साँप डँसे कों अपुन बचाबैं। कन्यन के सुभ ब्याव कराबैं।।
देस-धरम रक्छक बलधारी। सत्य-न्याय सद्गुन आचारी।।
दुराचार-अन्न्याय न भाबैं। सतधारी कों गरें लगाबैं।।
भव किसोर तुम सम नइँ जोधा। अनुसासन प्रिय नीति पुरोधा।।
तुम महान त्यागी हर देवा। त्यागो राज करी जन सेवा।।
मुगल नृपति जो अत्याचारी। धरम-अस्मिता के बौपारी।
हिन्दू, हिन्दू धरम मिटाबे। ढाये कहर राज हतयाबे।।
त्राहि मची ती भारत भर में। नर-नारी बिलखें घर-घर में।।
अलप आयु में देव! अपुन नें। मार गिराये उनकों रन में।।

बैरी पार न पाये तुमसें। कइयक बेर भाग गए रन सें।।
मौं की खाई जब मुगलन नें। कूटनीति अपनाई उननें।।
भौजी संग चरित्रहीनता। रच सड़यंत्र दिखाइ नीचता।।
बिस भइयइ सें दै मरवाओ। हँसत-हँसत तुमनें बिस खाओ।।
सती सिरोमनि चम्पा रानी। हों न कलंकित मन में ठानी।।
रक्छा हित नारी सतीत्व की। दइ बलि तुमनें अपँए स्वत्व की।।
भ्रातप्रैंम में जान गँमाई। पै उनसें नइँ करी लड़ाई।।
सजग बुँदेलखण्ड के प्रहरी। त्याग न दिओ इतै की बखरी।।
निस्छल-निरमल चरित पुरोधा। साँचे मानवता के जोधा।।
ओ हरदौल देव! मरकें भी। अमर अपुन काया तज कें भी।।
सपथ सत्य की दइ पत्नी नें। पान खाव मृत भए पै तुमनें।।
मिर्तु बाद बोले नभ बानी। चिन्तित-दुखी न होओ प्रानी।।
पूरे कलप इतै हम रैंहैं। रक्छा कर हैं, सुख पौंचैं हैं।।
ब्याव भनेजन को जब आओ। प्रगट भात कुंजै पैंनाओ।।
करी अप्रगट बिबाह बिबस्था। तुममें सबकी अकट आसथा।।
दओ बचन जो नौतो दैंहैं। रक्छा करबे उन घर जैंहैं।।
आँधी-पानी-ओरे-अगनी। सबसें आन बचैं हैं भगनी!!
देव! अपँव प्रन भूल न जइओ। अनहौनी-विपदा बरकइयओ।।

दोहा : जै-जै-जै हरदौल जू! बिनती लो सुइकार।
हाँत जोर सिर धर नमन, कर दो बेड़ा पार।।३।।

सोरठा : नित चालीसा पाठ, भक्ति सहित जो जन करैं।
देव उनें सब ठाट, ओ देवा हरदौल जू!!१।।
चालीसा हरदौल, श्याम बहादुर कबि रचित।
देत सक्ति अनमोल, सुख-सान्ती-भक्ती सहित।।२।।

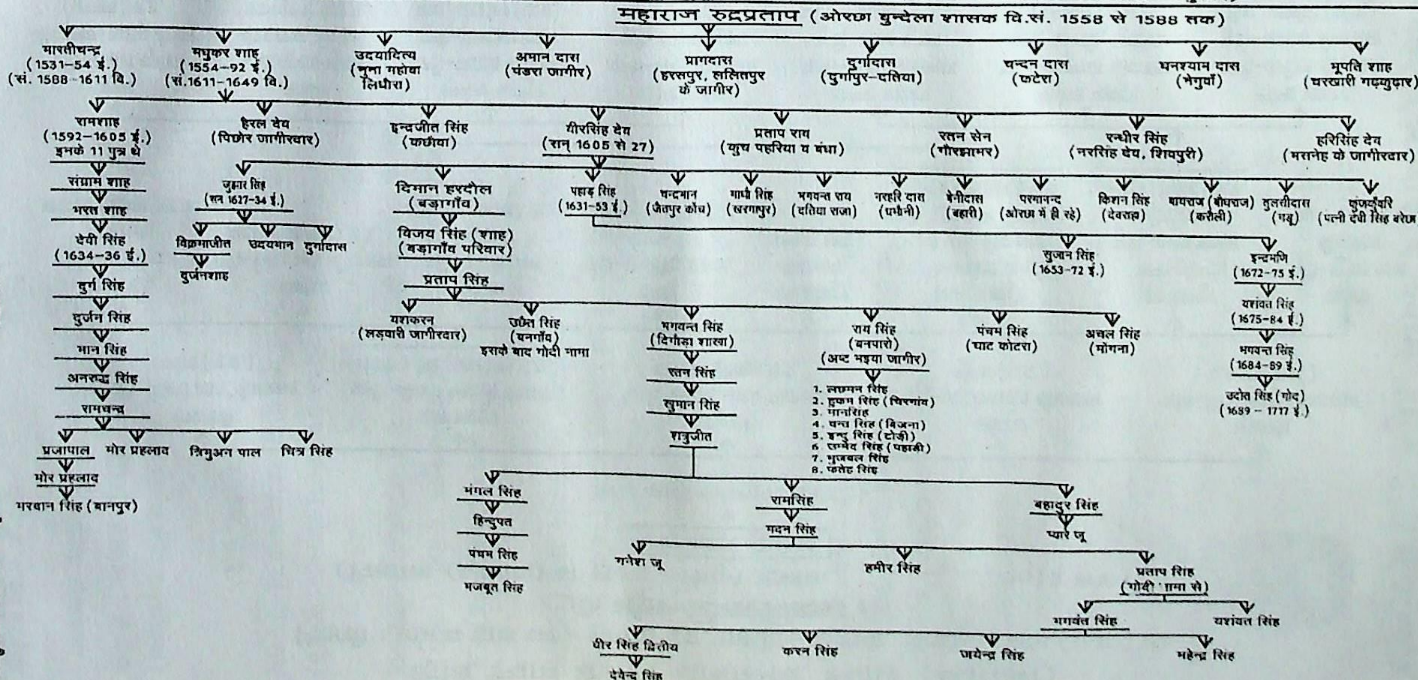
।। ॐ नमो देव हरदौलाय ।।

—•—

बुन्देला सपूत हरदौल देव ओरछा की वंशावली एवं बुन्देला शासकों की विवरणी

महाराज रुद्रप्रताप से लेकर महेन्द्र सिंह, जयेन्द्र सिंह, करन सिंह एवं वीर सिंह (द्वितीय) पुत्र देवेन्द्र सिंह तक

(सन् 1904 ई० में प्रकाशित प्रताप वंशार्णव संस्कृत ग्रंथ पृष्ठ क्रम 50, 61 व 68, 69 व 89 से 94 पर लिखे अनुसार)



कवि श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम' (कायस्थ)

निवासी : ग्राम व डाक घर – बिनौरा वैद्य, तहसील–कालपी, जिला–जालौन (उ.प्र.) की

वंश–विवरणिका

(पितामह (परदादा) से लेकर वर्तमान दिनांक................2014 तक)

- **लाल बहादुर श्रीवास्तव**
  - **फतेह बहादुर श्रीवास्तव (जमींदार)**
    - रामा देवी — पति–बिहारी लाल श्रीवास्तव, उज्जैन (म.प्र.)
    - जंग बहादुर — पत्नी–श्रीमती भगवती श्रीवास्तव, बिनौरा वैद्य (जालौन) उ.प्र.
      - माया देवी — पति–सुन्दरलाल श्रीवास्तव, कमतरी (आगरा) उ.प्र.
      - प्रकाशा — पति–रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, भिटारा (जालौन) उ.प्र.
      - शकुन्तला — पति–स्वामीशरण श्रीवास्तव, कमतरी (आगरा) उ.प्र.
      - रामश्री — पति–जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव, लखना (इटावा) उ.प्र.
      - राम बहादुर श्रीवास्तव (अल्पायु मृत्यु)
      - श्याम बहादुर — पत्नी–राजेश कुमारी उर्फ पुतो श्रीवास्तव, पुत्री–सीताराम श्रीवास्तव, कुसमरा (जालौन) उ.प्र.
        - पूनम — पति–राकेश कुमार श्रीवास्तव, कटरा दीवान (उन्नाव) उ.प्र.
          - किशन
          - काकुल
        - नीलम — पति–सुरेश कुमार श्रीवास्तव, शिवली (कानपुर दे.) उ.प्र.
          - आशुतोष
          - दीपांशी
        - कृष्णेन्द्र बहादुर — पत्नी–ज्योति श्रीवास्तव, पुत्री–परमात्माशरण कैथ, जालौन (उ.प्र)
          - प्रज्ञा
          - नकुल
        - यतीन्द्र बहादुर — पत्नी–जया श्रीवास्तव, पुत्री–सचेन्द्र भूषण इटावा (उ.प्र.)
          - तियाना
      - ओम बहादुर — पत्नी–मीना, पुत्री–मंगल प्रसाद श्रीवास्तव, लहार (भिण्ड) म.प्र.
        - योगेन्द्र बहादुर — पत्नी–शिप्रा श्रीवास्तव, पुत्री–शरद कुमार भदवाँ (जालौन) उ.प्र.
          - पंखुड़ी
        - शिवेन्द्र बहादुर — पत्नी–अनुराधा श्रीवास्तव, पुत्री–रामजी, कुठौंदा (जालौन) उ.प्र.
          - काव्यांश
        - नगेन्द्र बहादुर — पत्नी–अनीता श्रीवास्तव, पुत्री–अशोक श्रीवास्तव कैथ, जालौन (उ.प्र.)
          - तिष्या
      - सरिता — पति–सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव, जमुका (उन्नाव) उ.प्र.
    - शिवरानी — पत्नी–रघुवीर सहाय श्रीवास्तव, बकेवर (इटावा) उ.प्र.
    - अहिल्या — पति–ज्योतिस्वरूप श्रीवास्तव, मुरैना (म.प्र.)
    - फूलमती — पति–जिले बहादुर श्रीवास्तव, कानपुर (उ.प्र.)

श्यामबहादुर श्रीवास्तव 'श्याम' : एक संक्षिप्त परिचय



जन्म तिथि व स्थान : 10 सितम्बर 1951
(हाईस्कूल प्रमाण पत्रानुसार)
: पौष कृष्ण, 10 वि.सं. 2006, गुरुवार
(जन्माङ्कानुसार) तदनुसार
दिनांक 15.12.1949
: ग्राम–बिनौरा वैद्य,
तहसील–कालपी (जालौन) उ.प्र.

गोत्र : भरद्वाज कश्यप गोत्र
रसूलाबाद (इलाहाबाद) के कानून गो, श्रीवास्तव कायस्थ

शिक्षा : एम.ए. (समाजशास्त्र), बी.कॉम. आयुर्वेदरत्न, म.प्र. शासन की लेखा परीक्षा उत्तीर्ण, म.प्र. शासन का अकादमिक प्रशिक्षण प्राप्त

वृत्ति : रजिस्ट्रार, उच्च शिक्षा (राजपत्रित : महाविद्यालयीन सेवा) म. प्र. शासन से 01.10.2011 से सेवानिवृत्त होकर वर्तमान में साहित्य एवं संस्कृति सेवा निरत

पदाधिकारी :
1. संस्थापक एवं अध्यक्ष (सन् 1996 से 2002), सर्वोदय साहित्य एवं विविध कला संगम, मिहोना (भिण्ड) म.प्र.
2. संस्थापक एवं प्रबन्धक, श्री परशुराम भगवन्नाम बैंक, बिनौरा वैद्य (जालौन) उ.प्र. (सन् 1981 ई. से 1991–92)
3. राष्ट्रीय महामंत्री एवं आजीवन सदस्य (14.09.2012 से) बुन्देली साहित्य एवं संस्कृति सेवा संस्थान, उरई (जालौन) उ.प्र. – 285001

दीक्षा गुरु : योगीराज सन्त परशुराम दास जी, आश्रम मेंहदवा (भिण्ड) म.प्र. चचाई बिरखड़ी (भिण्ड) एवं गोविन्द कुण्ड, वृन्दावन (मथुरा)

पिता–माता : श्री जंगबहादुर श्रीवास्तव आत्मज मुं. फतेहबहादुर श्रीवास्तव (जमींदार) बिनौरा वैद्य एवं
माता : श्रीमती भगवती सुपुत्री चौधरी कुंजीलाल श्रीवास्तव (पटवारी)

धर्मपत्नी : श्रीमती राजेश कुमारी उर्फ पुतो श्रीवास्तव आत्मजा श्री सीताराम श्रीवास्तव, कुसमरा (नावली) जिला–जालौन, उ.प्र.
(विवाह मई 1968 ई0)

भाई–बहनें : अनुज–श्री ओम बहादुर श्रीवास्तव (इण्टर कालेज में विज्ञान शिक्षक)
बहनें–ज्येष्ठ–श्रीमती माया देवी, श्रीमती प्रकाशा, श्रीमती शकुन्तला, श्रीमती रामश्री, कनिष्ठ–श्रीमती सरिता श्रीवास्तव

पुत्र–पुत्रियाँ : श्रीमती पूनम, श्रीमती नीलम, कृष्णेन्द्र बहादुर एवं यतीन्द्र बहादुर श्रीवास्तव (क्रमशः)

पुत्र बधुऐं : 1. श्रीमती ज्योति आत्मजा श्री परमात्माशरण श्रीवास्तव (कैथ–जालौन) पत्नी कृष्णेन्द्र बहादुर से पुत्री प्रज्ञा एवं पुत्र नकुल श्रीवास्तव

2. श्रीमती जया आत्मजा श्री सचेन्द्र भूषण श्रीवास्तव (बूड़ादाना–इटावा) उ.प्र. पत्नी यतीन्द्र बहादुर से तियाना श्रीवास्तव

जामातृ–पुत्री एवं दौहित्र : 1. श्री राकेश कुमार श्रीवास्तव आत्मज श्री शिवचरन लाल श्रीवास्तव, कटरा दीवान (उन्नाव) उ.प्र. एवं श्रीमती पूनम से किशन एवं काकुल श्रीवास्तव

2. श्री सुरेश कुमार श्रीवास्तव आत्मज श्री देवीप्रसाद श्रीवास्तव, शिवली (कानपुर देहात) उ.प्र. एवं श्रीमती नीलम से आशुतोष एवं दीपांशी (मुस्कान)

अनुज सुत एवं पुत्र बधुऐं व दौहित्र : 1. योगेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव, पत्नी श्रीमती शिप्रा आत्मजा–श्री शरद श्रीवास्तव (भदवाँ–जालौन) से पंखुड़ी श्रीवास्तव

2. शिवेन्द्र बहादुर, पत्नी श्रीमती अनुराधा श्रीवास्तव आत्मजा–श्री रामजी श्रीवास्तव (कुठौंदा–जालौन) से काव्यांश

3. नगेन्द्र बहादुर, पत्नी श्रीमती अनीता (रुबी) श्रीवास्तव, आत्मजा–श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव (कैथ–जालौन) से तिष्या श्रीवास्तव

साहित्य साधना : हिन्दी खड़ी बोली एवं बुन्देली भाषा में समान रूप से काव्य एवं गद्य सृजन

रचना विधा : कविता, गीत, गजल, मुक्तक, हाइकु, दोहा आदि
गद्य में – कहानी, लेख, समीक्षा आदि

सृजित कृतियाँ : <u>प्रकाशित कृतियाँ</u> – खड़ी बोली में (1) सन्त परशुराम (महाकाव्य), (2) सन्त परशुराम श्री विग्रह शतक, (3) राष्ट्रानुरागी गीत (4) गीत गोदावरी (भक्ति गीत) (5) बोध रश्मियाँ सह बाल बोधा कविताएँ (6) प्यासे मुक्तक (7) अपनी बात आपसे (विनय पदावली) (8) मृत्युञ्जयी (खण्डकाव्य) (9) अभिशप्त सीता (खण्डकाव्य) (10) युवा गौरव लक्ष्मण (खण्डकाव्य)

<u>बुन्देली में</u> – (1) आओ गाँव चलें (गीत संग्रह), (2) मन मसोस रै जात (कविता, मुक्तक, दोहा, हाइकु, दोहा, गज़ल इत्यादि) (3) बनो लुटेरौ सन्त (नाटक (चम्पू)) (4) बुन्देला सपूत हरदौल (महाकाव्य), (5) नहला पै दहला (गद्य : कहानी संग्रह)

<u>अप्रकाशित कृतियाँ</u> – (1) बीन क्या पकड़ी सपेरा हो गया (हिन्दी गजलें), (2) ये पन्ने इतिहास के (गीत संग्रह) (3) कविता संग्रह (4) प्रियतमा (कविता) इत्यादि।

<u>बुन्देली में</u> – (1) नरसी भगत (नाटक (चम्पू)) इत्यादि।

सम्पादन :

1. 'हरेर्नामैव केवलम' प्रतिवेदन अंक (1981–87) श्री परशुराम भगवन्नाम बैंक, बिनौरा वैद्य (जालौन) उ.प्र. (सन् 1988 ई.) – प्रधान सम्पादक
2. 'प्रज्ञा' (रजत जयंती विशेषांक) वार्षिक पत्रिका 1987–88
3. स्मारिका – 1996–97, सर्वोदय साहित्य एवं विविध कला संगम, मिहोना (भिण्ड) म.प्र. (1988)–प्रधान सम्पादक
4. 'प्रज्ञा' (वार्षिक पत्रिका 1998–99), शासकीय गान्धी महाविद्यालय मिहोना (भिण्ड) म.प्र.– सहायक सम्पादक
5. 'हरेर्नामैव केवलम्' अनुभूति अंक (1990–91) सन 1991 ई (प्रधान सम्पादक)
6. 'समवेत सुमन' (काव्य संकलन) ग्रंथमाला 2 एवं 3 वर्ष 1996 एवं 1998, सलाहकार एवं सदस्य संपादक मण्डल– कछवाहघार साहित्य सृजन समिति रौन (भिण्ड) प्रकाशन
7. 'उजास' (काव्य संग्रह) 1996, समकालीन साहित्य परिषद रौन–जैतपुरा मढ़ी (भिण्ड) म.प्र. – सदस्य सम्पादक मण्डल
8. 'रूपम' वार्षिक कला पत्रिका 2004–05, शासकीय ललित कला संस्थान, ग्वालियर (म.प्र.) 2005–प्रधान सम्पादक
9. 'ठनी साँप नौरा में' (बुन्देली काव्य संकलन)–2004 – प्रधान सम्पादक

<u>उपाधियाँ और सम्मान</u> :

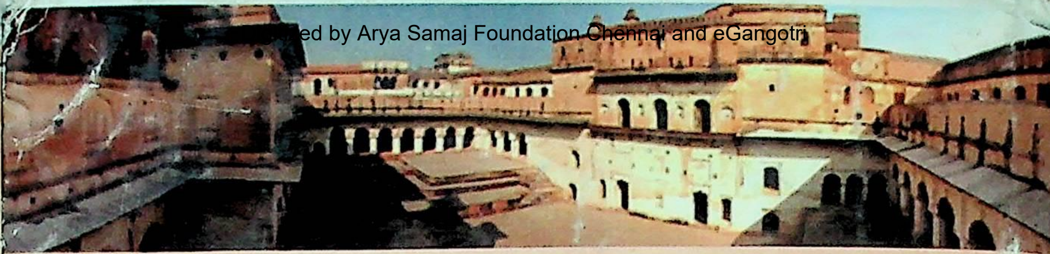
1. 'साहित्य शिरोमणि सम्मान' प्रतिभा प्रकाशन रामपुरा (जालौन) उ.प्र. दिनांक 24.07.1998
2. 'लेखक श्री सम्मान'–1998, मध्य प्रदेश पत्र लेखक मंच वैतूल रजि. 15872
3. 'साहित्य श्री सम्मान' – राजेश्वरी प्रकाशन, भार्गव कॉलौनी गुना (म.प्र.) दिनांक 12.04.1998
4. 'साहित्यकार मान–पत्र' दिनांक 31.12.1990, 27.12.1995, 01.01.1997 एवं 24.11.2000 को, म. प्र. शासन की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई शासकीय गान्धी महाविद्यालय, मिहोना (भिण्ड) म.प्र. द्वारा

5. 'पृथ्वी पुत्र सम्मान' राजेश्वरी प्रकाशन भार्गव कॉलोनी गुना (म.प्र.) दिनांक 17.12.2001
6. 'साहित्य वारिधि' (मानद उपाधि के लिए चयन) गुजरात हिन्दी साहित्य संस्थान, अहमदाबाद दिनांक 15.03.2001
7. 'प्रशंसा–पत्र' बाला जी न्यास समिति, बन्थरी (भिण्ड) म. प्र. दिनांक 20.03.2009
8. 'कायस्थ रत्न सम्मान एवं प्रशस्ति पत्र', अध्यक्ष कायस्थ सभा मिहोना (भिण्ड) द्वारा दिनांक 31.12.2011 को
9. 'रामभरोसे चौधरी स्मृति सम्मान' सर्वोदय साहित्य संगम मिहोना (भिण्ड) म.प्र. द्वारा दिनांक 31.12.2011 को
10. 'बुन्देली रत्न' (सारस्वत सम्मानोपाधि : प्रशस्ति पत्र)– अखिल भारतीय बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद भोपाल, शाखा–उरई (जालौन) उ.प्र., दिनांक 07.02.2012
11. 'विवेकानन्द स्मृति सम्मान' अखिल भारतीय साहित्य परिषद, तहसील शाखा मिहोना (भिण्ड) म.प्र. द्वारा दिनांक 27.01.2013
12. 'बाल साहित्यकार सम्मान' कृति बोध रश्मियाँ सह बाल बोध कविताएँ' पर सम्मानित दिनांक 07.05.2010 को एवं दिनांक 21.10.2013 को सारस्वत सम्मान – प्राचार्य भगवत विशाल इण्टर कालेज, कदौरा (जालौन) उ.प्र.
13. 'बुन्देली काव्य भूषण' (सारस्वत सम्मोपाधि) एवं पुरस्कृत बुन्देली गीत संग्रह – 'आओ गाँव चलें' पर, अखिल भारतीय श्रीमती कमला देवी खरे स्मृति पुरस्कार वितरण समारोह समिति उरई (जालौन) उ.प्र. द्वारा – दिनांक 20.11.2013 को

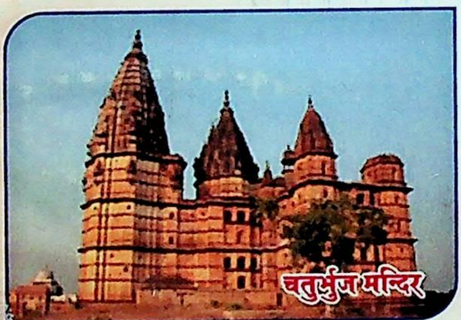
<u>विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित गद्य एवं पद्य रचनायें</u> –

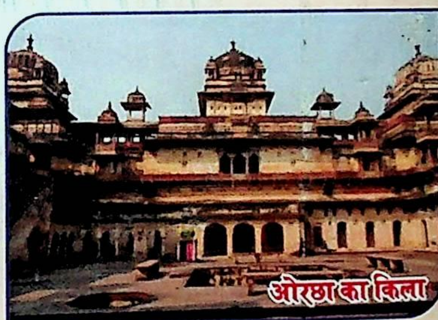
1. 'अभिशप्त सीता' खण्डकाव्य का 'मानस सुमन' हिन्दी की मासिक पत्रिका, श्री रामचरित मानस विद्या पीठ प्रकाशन उदयपुरा (रायसेन) में धारावाहिक प्रकाशन वर्ष 1999–2000 में।
2. लगभग 25–30 पत्रिकाओं में गद्य–पद्य रचनायें समय–समय पर प्रकाशित हैं। क्रम जारी है।

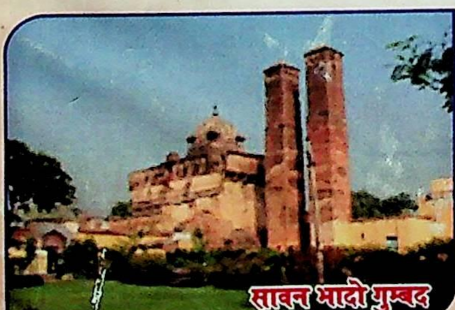
नोट – अनेक कवि सम्मेलनों एवं विभिन्न संस्थाओं की अनेक कवि गोष्ठियों एवं कार्यशालाओं में भागीदारी।

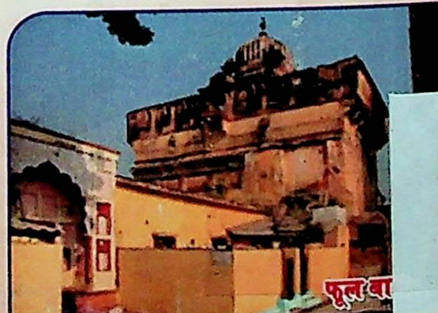





चतुर्भुज मन्दिर


ओरछा का किला


सावन भादो गुम्बद


फूल बा

